श्रावण मास, कृष्ण पक्ष, 22 वर्ष, अंक 158, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज   शुक्रवार 7 जुलाई 2023   विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

गहलोत-पायलट के बीच हुआ सुलह

अब कोई मुद्दा शेष नहीं, राजस्थान को लेकर चार घंटे चली कांग्रेस की बैठक, सचिन पायलट की भूमिका को लेकर कांग्रेस हाईकमान करेगा फैसला

नई दिल्ली/जयपुरः नई दिल्ली स्थित कांग्रेस मुख्यालय में गुरुवार को कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खडगे, राहुल गांधी, मुख्यमंत्री अशोक गहलोत समेत पार्टी के तीस नेताओं ने राजस्थान के आगामी चुनावों में सभी मतभेद भुलाकर एकजुट होकर एक बार फिर सरकार बनाने के सभी प्रयास करने पर सहमति व्यक्त की। करीब चार घंटे चली बैठक में सभी मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की गई। मुख्यमंत्री गहलोत बैठक में वर्चुअली जुड़े थे। सभी नेताओं ने राजस्थान से जुड़े मामले पर फैसले हाईकमान पर छोड़ दिया है, हाईकमान जो फैसला करेगा, वह सबको मान्य होगा। सचिन पायलट का रोल तय करने पर भी हाईकमान फैसला करेगा। बैठक में राहुल गांधी और राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने राजस्थान के नेताओं को एकजुट होकर चुनाव लड़ने को कहा है। नेताओं से कहा गया है कि चुनावों में एकजुट होकर मैदान में उतरे, अब किसी तरह के मतभेद की बात सामने नहीं आनी चाहिए। बैठक में नेताओं ने एकजुट होकर चुनाव लड़ने का भरोसा दिलाया। कांग्रेस अध्यक्ष खडगे ने बैठक के बीच में ट्वीट कर कहा कि राजस्थान का किसान, मजदूर, युवा, महिलाएं और समाज का हर एक वर्ग कांग्रेस में अपनी आस्था व्यक्त कर रहा है। हम सबकी आकांक्षाओं का ख्याल रखेंगे। राजस्थान का वर्तमान और भविष्य दोनों कांग्रेस के हाथों में सुरक्षित है। इस बार इतिहास बदलेगा। बैठक के बाद संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल और पार्टी प्रभारी सुखजिंदर सिंह रंधावा

ने पत्रकारों से कहा कि बैठक में सर्वसम्मति से एकजुट होकर चुनाव लड़ने का फैसला किया गया है। सभी नेता कॉनफिडेंट थे कि हम राजस्थान फिर से जीतेंगे और हम एकजुट होकर चुनाव मैदान में उतरेंगे। कांग्रेस के सभी नेता एक हैं। वेणुगोपाल ने पायलट समेत अब कोई भी मुद्दा पेंडिंग नहीं होने का दावा किया और कहा कि पायलट आज की बैठक में पार्टी एकता को लेकर बहुत अच्छा बोले और उन्होंने विश्वास जताया कि हम दोबारा सरकार बनाएंगे। उन्होंने कहा कि गहलोत चोट लगने के कारण आ नहीं सके, लेकिन वीसी से पूरे चार घंटे बैठक से जुड़े रहे। अब नेताओं के बीच कोई इश्यू नहीं है, सभी इश्यूज सुलझ चुके हैं और पार्टी चुनावों के लिए तैयार है।

'केवल जिताऊ उम्मीदवारों को मैदान में उतारेंगे'

वेणुगोपाल ने कहा कि बैठक में उम्मीदवारों के चयन को लेकर भी फैसला हुआ है। जीतने की क्षमता सबसे बड़ा फैक्टर होगा। हम केवल जिताऊ उम्मीदवारों को मैदान में उतारेंगे और यही टिकट का सबसे बड़ा मापदंड होगा। हम सितम्बर के प्रथम सप्ताह तक उम्मीदवार तय कर लेंगे और कर्नाटक की तरह यहां भी हम बहुत पहले उम्मीदवारों की घोषणा कर देंगे। हमने कई दौर का सर्वे किया है। नतीजे साफ है कि सब नेताओं ने कहा कि हम जीत रहे हैं। भाजपा राजस्थान में पूरी तरह फेल है। पांच राज्यों मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ, तेलंगनाा और मिजोरम के बाद राजस्थान में चुनाव पूर्व तैयारियों को लेकर ये महत्वपूर्ण बैठक रही। हम अब राजस्थान में इलेक्शन कैंपेन शुरू करेंगे। उन्होंने कहा कि आरपीएससी, पेपरलीक गंभीर मुद्दा है। पेपर लीक पर आगामी विधानसभा सत्र में बहुत ही मजबूत कानून लाया जा रहा है। मुख्यमंत्री गहलोत ने कल इसे लेकर स्पष्ट कर दिया है। आरपीएससी में सदस्यों के चयन को लेकर नियमों में बदलाव किए जाएंगे। बयानबाजी करने वालों को नसीहत देते हुए वेणुगोपाल ने कहा कि पार्टी में अनुशासन को बहुत गंभीरता से फॉलो करेंगे। बाहर किसी मुद्दे को नहीं कहेंगे, जो कुछ कहना है पार्टी प्लेटफार्म पर कहेंगे। जिसने भी बाहर गैर जरूरी बयानबाजी की, उसके खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा से राजस्थान में अच्छा माहौल बना है। सभी नेताओं ने कहा कि यात्रा से कांग्रेस को फायदा हुआ है।

हम मिलकर भाजपा को हराएंगे: रंधावा

पार्टी प्रभारी सुखजिंदर सिंह रंधावा ने कहा कि बैठक में मौजूद प्रदेश के सभी पार्टी नेताओं से एक-एक कर विचार लिए गए और सभी ने कहा कि हम मिलकर भाजपा को हराएंगे और कांग्रेस को ही लेकर आएंगे। हम सभी इकट्ठे हैं। हम फ्यूचर की बात करेगे। उन्होंने कहा कि बैठक में राहुल गांधी ने कहा कि यह कांग्रेस कार्यकर्ता की सरकार है और जो वहां गवर्नमेंट ने काम किए हैं।

इससे पूर्व विधानसभा चुनावों की रणनीति बनाने और पार्टी में एकजुटता को लेकर हुई इस बैठक में कांग्रेस अध्यक्ष खडगे, राहुल गांधी, मुख्यमंत्री गहलोत और पायलट समेत तीस वरिष्ठ नेता शामिल हुए। स्पीकर सीपी जोशी भी

बैठक में शामिल हुए। बैठक में गहलोत वर्चुअली जुड़े थे। बैठक शुरू होने से पहले कुछ समय के लिए मीडियाकर्मियों को वीडियो और फोटो के लिए अनुमति दी गई तो राहुल गांधी ने मीडियाकर्मियों से हल्के-फुल्के अंदाज में कहा कि बैठक में गहलोत जी भी जुड़े हैं, लैपटॉप में उन्हें भी दिखा दीजिए। इस पर नेताओं ने कहा कि बड़ी स्क्रीन लगी है, उस पर भी देख सकते हैं।

राजस्थान में पुनः सरकार बनाएगी कांग्रेस : पायलट

नई दिल्लीः कांग्रेस नेता सचिन पायलट ने गुरुवार को दावा किया कि आगामी विधानसभा चुनाव में राजस्थान में कांग्रेस पूर्ण बहुमत से जीतेगी और सरकार बनाएगी। पार्टी इस बार पुनः जीतकर राज्य की परिपाटी को तोड़ेगी। कांग्रेस नेता सचिन पायलट आज यहां पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे। उन्होंने कहा कि आज कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन के नेतृत्व में राजस्थान के आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर पार्टी मुख्यालय में बैठक हुई। इसमें राज्य के सभी पदाधिकारियों के साथ केन्द्रीय नेतृत्व ने राजस्थान विधानसभा चुनाव में पार्टी की जीत सुनिश्चित करने को लेकर संवाद किया। पायलट ने कहा कि आज की बैठक लगभग चार घंटे चली। इस दौरान राज्य के सभी मुद्दों पर बातचीत हुई। हमारा संगठन, हमारे नेता, हमारे विधायक और मंत्री सभी साथ मिलकर काम करेंगे। हम सभी का लक्ष्य एक ही है कि राज्य में कांग्रेस पुनः सरकार बनाए।उल्लेखनीय है कि राजस्थान विधानसभा चुनाव इसी वर्ष के अंत तक होना है। इसको लेकर कांग्रेस ने आज पार्टी मुख्यालय में एक बैठक आयोजित की। पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के नेतृत्व में हुई बैठक में राहुल गांधी, केसी वेणुगोपाल सहित राजस्थान कांग्रेस के नेता सचिन पायलट मौजूद थे जबकि राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत वर्चुअल माध्यम से जुड़े।

संयुक्त राष्ट्र ने भी माना मोदी-शाह की जोड़ी का लोहा

भारत को मिली नई पहचान, कश्मीर में बच्चों की सुरक्षा की दिशा में हो रहे बेहतर काम से दागी देशों की सूची से बाहर हुआ भारत

जम्मू कश्मीर/चंडीगढ़

बीते 9 वर्षों से मोदी-शाह की जोड़ी भारत को वैश्विक फलक पर नई पहचान दिलाने के लिए दिन-रात जुटे हुए हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की सफल रणनीतियों का ही नतीजा है कि 12 वर्ष के लंबे अंतराल के बाद पहली बार संयुक्त राष्ट्र की 'चिल्ड्रन एंड आर्म्ड कॉन्फ्लिक्ट रिपोर्ट' से भारत का नाम हटा है। संयुक्त राष्ट्र ने माना कि भारत सरकार ने 'बच्चों की बेहतर सुरक्षा' के लिए, खासतौर से जम्मू और कश्मीर में बेहतर कदम उठाए हैं। एक दौर था जब भारत का नाम बुर्किना फासो, कैमरून, लेक चाड बेसिन, नाइजीरिया, पाकिस्तान और फिलीपींस जैसे

देशों के साथ 'अपमानित सूची' में रखा जाता था। लेकिन मोदी-शाह की जोड़ी ने इस असंभव को भी संभव कर दिखाया। संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने 'बच्चे और सशस्त्र संघर्ष रिपोर्ट' के हालिया एडिशन से भारत का नाम निकाल दिया है। बाल अधिकारों के उल्लंघन पर बनने वाली इस रिपोर्ट में पहले जम्मू-कश्मीर का जिक्र संघर्ष का क्षेत्र के रूप में होता था। यह सालाना रिपोर्ट मंगलवार को जारी की गई। इसमें विभिन्न देशों में सशस्त्र संघर्षों के बच्चों पर असर और उनके अधिकारों के उल्लंघन की रिपोर्ट पेश की जाती है। इसके पूर्व जम्मू-कश्मीर में बच्चों की सुरक्षा और सशस्त्र संघर्ष के चलते संयुक्त राष्ट्र ने भारत को दागी और अपमानित देशों की सूची में रखा हुआ था। धारा 370 और 35ए रद्द होने का ही नतीजा है कि 2010 के बाद पहली बार संयुक्त राष्ट्र की दागी लिस्ट से बाहर हुआ जम्मू-कश्मीर आज सुरक्षित और शांत तरीके से प्रगति की राह पर अग्रसर है। पिछले 9 वर्षों में मोदी-शाह की जोड़ी ने एक के बाद एक मास्टर स्ट्रोक लगाई है।

नए शिखर पर शेयर बाजार

नई दिल्लीः बुधवार की कमजोरी के बाद घरेलू शेयर बाजार ने आज एक बार फिर ऊंचाई का नया शिखर छू लिया। लाल निशान में सपाट स्तर पर कारोबार की शुरूआत करने के बाद शेयर बाजार के दोनों सूचकांक ऑल टाइप हाई लेवल का नया रिकॉर्ड बनाने में सफल रहे और दिन के ऊपरी स्तर के करीब ही बंद हुए। सेंसेक्स और निफ्टी दोनों सूचकांकों ने ऑल टाइम हाई लेवल का रिकॉर्ड बनाने के साथ ही एक बार फिर ऑल टाइम हाई क्लोजिंग का रिकॉर्ड भी बनाया। दिनभर के कारोबार के बाद सेंसेक्स 0.52 प्रतिशत और निफ्टी 0.51 प्रतिशत की मजबूती के साथ बंद हुए।

सीएम योगी ने पुलिस विभाग के 1148 अभ्यर्थियों को बांटे नियुक्ति पत्र

लखनऊ

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गुरुवार को पुलिस विभाग के चयनित 1148 अभ्यर्थियों को नियुक्त पत्र दिये। लोकभवन में आयोजित समारोह में मुख्यमंत्री ने सांकेतिक रूप से अपने हाथों 35 चयनित अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र दिया है। बाकी अभ्यर्थियों को जिलों में नियुक्ति पत्र दिए गए हैं। पुलिस भर्ती एवं प्रोन्नति बोर्ड की ओर से चयनित 1148 अभ्यर्थियों में से 217 उपनिरीक्षक(गोपनीय), 587 सहायक उपनिरीक्षक(लिपिक) एवं 344 सहायक उपनिरीक्षक(लेखा) शामिल हैं।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि मेरे लिए यह अत्यंत प्रसन्नता का क्षण है कि पुलिस फोर्स हर दृष्टि से मजूत हो रही है। नवचयनित अभ्यर्थियों को और उनके परिवार को बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूं। खुशी बात है कि लिपिकिय संवर्ग में महिलाओं की भी अच्छी संख्या है।

योगी ने कहा कि पिछले नौ वर्ष में वैश्विक मंच पर भारत का जिस प्रकार से सम्मान बढ़ा है, वैसे ही छह वर्षों में उप्र की स्थिति में बदलाव हुआ है।

उप्र को लोग समस्या के रूप में देखने लगे थे। देश की आवादी का पांचवां हिस्सा उप्र को आगे बढ़ाने की चुनौतियां हम सबके सामने थीं। शौचालय निर्माण से लेकर अन्य परियोजनाओं में देरी को लेकर सपा की पूर्ववर्ती सरकार पर हमला बोले और अपनी सरकार की उपलब्धियां गिनाईं। उन्होंने कहा कि आज उप्र की स्थिति है कि केन्द्र की ज्यादातर योजनाओं में नंबर एक है। हम लोगों ने तय किया कि आवागमन के लिए सड़कें होनी चाहिए।

सीएम शिवराज आदिवासी युवक से मिले, पांव धोकर मांगी माफी

भोपाल। मध्य प्रदेश के सीधी में अमानवीय व्यवहार के शिकार पीड़ित आदिवासी युवक दशमत रावत से मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने गुरुवार सुबह यहां अपने आवास पर मुलाकात की। चौहान ने पीड़ित की आरती उतारी। उसके पैर धुले। शॉल ओढ़ाकर सम्मान किया और माफी मांगी। सीधी पेशाब कांड पीड़ित दशमत सुबह करीब 10.00 बजे मुख्यमंत्री निवास पहुंचा। घटना से द्रवित मुख्यमंत्री चौहान ने दशमत रावत से कहा, 'मन दुखी है। यहा आपकी पीड़ा बांटने का प्रयास है। आपसे माफी मांगता हूं। मेरे लिए

जनता ही भगवान है।' उल्लेखनीय है मंगलवार को सोशल मीडिया पर दशमत सिंह के सिर पर कथित भाजपा नेता प्रवेश शुक्ला के पेशाब करने का वीडियो वायरल हुआ था। मुख्यमंत्री चौहान ने इस पर संज्ञान लेते हुए कहा था आरोपित के खिलाफ एनएसए की कार्रवाई होगी। पुलिस उसे गिरफ्तार कर रीवा के केन्द्रीय जेल भेज चुकी है।

स्वागत को गोरक्षनगरी बेकरार, गीताप्रेस के शताब्दी वर्ष के समापन समारोह में लेंगे हिस्सा

इतिहास रचने आएंगे पीएम मोदी

गोरखपुर। गीताप्रेस के शताब्दी वर्ष के समापन समारोह में शुक्रवार (07 जुलाई) को आ रहे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का ऐतिहासिक स्वागत करने के लिए गोरक्षनगरी पूरी तरह से तैयार है। गीताप्रेस पहुंचकर प्रधानमंत्री मोदी एक नया इतिहास रचेंगे। देश के किसी भी प्रधानमंत्री का यह गीता प्रेस में प्रथम आगमन होगा। उत्तर प्रदेश सरकार के प्रवक्ता के मुताबिक प्रधानमंत्री मोदी गोरखपुर रेलवे स्टेशन से वंदेभारत एक्सप्रेस ट्रेन को हरी झंडी दिखाएंगे। इसके साथ ही 693 करोड़ रुपये की लागत वाली रेलवे स्टेशन रिमॉडलिंग परियोजना का

शिलान्यास भी करेंगे। प्रधानमंत्री शुक्रवार दोपहर बाद गोरखपुर आएंगे। राज्यपाल आनंदी बेन पटेल और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ उनकी अगवानी के लिए पहले से गोरखपुर में रहेंगे। गोरखपुर आगमन पर मुख्यमंत्री सबसे पहले गीताप्रेस पहुंचेंगे। यहां आयोजित शताब्दी वर्ष के समापन समारोह में वह बतौर मुख्य अतिथि सम्मिलित होंगे। प्रधानमंत्री मोदी गीताप्रेस में राज्यपाल एवं मुख्यमंत्री के साथ लीलाचित्र मंदिर का अवलोकन और शिवमहापुराण के आर्ट पेपर पर प्रकाशित रंगीन चित्रमय विशिष्ट अंक का विमोचन करेंगे। गीताप्रेस के कार्यक्रम के बाद प्रधानमंत्री गोरखपुर रेलवे स्टेशन पहुंचेंगे। यहां वह वाया अयोध्या गोरखपुर से लखनऊ तक चलने वाली वंदेभारत एक्सप्रेस ट्रेन को हरी झंडी दिखाएंगे। प्रधानमंत्री रेलवे स्टेशन के कायाकल्प वाली रिमॉडलिंग परियोजना का भी शिलान्यास करेंगे।

एक साल में 2.74 लाख युवाओं को रोजगार देकर गुजरात देश में अव्वल

रोजगार विनिमय सांख्यिकी-2023 की रिपोर्ट, रोजगार के उचित अवसर मुहैया कराकर वर्ष 2002 से गुजरात लगातार प्रथम

गांधीनगर/अहमदाबादः रोजगार कार्यालयों द्वारा युवाओं को रोजगार के अवसर प्रदान करने के मामले में गुजरात वर्ष 2002 से लगातार देश में प्रथम स्थान पर बना हुआ है। गुजरात ने इस परिपाटी को इस वर्ष भी बरकरार रखा है। राज्य के श्रम एवं रोजगार मंत्री बलवंत सिंह राजपूत ने केन्द्रीय श्रम एवं रोजगार मंत्रालय की ओर से प्रतिवर्ष जारी की जाने वाली रिपोर्ट के हवाले से कहा कि गुजरात के लिए यह गर्व की बात है कि रोजगार विनिमय सांख्यिकी-2023 की रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2022 के दौरान रोजगार कार्यालयों के द्वारा रोजगार के अवसर प्रदान करने के मामले में गुजरात ने एक बार फिर प्रथम स्थान अर्जित किया है। मंत्री बलवंत सिंह राजपूत ने कहा कि

वर्ष 2018-19 से 2022-23 के दौरान 5 वर्षों की अवधि में रोजगार कार्यालयों द्वारा 15 लाख से अधिक अभ्यर्थियों को रोजगार प्रदान किया गया है। इस अवधि में 7 हजार से अधिक भर्ती मेलों के आयोजन से ही राज्य के लगभग 8 लाख से अधिक अभ्यर्थियों को रोजगार प्राप्त हुआ है। उन्होंने कहा कि गुजरात के युवाओं को रोजगार के अवसर मुहैया कराने तथा ऑनलाइन व्यवस्था के माध्यम से नियोक्ताओं को उनकी जरूरत के मुताबिक मानव बल उपलब्ध कराने के उद्देश्य से राज्य सरकार ने एक अभिनव पहल के अंतर्गत ह्यअनुबंधमह्व वेब पोर्टल और मोबाइल ऐप विकसित किया है। आज यह वेब पोर्टल नियोक्ताओं और रोजगार के इच्छुक युवाओं के बीच एक पुल की भूमिका अदा कर रहा है।

गुजरात ने दिया देश का 43 फीसदी रोजगारः रोजगार विनिमय सांख्यिकी-2023 की रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2022 में देश के सभी राज्यों द्वारा कुल 6,44,600 युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराया गया है।

बीकानेर रेलवे स्टेशन का होगा कायापलट

471 करोड़ रुपए की विकास योजना का प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी रखेंगे फाउंडेशन

बीकानेरः केन्द्रीय कानून मंत्री अर्जुनराम मेघवाल ने कहा है कि आने वाले दिनों में बीकानेर रेलवे स्टेशन की सूरत बदलने वाली है। इसके लिए केन्द्र सरकार ने 471 करोड रुपए की कार्य योजना तैयार की है। गुरूवार को पत्रकारों से बातचीत के दौरान मेघवाल ने बताया कि इस प्रोजेक्ट का फाउण्डेशन आठ जुलाई को प्रधानमंत्री रखेंगे। उन्होंने कहा कि इस योजना की क्रियान्विति के बाद बीकानेर रेलवे स्टेशन पर भी एयरपोर्ट सरीखी सुविधाएं होगी। नौरंगदेसर में पीएम की प्रस्तावित सभा को लेकर केन्द्रीय

मंत्री बीकानेर में है। वे लगातार तैयारियों का जायजा ले रहे हैं। आज रानी बाजार औद्योगिक क्षेत्र स्थित जिल उद्योग संघ कार्यालय में वे पत्रकारों से रूबरू हुए। उन्होंने बताया कि बीकानेर में पीएम मोदी 36 हजार करोड़ रुपए के विकास कार्यों को लोकार्पित करेंगे।

खबर संक्षेप

युवती के साथ की अश्लील हरकत, दर्ज हुआ मुकदमा

मऊआइमा। घर का कचड़ा फेकने गई युवती के साथ एक युवक अश्लील हरकतें करने लगा शोर मचाने पर मारा पीटा शिकायत पर जान से मारने की धमकी देकर भाग गया। पुलिस ने युवक के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के एक निवासीय एक युवती का एक आरोप है कि वह घर का कचड़ा फेंकने गयी थी। उसी समय एक युवक उसके पेड से आम तोड रहा था। मना करने पर अश्लील हरकतें करने लगा शोर मचाने पर मारा पीटा कही शिकायत करने पर जान से मारने की धमकी दे कर भाग गया। युवती ने मऊआइमा थाने में तहरीर दे कर गांव के ही दिलीप कुमार पुत्र राजा राम के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है।

जमीनी विवाद को लेकर मार पीट

मऊआइमा। मऊआइमा थाना क्षेत्र के दुबाही गांव में जमीनी विवाद को लेकर पड़ोसियों ने घर में घुस कर लाठी डंडा से मारे पीटे तथा तोडफोड़ किए। पुलिस ने तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कर लिया है। मऊआइमा के दुबाही गांव निवासी हैदर अली पुत्र जाकिर अली का आरोप है कि जमीनी विवाद को लेकर पडोसी लाठी डंडा लेकर घर में घुस कर मारे पीटे तोड फोफ किए। हैदर अली ने मऊआइमा थाने में तहरीर दे कर अनीसा बेगम, गुफरान, इमरान, साहिल तरन्नुम बानों,समानिया बानों ,सुहैल के खिलाफ विभिन्न धाराओं में मुकदमा दर्ज करा दिया है।

बारा और शंकरगढ़ में वज्रपात से दो की मौत,एक महिला झुलसी

अखंड भारत संदेश

बारा/शंकरगढ़। बरसात के दौरान आकाशीय बिजली की चपेट में आने से एक किशोरी और एक अधेड़ की मौत हो गई, जबकि एक युवती को गंभीरावस्था में सीएचसी में भर्ती करवाया गया है। बीते 24 घंटे के दरम्यान मौसम में आए बदलाव के कारण वज्रपात की अलग-अलग घटनाएं देखने को मिल रही हैं। ताजा मामला विकास खंड शंकरगढ़ के पहाड़ी खुर्द गांव का है। यहां के निवासी राजेश की बेटी प्रिया (13) गुरुवार दूसरे पहर बकरी चराने के लिए खेत की तरफ जा रही थी। परिजनों के मुताबिक जब प्रिया घर से निकली, उस समय मौसम बिलकुल साफ था। बीच राह में ही मौसम अचानक बदला और हल्की बूंदाबांदी के साथ आसमान में बिजली गरजने लगी। प्रिया को जब तक अनहोनी का आभास हो पाता, वह आकाशीय बिजली की चपेट में आ चुकी थी। सूचना मिलते ही परिजन उसे लेकर सीएचसी शंकरगढ़ पहुंचे, जहां उसे मृत घोषित कर दिया गया। दूसरी तरफ क्षेत्र के ही मवइया निवासी अजय की पत्नी अंतिमा (30)गुरुवार को दूसरे पहर अपने दरवाजे पर बैठी थी। इसी दौरान उनके बगल बिजली गिरी, जिसकी चपेट में आने से अंतिमा झुलसकर बेहोश हो गई। परिजन उसे लेकर सीएचसी शंकरगढ़ ले गए हैं। दूसरी तरफ बारा तहसील क्षेत्र के तातारगंज में बुधवार की देर शाम हुए वज्रपात में राम नवल सिंह (55) पुत्र आनंद बहादुर सिंह की मौत हो गई थी। रामनवल सिंह खेती-किसानी कर परिवार की आजीविका चलाते थे। पांच जुलाई की शाम जोरदार बरसात हो रही थी। इस दौरान आकाशीय बिजली भी कड़क रही थी। बरसात के बीच जलमग्न हो चुकी धान की नर्सरी का वहपानी निकालने चले गए और इसी दौरान आकाशीय बिजली ने उन्हें अपनी चपेट में ले लिया। वज्रपात की चपेट में आने से रामनवल सिंह की घटनास्थल पर मौत हो गई। रामनवल सिंह के दो बेटे व एक विवाहित बेटी हैं। दोनों बेटे अविवाहित हैं। सूचना पर स्थानीय लेखपाल मौके पर आए। शव को चीरघर भेजा गया है। उपजिलाधिकारी बारा ने बताया कि घटना मेरे संज्ञान में है, राजस्व कर्मचारी को मौके पर भेजा गया था।

ट्रक की टक्कर से नकली किन्नर की मौत, मचा कोहराम

सोरांव। इलाके के भावा पुर गांव के समीप तेज रफ्तार से आ रही माल वाहक वाहन ने टक्टर मार दी । गति से आ रही एक ट्रक ने पिकअप व नकली किन्नर को जोरदार टक्कर मार दिया। जिससे वह गम्भीर रूप से घायल हो गया। आनन फानन में उपचार के लिए सी एच सी सोरांव ले गए । जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। घटना मामले को लेकर घर में कोहराम मचा हुआ है। बताया जाता है कि बीती देर रात सोरांव थाना क्षेत्र के मलाक चौबली निवासी अभिषेक कुमार (22) पुत्र रामानंद नकली किन्नर बन कर कानपुर वाराणसी हाइवे मार्ग पर भावा पुर टोल प्लाजा के समीप माल वाहक चालकों से पैसा मांग रहा है। पीछे से देर रफ्तार से आ रही माल वाहक वाहन ने जोरदार टक्टर मार दी । जिससे वह गम्भीर रूप से घायल हो गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने परिजनों को सूचना देते हुए घायल अवस्था में उपचार के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र सोरांव ले गए। जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। मृतक के पिता रामानंद बिंद की तहरीर पर तहरीर पर अज्ञात चालक के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है । वहीं घटना मामले को लेकर घर में कोहराम मचा हुआ है।

जमीन दिलाने के नाम पर धोखाधड़ी करने वाले तीन के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज

झूंसी। जमीन दिलाने के नाम पर लाखों रुपए की ठगी करने वाले 3 लोगों के खिलाफ झूंसी पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर ली है। पीड़ित का आरोप है कि उसने पैसे वापस मांगे तो उसे धमकी भी दी गई। झूंसी के आजाद नगर निवासी प्रवीण कुमार मिश्रा व्यवसाई हैं। उन्होंने बताया कि सरायइनायत थाना क्षेत्र के ककरा उपरहार निवासी राहुल मिश्रा व शिव प्रकाश बिंद उर्फ शिवम ने हमे फूलपुर में जमीन दिखाई थी। दोनों ने जमीन के मालिक वाराणसी भोजूबीर निवासी चंद्रप्रकाश सिंह से मुलाकात कराई जमीन का सौदा 25 लाख में तय होने के बाद प्रवीण कुमार मिश्रा ने बयाना के तौर पर 16 लाख रुपए भी दिए। आरोप है कि काफी समय बीत जाने के बाद भी जमीन नही मिली और तीनो फोन भी उठाना बंद कर दिए। पीड़ित उनके ऑफिस में जब पैसे मांगने गया तो वहां आरोपियों ने गाली गलौज करते हुए पैसे मांगने पर जान से मारने की धमकी दी। पीड़ित की शिकायत पर झूंसी पुलिस ने गुरुवार को तीनों के खिलाफ धोखाधड़ी सहित कई अन्य धाराओं में मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी।

न्यूज झरोखा

प्रशिक्षण उपरांत वार्ड सदस्यों को उपहार स्वरूप बैग देकर किया सम्मानित

करछना। गुरुवार को ब्लाक सभागार करछना में प्रयागराज यूनाइटेड नेशन प्रोजेक्ट सर्विसेज ऑफ के तहत करछना विकास खंड के प्रधानों पंचायत सदस्यों, लेखपालों, पंचायत सचिवों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं सहित सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों से जुड़े लोगों को प्रशिक्षित उपरांत मिशन की ओर से पुरस्कार से सम्मानित किया गया कार्यक्रम के उपरांत मिशन की ओर से प्रधान हथसरा शिव गणेश पटेल ने प्रशिक्षित वार्ड सदस्यों को उपहार स्वरूप बैग देकर सम्मानित किया हर घर जल योजना के अंतर्गत जल जीवन मिशन " हर घर जल" की सुविधा उपलब्ध कराई जा सके को लेकर करछना ब्लाक सभागार में आयोजित दस दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में लोगों को जागरूक किया जा रहा है कि सरकार की महत्वपूर्ण योजना में सन 2024 तक जल जीवन मिशन में हर घर जल एवं नल हो अंतर्गत गुरुवार को विकास खण्ड स्तरीय दो दिवसीय पंचायत प्रतिनिधियों एवं ग्राम स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी कर्मियों को "प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रशिक्षित किए गए जिसमे दर्जन भर ग्राम पंचायत के वार्ड मेम्बर को प्रशिक्षण दिया गया। आयोजक संस्था - मेराथ एजुकेशन लिमिटेड नोएडा के द्वारा प्रशिक्षण दिया जा रहा व सूर्य प्रकाश निषाद ब्लॉक कोआर्डिनेटर, अजीत कुमार, नारायण द्विवेदी, राजेश कुमार प्रजापति आदि मौजूद रहे।

जल जीवन मिशन प्रशिक्षण शिविर में प्रशिक्षुओं को नहीं मिला किट, मची भगदड़

प्रधान,बीडीसी और ग्राम पंचायत सदस्य हुए मायूस

मेजा। गुरुवार को जल जीवन मिशन शिविर में उस समय भगदड़ मच गई,जब कार्यक्रम के समाप्त होने के बाद लंच पैकेट व किट वितरित किया जाने लगा।भीड़ इतनी बढ़ी कि आयोजक के पास किट की कमी पड़ गई और लोग चिल्लाने लगे।दरअसल कार्यक्रम में जब गांव के लोगों को भीड़ इकट्ठा करने के लिए बुलाया जा रहा था तो आयोजक क्लस्टर हेड विनीत शुक्ला द्वारा कहा गया कि सभी को लंच पैकेट व एक बैग मिलेगा।इसी बात पर भीड़ बेकाबू हो गई और आयोजक को भला बुरा कहने लगे।उधर आयोजन स्थल गोपीनाथ इंटर कालेज धरावल के प्रबंधक प्रमोद मिश्र ने भी आयोजक के ऊपर बिफर पड़े और उन्हें बोरिया बिस्तर समेत भागने के लिए सलाह दी।फिलहाल आए हुए लोगों ने आयोजक के प्रति आरोप लगाते हुए कहा कि बैग केवल जान पहचान और रिश्तेदारों को दिया गया,जिससे बैग पात्र लोगों तक नहीं पहुंच पाया। ग्राम भसुंदर व धरावल के प्रधान यहां तक कि कार्यक्रम का संचालन कर रहे प्रधान संघ के जिला प्रभारी अनिल शुक्ला ने भी आयोजक की व्यवस्था को लेकर सवालिया निशान लगाया और कहा कि प्रधानों में कार्यक्रम को लेकर मायूसी रही।

दुष्कर्म का वांछित अभियुक्त हुआ गिरफ्तार

थरवई। थरवई पुलिस टीम द्वारा अभियुक्त रूप चंद्र पुत्र स्व लल्लूराम जो थाना थरवई अंतर्गत मौहरिया भिदिउरा गांव के रहने वाले अभियुक्त को जो स्थानीय थाना थरवई में पंजीकृत धारा 376 / 354 / 504 / 506 से सम्बंधित दुष्कर्म के वांछित को पुलिस टीम द्वारा उसी गांव से गिरफ्तार करते थाना लाया गया जिस पर आवश्यक विधिक कार्यवाही की गई।

प्राइवेट शिक्षण संस्थान बना अभिभावकों के लिए सरदर्द

अखण्ड भारत संदेश

लेडियारी। विकासखंड कोरांव क्षेत्र के लेडियारी कैथवल में सरकार द्वारा कक्षा 5 तक की मान्यता प्राप्त वाले विद्यालय प्रबंधक कक्षा 8 व 10 तक की कक्षाओं का संचालन कर रहे हैं ऐसे मामलों की शिकायत के बाद भी किसी तरह की कोई कार्यवाही अमल में नहीं लाई जा रही है। इसी प्रकार कैथवल लेडियारी में इंग्लिश मीडियम विद्यालय द्वारा बिना मान्यता के ही कक्षा 8 तक की कक्षाओं का संचालन किये जाने के मामले में कई बार सम्बन्धित अधिकारियों को शिकायत दर्ज कराई गयी लेकिन आज तक किसी भी प्रकार की जांच पड़ताल नही की गई। शिकायतकताओं का आरोप है कि सम्बन्धित अधिकारी विद्यालय प्रबंधक से लेन देन करके मामले को रफा दफा कर देते हैं कोरांव विकासखंड में कई ऐसे विद्यालय हैं जिनका आज तक सरकार के यहां रजिस्ट्रेशन तक नही हुआ है ।और विद्यालय में बच्चे लेआने के लिए ऐसे, ऐसे डग्गामार वाहन हैं कि उनके वाहन का रजिस्ट्रेशन कि वैधता खतम हो गई है और ऐसे वाहनों का विद्यालय में बच्चे लेआने और ले जाने का प्रयोग किया जा रहा है। जो कि नौनिहाल बच्चों के भविष्य के साथ खिलवाड़ किया जा रहा। जिले से लगभग 70 किलो मीटर दूर कोरांव विकासखंड पड़ता है।जिससे जिम्मेदार अधिकारी यहां नही पहुंच पाते और छोटे अधिकारी विद्यालय प्रबंधक से मोटी रकम ऐंठकर फायदा उठाने का कार्य कर रहे हैं देखना यह है कि इस बात को लेकर जिम्मेदार अधिकारी कितना संज्ञान में लेते हैं।

नगर पंचायत शंकरगढ़ को सजाने संवारने की तैयारी

नोएडा से आए इंजीनियर्स संग चुनौतियों पर किया गया मंथन, करोड़ों रुपये खर्च करने की योजना, सौंदर्यीकरण और वाटर हार्वेस्टिंग पर रहा फोकस, प्राचीन गुड़िया तालाब के भी दिन बहुरेंगे

अखंड भारत संदेश

शंकरगढ़। नगर निकाय चुनाव समाप्त होने के बाद से कस्बे की स्थाई हो चुकी समस्याओं से निपटने और कस्बे को सजाने संवारने के लिए लगातार प्रयास जारी है,नगर पंचायत की प्रथम बैठक में भी यह मुद्दा हावी रहा। नगर पंचायत शंकरगढ़ के सभागार में गुरुवार को एक बैठक का आयोजन किया गया। चेयरमैन प्रतिनिधि, सभासदों के साथ नोएडा से आये इंजीनियर्स की टीम ने यहां की समस्याओं पर मंथन किया और उनके समाधान का रास्ता सुझाया। कस्बे में स्थित प्राचीन गुड़िया तालाब के भी पुनरोद्धार पर चर्चा की गई, साथ ही पेयजल की समस्या का स्थाई समाधान के लिए वाटर हार्वेस्टिंग पर जोर दिया गया। नगर पंचायत शंकरगढ़ में पेयजल एक ऐसा मुद्दा है, जो कई दशकों से चला आ रहा है। सरकारें आई, पैसे खर्च हुए पर समस्या जस की तस बनी हुई है। गुरुवार को हुई इस बैठक में पूर्व प्रमुख घनश्याम कोटार्य, चेयरमैन प्रतिनिधि छेदीलाल कोटार्य, सामाजिक कार्यकर्ता इंद्रेश सोनकर, नोएडा से आए इंजीनियर आदित्य और अंकित ने सभासदों के साथ एक-एक समस्याओं पर चर्चा की और उनके निराकरण पर भी विचार रखे गए। गर्मी के दिनों में होने वाली भीषण पेयजल समस्या से निपटने के साथ-साथ घूसखोरी, कमीशनखोरी प्रथा पर भी चर्चा की गई। अंत में तय किया गया कि सभी मिलकर विकास की एक रूपरेखा तैयार करें, ताकि कस्बे का सर्वांगीण विकास हो सके। पूर्व प्रमुख घनश्याम कोटार्य ने कहा डबल इंजन की सरकार में विकास कार्य तेजी से हो रहे हैं। कस्बे को भी सजाया जाएगा। इसके लिए, लगातार प्रयास जारी है। सबकुछ ठीक रहा तो कस्बे के विकास पर 200-250 करोड़ रुपये खर्च हो सकते हैं। उन्होंने कहा, वह दिन दूर नहीं जब यूपी और एमपी की सीमा पर स्थित इस कस्बे का नाम सुनहरे अक्षरों में लिखा जाएगा। बाहर से आकर लोग यहां का विकास देखेंगे। घनश्याम कोटार्य ने बताया कि जल्द ही एक लाख पौधा नगर पंचायत के 12 वार्डों में वितरित किया जाएगा, ताकि यहां हरियाली बनी रहे। इस दौरान नोएडा से आए इंजीनियर्स ने भी समस्याओं के दृष्टिगत अपने विचार रखे और समस्याओं के समाधान का रास्ता सुझाया। चेयरमैन प्रतिनिधि छेदीलाल कोटार्य ने कहा,कि शंकरगढ़ का सबसे प्राचीन गुड़िया का तालाब है। यहां का अभी भी एक बड़ा भूभाग खाली है। इसके सौंदर्यीकरण के साथ-साथ इसे और गहरा किया जाने पर विचार किया जा रहा है, ताकि यहां का जलस्तर बना रहे। इसके अलावा वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम विकसित करने पर प्रयास जारी है। इस मौके पर सभासद आरके सिंह, प्रकाशचंद्र गुप्ता, मोहित सिंह,कमलेश कुमार, रामपाल,चंदन साहू,प्रदीप सिंह, दीपक केसरवानी, शफीक अहमद,दिलीप सिंह,महीप सिंह आदि लोग मौजूद रहे।

ग्रामीणों की जन पंचायत में सामाजिक सरोकारों पर हुई रोचक परिचर्चा

पत्नी का मालिक नहीं पति, तब हाय-तौबा क्यों विवाहेतर संबंधों पर जरा फिर गौर करें हुजूर...

अखंड भारत संदेश

मेजा रोड। इस समय उत्तर प्रदेश की एक महिला एसडीएम और उसके चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी पति का मामला भरपूर चर्चा में बना हुआ है। यह विमर्श को विवश कर रहा है। प्रश्न यह है कि इस पीड़ित पति को अब कानून से क्या न्याय मिलेगा? न तो वह पत्नी द्वारा किये जा रहे व्याभिचार के विरुद्ध पत्नी को कोई दंड दिला सकता है, सिवाय तलाक के, और न ही पत्नी के व्याभिचारी साथी को कटघरे में खड़ा कर सकता है। दरअसल स्त्री और पुरुष के बीच विवाहेतर संबंध यानी व्याभिचार से जुड़ी भारतीय दंड संहिता की धारा 497 को वर्ष 2018 में सुप्रीम कोर्ट ने असंवैधानिक बना दिया। इस निर्णय के बाद पत्नी को विवाहेतर संबंधों की खुली छूट मिल गई। व्याभिचार अब कानूनी अपराध नहीं रहा है। बहरहाल, यह बेचारा पति रो-रोकर मीडिया के सामने गुहार लगाते दिखा कि उसकी एसडीएम पत्नी का किसी दूसरे पुरुष अधिकारी के साथ संबंध स्थापित हो गया है। दो छोटी बेटियां भी हैं और अब परिवार टूटने की ओर है। हुआ यह कि पति की इस मार्मिक गुहार के सामने आने पर समाज में व्यापक विमर्श शुरू हो गया। कुछ ने कहा कि यदि 'नारी सशक्तिकरण' का यही सिला मिलता है तो कोई पति अपनी पत्नी को घर की दहलीज से बाहर फिर आखिर क्यों निकालने दे? समाचार तो यह भी आए कि कुछ सौ पतियों ने नौकरी के लिए पढ़ाई कर रही अपनी पत्नी की पढ़ाई तक छुड़वा डाली। भले जो भी हुआ हो, किंतु मध्यम वर्ग में इससे जमकर मंथन चल पड़ा? इस पीड़ित पति को सोशल मीडिया पर जिस प्रकार से व्यापक सहानुभूति प्राप्त हुई उसने परिदृश्य को बदल कर रख दिया। अब पीड़ित पतियों का दर्द और लोकलाज की चादर में ढका रहने वाला समाज का यह भीषण कोढ़ खुलकर सामने आ रहा है। यद्यपि हर दूसरे दिन समाचार पढ़ने को मिल जाते थे कि पत्नी ने प्रेमी संग मिलकर की पति की हत्या या पति और बच्चों को उतारा मौत के घाट..। किंतु जिस प्रकार से उत्तर प्रदेश के इस पीड़ित पति ने रो-रोकर अपनी बेबसी को उजागर किया, वैसा अब तक नहीं होता था। एक पहलू यह भी है कि मध्यम वर्ग इस कोढ़ को उघाड़ कर दिखाने का साहस कभी नहीं कर सका था, जो अब शुरू हो गया है। अब तक इसे उच्च और निम्न वर्ग की समस्या के रूप में आंक कर मध्यम वर्ग चादर तले खुजाता आया था। अब खुलकर खुजाने का समय आ गया है। विवाहेतर संबंधों की बात करें तो अभिनेताओं से लेकर राजनेताओं तक, हाई सोसायटी का चलन मानकर समाज इसे चटखारे लेकर पढ़ता था, किंतु ऐसी हाय-तौबा पहली बार मची है जब मध्यम वर्ग का मसाला आम हो गया। ऐसी हाय-तौबा तब क्यों नहीं मची जब एक विख्यात टीवी पत्रकार ने पति को तलाक दिये बिना एक विख्यात राजनेता से मंदिर में विवाह कर लिया था। तब पीड़ित पति ने उस नेता के विरुद्ध जिस कानून के अंतर्गत शिकायत दर्ज कराई थी, वह कानून अब नहीं रहा। अब थोड़ा पीछे चलते हैं और समझते हैं कि क्या था व्याभिचार संबंधी वह कानून, जिसे रद कर दिया गया और तब सुप्रीम कोर्ट व सरकार ने आखिर क्या मंथन किया था? वह कानून डेढ़ सौ साल पुराना था। इसके तहत अगर कोई पुरुष किसी दूसरे विवाहिता के साथ उसकी सहमति से शारीरिक संबंध बनाता है, तो महिला के पति की शिकायत पर पुरुष को उक्त कानून के तहत अपराधी माना जाता था। ऐसा करने पर पुरुष को पांच साल का कारावास और अर्थदंड या दोनों का प्रावधान था।इसे रद करने संबंधी याचिका पर निर्णय देते हुए न्यायालय ने कहा था कि धारा 497 महिला के सम्मान के विरुद्ध है। स्त्री को देह पर उसका अपना अधिकार है, इससे समझौता नहीं किया जा सकता है और न ही उस पर किसी प्रकार की शर्तें थोपी जा सकती हैं। महिला को समाज की इच्छा से सोचने को नहीं कहा जा सकता। पति कभी भी पत्नी का मालिक नहीं हो सकता है। न्यायालय ने कहा था कि यह कानून महिला की यौन इच्छाओं को रोकता है और इसलिए यह असंवैधानिक है। महिला को विवाह के बाद यौन इच्छाओं से वंचित नहीं किया जा सकता है। न्यायालय ने केंद्र सरकार से जब पक्ष रखने को कहा तो सरकार ने उक्त कानून को आवश्यक बताया था ?। तर्क दिया था कि व्याभिचार को अपराध की श्रेणी में रखा जाना विवाह की पवित्रता को बचाए रखने के लिए आवश्यक है। ऐसा न होने पर विवाह संस्था और परिवार नष्ट हो जाएगा। बहरहाल, पश्चिम या विकसित देशों की नकल करना भारत में नया चलन नहीं है। विकसित देशों में यह मान लिया गया है कि दो वयस्कों के बीच सहमति से होने वाला यौन संबंध गलत या अनैतिक तो हो सकता है, किंतु इसे अपराध नहीं ठहराया जा सकता। अब प्रश्न यह है कि क्या भारतीय समाज, विशेषकर मध्यवर्ग, इस व्यवस्था को आत्मसात करने को तैयार है? सोशल मीडिया पर जिस प्रकार से पीड़ित पति को सहानुभूति मिली, उसे देखकर तो ऐसा नहीं लगता है कि कभी भी स्वीकार करेगा। तब प्रश्न यह कि क्या समाज को अपना कोई कानून स्वयं बनाना पड़ेगा।

क्या कहता है समाज

सामाजिक संस्था जनसुनवाई फाउंडेशन के प्रदेश प्रभारी अधिवक्ता कमलेश मिश्र का कहना है कि ग्रामीण समाज में, जहां विवाह संस्था को धर्म व समाज का मूल आधार आंका जाता है, वहां व्याभिचार के लिए कतई कोई स्थान नहीं है। परिवार के टूटने का सबसे बड़ा दुख मासूम बच्चों को झेलना पड़ता है। मां ही बच्चों की प्राथमिक आवश्यकता होती है और यह उसका बुनियादी दायित्व है कि बच्चों का भरपूर भावनात्मक पालन-पोषण करे। ऐसी स्थिति में पत्नी को, जो कि एक मां भी है, उसे व्याभिचार की छूट कैसे दे दी जाए। अतः ऐसी दशा में ऐसी महिला को पति का कम जबकि बच्चों का घोर अपराधी मानते हुए कठोरतम दंड का प्रावधान अवश्य किया जाना चाहिए। सरकार को इस विषय में पुनः ठोस कदम उठाने पर विचार करना होगा।

लालगोपालगंज में चोर गैंग का खुलासा, तीन गिरफ्तार

लालगोपालगंज। नवाबगंज पुलिस लालगोपालगंज में चोर गैंग का खुलासा किया है। पुलिस ने तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है।आरोपियों की निशानदेही पर पुलिस ने चोरी किये गए भारी मात्रा में लोहे की पाइप और घटना को अंजाम देने में प्रयुक्त बिना नंबर प्लेट की मोटरसाइकिल बरामद हुई है।बता दें कि लालगोपालगंज चौकी प्रभारी सूर्य प्रकाश दुबे अपने हमराही के साथ वांछित अपराधी, जुर्म व जरायम की रोकथाम के लिए क्षेत्र में निकले थे। तभी मुखबिर से सूचना मिली कि चैनी का पूरा स्थित पीएचसी अस्पताल की पानी सप्लाई के लिए लगी लोहे की पाइप काटकर कुछ लोग मोटरसाइकिल से लेजाकर बेचने के फिराक में हैं। सूचना को गंभीरता से लेते हैं चौकी प्रभारी ने घेराबंदी कर तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया। उनकी निशानदेही पर 46 लोहे की पाइप व बिना नंबर प्लेट की मोटरसाइकिल बरामद किया है। आरोपियों ने रामदीन पुत्र महादेव गौतम, विकास सिंह पुत्र सूरज सिंह, सुनील पुत्र सुंदर लाल विश्वकर्मा निवासी चैनी का पूरा बताया है। पुलिस ने बताया कि बिना नंबर प्लेट की मोटरसाइकिल से गिरोहबंद होकर घटना को अंजाम देते थे। पुलिस तीनों अभियुक्त के खिलाफ लिखा-पढ़ी कर उन्हें न्यायिक हिरासत में प्रस्तुत किया गया, जहां सभी आरोपियों को जेल भेज दिया गया।

आक्रोशित उपभोक्ताओं ने सांसद को दिया ज्ञापन

अखंड भारत संदेश

सहसों। क्षेत्र के सिंगरामऊ गांव में विद्युत विभाग द्वारा बगैर उपभोक्ताओं को सूचित किए सिंगरामऊ गांव की विद्युत सप्लाई को उप विद्युत केन्द्र मलावां सहसों से काटकर थानापुर उप विद्युत केन्द्र से जोड़ने का काम किया जा रहा है जिससे उपभोक्ताओं में काफी आक्रोश है। जबकि उपभोक्ताओं का कहना है कि आजादी के बाद से हनुमानगंज मुख्य विद्युत केन्द्र तथा उसके बाद मलावां सहसों उप विद्युत केन्द्र से सिंगरामऊ गांव की विद्युत सप्लाई का संचालन होता आ रहा है। परन्तु विद्युत विभाग के कर्मचारियों एवं अधिकारियों द्वारा उपभोक्ताओं को बगैर सूचित किए, बिना सहमति के मलावां उप विद्युत केन्द्र से काटकर उप विद्युत केन्द्र थानापुर से सप्लाई के लिए जोड़ा जा रहा है जोकि अवैधानिक है। इस संबंध में सिंगरामऊ गांव के भड़के उपभोक्ताओं ने विद्युत विभाग के इस मनमाना कार्यप्रणाली के चलते गुरुवार को लामबंद होकर भूपेन्द्र मिश्रा उर्फ पप्पू जिला उपाध्यक्ष भाजपा किसान मोर्चा गंगापार के नेतृत्व में काफी संख्या में लोगों ने सांसद फूलपुर केशरी देवी पटेल के आवास पहुंचकर ज्ञापन देते हुए विभाग के खिलाफ अनुचित कार्यप्रणाली से अवगत कराया। जिस पर सांसद ने फौरन मुख्य अभियंता विद्युत प्रयागराज विनोद कुमार से फोन पर वार्ता कर उपभोक्ताओं की समस्या के समाधान के लिए आदेशित किया। इसके पश्चात उपभोक्ताओं ने मुख्य अभियंता विद्युत के कार्यालय पर जाकर मिले तथा उपभोक्ताओं की समस्या से अवगत होते हुए मुख्य अभियंता विनोद कुमार ने एसडीओ पवन कुमार पटेल से फोन कर जांच कर उपभोक्ताओं की समस्या का समाधान किया जाए। उपभोक्ताओं को आश्वासन देते हुए मुख्य अभियंता ने कहा कि सिंगरामऊ गांव की विद्युत सप्लाई का संचालन मलावां सहसों उप विद्युत केन्द्र से ही होता रहेगा। इस मौके पर अधिवक्ता जैन मिश्रा, आदर्श पांडे, योगेश मिश्रा, भइयऊ मिश्रा, राजू मिश्रा, राकेश मिश्रा, डॉ शैलेन्द्र मिश्रा, ज्ञानेन्द्र मिश्रा, राजू पांडे, विद्याधर पांडे, नेब्बू लाल मिश्रा, सत्यम श्रीवास्तव सहित आदि लोग मौजूद रहे।

नगरपंचायत कार्यालय से नोटिस मिलने के बाद भी नही हटाया गया चमड़े का गोदाम

अखंड भारत संदेश

नोटिस मिलने के बाद भी आज तक नहीं हटाया गया चमड़ों के गोदाम, उठ रहे दुर्गन्ध से लोगों का जीना हराम

मऊआइमा नगर पंचायत क्षेत्र के चमड़ों के गोदामों उठ रही दुर्गन्ध और गंदगी से स्वच्छ भारत मिशन की उड़ रही धज्जियां

मऊआइमा। मऊआइमा कस्बा के घनी बस्तियों के बीचों बीच अवैध ढंग से चल रहे चमड़ों की गोदामों को हटाने की मांगपत्र पर डीएम, एस डीएम ने ईओ को जांच कर- के हटवाने को कहा था। नोटिस के बावजूद भी आज तक गोदामों को नहीं हटाया गया। जिसके दुर्गन्ध से बस्ती के लोगों का जीना मुहाल हो गया है तथा स्वच्छ भारत मिशन की धज्जियां उड़ रही है। गोदाम न हटाने से स्थानीय लोगों में आक्रोश व्याप्त है। मऊआइमा नगर पंचायत के कर्मचारियों द्वारा जिले में स्वच्छता मिशन में दूसरे स्थान पर प्रथम स्थान प्राप्त करने के लिए दिन रात नगर किया जा रहा है। परन्तु नगर पंचायत के मोहल्ला मौलाना में अवैध ढंग से चल रहे चमड़ों की गोदामों से उठाने वाली दुर्गन्ध एंव गंदगियों से स्वच्छता अभियान पर सवाल उठ रहा है। चमड़ों के गोदामों से उठ रहे दुर्गन्ध से निवासी तंग आ चुके मोहल्लों के लोगों ने एक लिखित शिकायत डीएम को दिए थे। जिसे एसडीएम को डीएम ने दिया। एसडीएम ने ईओ को जांच कर चमड़ों की गोदामों को बस्ती से बाहर ले जाने की बात लिखी थी ईओ नगर पंचायत मऊआइमा ने सभी चमड़ों के गोदामों के मालिकों को नोटिस भेज कर हटाने को कहा था। नोटिस मिलने के बाद भी आज तक घनी आबादी से बाहर गोदामों को दबंग गोदाम मालिक नहीं हटा रहे हैं। जिससे नगर पंचायत क्षेत्र स्वच्छ भारत मिशन में फिसड्डी साबित हो रहा है। क्षेत्रवासियों को गोदामों से उठने वाले दुर्गन्ध से घरों में रहना मुहाल हो गया है। लोगों ने चेतावनी दी है कि यदि चमड़ों के गोदामों को नहीं हटाया गया तो वह जिलाधिकारी के यहां फिर तहरीर देकर हटवाने की मांग करेंगें।

सड़क किनारे मृत पाया गया युवक परिजन जता रहे हत्या की आशंका

लोगों ने उसे सुबह टहलते हुए देखा था, मृतक चांदपुर सलोरी का निवासी

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। दारागंज कोतवाली क्षेत्र में बक्शी बांध से नाका बास्की की तरफ जाने वाली रोड की ढलान पर एक युवक की लाश पाई गई। परिवार ने देर शाम मौके पर पहुंचकर उसकी पहचान की। हत्या की आशंका घरवालों ने जताई है। पुलिस का कहना है कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद मौत का कारण पता चलेगा। नगर के दारागंज कोतवाली अंतर्गत बक्शी बांध से नाग वासुकी मंदिर की तरफ जाने वाली रोड के ढलान पर बृहस्पतिवार को दोपहर बाद एक युवक की लाश पाई गई, लेकिन उसकी पहचान नहीं हो रही थी। पुलिस ने काफी मशक्कत के बाद देर शाम उसकी पहचान कराई। जिसे पता चला कि उसका नाम बृजेश निषाद (34) पुत्र मोहनलाल निषाद निवासी चांदपुर सलोरी, कर्नलगंज के रूप में हुई। परिवार के लोग मौत की आशंका जता रहे रहे हैं। इंस्पेक्टर दारागंज आशीष सिंह का कहना है कि जाहिर तौर पर उसके शरीर पर कोई चोट के निशान नहीं दिख रहे थे। कुछ लोगों ने बृहस्पतिवार को सुबह उसे बक्शी बांध से नाग वासुकी मंदिर की तरफ जाने वाली रोड पर टहलते हुए देखा। लाश के बगल में शराब की बोतल व नमकीन का पैकेट पड़ा हुआ था। लाश को पोस्टमार्टम हाउस भेजा गया है। मौत कैसे हुई, यह तो पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही बताई जा सकती है।

प्रयागराज के हाथ नहीं आई वंदे भारत, लखनऊ तक ही चलेगी ट्रेन, रेलवे बोर्ड ने लगाई मुहर

प्रयागराज। गोरखपुर से शुरू होने वाली वंदे भारत एक्सप्रेस का संचालन प्रयागराज तक नहीं होगा। इसका संचालन गोरखपुर से लखनऊ के बीच ही होगा। रेलवे बोर्ड के अफसरों के अनुसार पहले वंदे भारत प्रयागराज तक चलाए जाने की योजना थी, लेकिन अब यह लखनऊ तक ही चलेगी।गोरखपुर वंदे भारत को लेकर शुरू से यही कहा जा रहा था कि इसका संचालन प्रयागराज तक होगा। इसकी एक संभावित समय सारिणी भी जारी हुई। उसके हिसाब से ट्रेन गोरखपुर से सुबह सात बजे रवाना होकर 9.10-9.12 बजे अयोध्या, 11.10-11.25 बजे लखनऊ एवं दिन में 2.25 बजे उसका प्रयागराज में आगमन होना था।

निठारी कांड : सुरेंद्र कोली की फांसी के खिलाफ अपील पर हाईकोर्ट में सुनवाई शुरू

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। नोएडा के चर्चित निठारी कांड में निचली अदालत से फांसी की सजा सुनाए जाने के खिलाफ सुरेंद्र कोली की अपील पर इलाहाबाद हाईकोर्ट में बुधवार को फिर सुनवाई शुरू हो गई है। कोली को एक दर्जन से अधिक मामलों में फांसी की सजा सुनाई जा चुकी है। मुंबई से आए कोली के वकील ने अभियोजन की कहानी पर तमाम सवाल उठाए। हाईकोर्ट में अब यह सुनवाई मामले के निस्तारित होने तक हर रोज चलेगी।निठारी कांड के मुख्य आरोपी सुरेंद्र कोली की अपील पर हाईकोर्ट के न्यायमूर्ति अश्वनी कुमार मिश्रा और न्यायमूर्ति एसएएच रिजवी की खंडपीठ कर रही है। यह प्रकरण वर्ष 2005-06 के बीच का है। मामले का पदार्फाश तब शुरू हुआ, जब नौकरी की तलाश में घर से निकली एक

आरोपी के वकील ने उठाए कई सवाल

युवती के पिता ने बेटी की गुमशुदगी की रिपोर्ट नोएडा के सेक्टर-20 थाने में दर्ज कराई। पुलिस की जांच में दिल दहला देने वाला मामला प्रकाश में आया था।पुलिस ने निठारी में रहने वाले मोनिंदर सिंह पंधेर की कोठी के पीछे नाले से बच्चों और महिलाओं के दर्जनों कंकाल बरामद किए गए थे। पुलिस ने मोनिंदर सिंह पंधेर और उसके नौकर सुरेंद्र कोली को आरोपी बनाया था। पुलिस की विवेचना के बीच ही मामला सीबीआई को ट्रांसफर कर दिया गया। सीबीआई ने दोनों के खिलाफ अपहरण, दुष्कर्म और हत्या के कुल 16 मामले दर्ज किए थे।गाजियाबाद स्थित सीबीआई कोर्ट ने सुरेंद्र कोली को एक दर्जन से अधिक मामले में फांसी की सजा सुनाई है। हालांकि, फांसी की सजा के क्रियान्वयन पर सुप्रीम कोर्ट ने रोक लगा रखी है। फांसी की सजा के सभी आदेशों को कोली ने इलाहाबाद हाईकोर्ट में चुनौती दे रखी है। लंबित अपील पर कई बार बहस भी हो चुकी है, लेकिन विभिन्न कारणों से सुनवाई पूरी नहीं हो पाई। ग्रीष्मकालीन अवकाश के बाद हाईकोर्ट खुलते ही कोली की अपील पर नियमित सुनवाई शुरू हो गई है। मुंबई से आए कोली के वकील ने सुनवाई के पहले ही दिन अभियोजन की कहानी को सच्चाई से परे करार दिया।

डॉक्टर ने फांसी लगाकर दी जान

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। जार्जटाउन थाना अंतर्गत क्षेत्र में किराए के मकान में एक डॉक्टर ने सुसाइड कर लिया। उनका श फारसी के फंदे से लटका मिला है। डॉक्टर के पास एक सुसाइड नोट मिला है, जिसमें प्रेमिका और एक अन्य के खिलाफ प्रताड़ित करने का आरोप लगाया है। नोट में लिखा है कि ये लोग हमें जीने नहीं दे रहे हैं। मऊआइमा थाना क्षेत्र के सिमी ताल गांव निवासी सुभाष चंद्र यादव (25) पुत्र अभिमन्यु प्रसाद यादव कन्नौज मेडिकल कॉलेज से एमबीबीएस की पढाई पूरी करने के बाद बरेली एम्स में प्रैक्टिस करते थे। 8 जुलाई को उनकी इंगेजमेंट होने वाली थी। 4 भाई और एक बहन में तीसरे नंबर के सुभाष चंद्र पढ़ाई में काफी होनहार थे। 6 जुलाई को सुभाष चंद्र बरेली से अपने दोस्त जितेंद्र गुप्ता के कमरे में आए थे। जितेंद्र प्रयागराज के बजरंग चौराहा, अल्लापुर में रहते हैं। जितेंद्र किसी काम से बाहर चले गये थे।

सुसाइड नोट में लिखा- ये लोग हमें जीने नहीं दे रहे, दोस्त के कमरे में रुके थे

सुभाष चंद्र कमरे पर अकेले थे। गुरुवार दोपहर पिता ने फोन किया तो उनका फोन नहीं उठा। पिता ने जितेंद्र को फोन किया तो जितेंद्र शाम को कमरे पर पहुंचा। वहां सुभाष चंद्र पंखे में गमछे के फंदे से लटकते हुए मिले। पिता अभिमन्यु ने बताया कि सुभाष के पास से एक सुसाइड नोट मिला है। जिसमें उन्होंने अपनी मौत का जिम्मेदार 2 लोगों को बताया है। सुसाइड नोट में उन्होंने लिखा है कि यह लोग मुझे कई महीने से परेशान कर रहे हैं। मुझे मारना चाहते हैं। उन्होंने सुसाइड नोट में एक महिला समेत दो लोगों का नाम नाम लिखा है। सुभाष चंद्र ने सुसाइड नोट में लिखा है कि हम बेवकूफ थे, समझ नहीं पाए । पुलिस पूरे मामले की जांच कर रही है। थानाध्यक्ष जार्जटाउन धीरेंद्र सिंह ने बताया कि दोनों लोगों के खिलाफ एफ आई आर दर्ज कर ली गई है। लाश को पोस्टमार्टम हाउस भेज दिया गया है। आगे की कार्रवाई की जाएगी। 8 जुलाई को डॉक्टर की इंगेजमेंट थी। पूरा परिवार उसी में बिजी था। उसके पहले डॉक्टर ने यहां सुसाइड कर लिया।

अवैध अतिक्रमण पर चला नगर निगम का हथौड़ा

अखंड भारत संदेश

झूंसी। नगर निगम की ओर से गुरुवार की दोपहर झूंसी में अतिक्रमणकारियों के खिलाफ बड़ी कार्रवाई की गई। गेट, टीन शेड, अवैध गुमटीओ को हटाने के साथ दुकानों पर पॉलीथिन की जांच के साथ जुर्माना भी वसूला गया नगर निगम की इस कार्रवाई से लोगो में हड़कंप मचा रहा। प्रवर्तन

गेट, टीन शेड, अवैध गुमटीओ को हटाने के साथ दुकानों पर पॉलीथिन की जांच के साथ जुर्माना भी वसूला गया

अधिकारी कर्नल अरबी सिंह, जोनल अखिलेश अखिलेश त्रिपाठी अतिक्रमण दस्ते के साथ झूंसी पुलिस बूथ से यादव चौराहा, न्याय नगर गेट व त्रिवेणीपुरम में सड़क की पटरियों पर अवैध रूप से बढ़ाए गए मकानों के गेट, कार खड़ी करने के लिए लगी टीन शेड व सड़क की पटरी लगी गुमटीओ को हटाया गया। घंटों चली कार्रवाई के दौरान स्थानीय लोगो, दुकानदारों व ठेला लगाने वालों में हड़कंप मचा रहा। प्रवर्तन अधिकारी कर्नल आरबी सिंह ने बताया कि कार्यवाही के साथ-साथ 63 हजार की वसूली भी की गई साथ में पॉलिथीन की भी जांच की गई जिसमें 1 किलो पॉलिथीन जप्त किया।

ज्योति मौर्य के पति आलोक मौर्य से पुलिस जल्द करेगी पूछताछ

प्रयागराज। पीसीएस अफिसर ज्योति मौर्य और उनके पति आलोक मौर्य के पारिवारक विवाद के मामले में धूमनगंज थाने में आलोक मौर्य का बयान जल्द दर्ज किया जाएगा। ज्योति मौर्य ने अपने पति पर दहेज के लिए प्रताड़ित करने का मुकदमा दर्ज कराया है। इस मामले में ज्योति और उनके मायके वालों का बयान दर्ज किया जा चुका है। पुलिस अब आलोक मौर्य और नामजद अन्य लोगों का बयान दर्ज करेगी।बरेली में तैनात एसडीएम ज्योति मौर्या और उनके पति आलोक मौर्य का विवाद इन दिनों सुर्खियों में है। दोनों का विवाद इन दिनों सोशल मीडिया पर जमकर ट्रेंड कर रहा है। ज्योति मौर्या ने धूमनगंज थाने में पति आलोक और उउनके भाइयों और भाभी के खिलाफ दहेज उत्पीड़न का मुकदमा दर्ज कराया था। इस मामले में ज्योति मौर्य का बयान दर्ज किया जा चुका है जबकि दूसरे पक्ष से उनके पति और अन्य नामजद लोगों का बयान दर्ज होना है। धूमनगंज कोतवाली के इंस्पेक्टर राजेश कुमार मौर्य ने बताया कि जल्द ही आलोक मौर्य और अन्य नामजद आरोपियों के बयान दर्ज किए जाएंगे। मामले की विवेचना की जा रही है।

प्रयागराज का नाम दुनियां भर में प्रकाशित करने के उद्देश्य से करते रहते हैं प्रियांशु

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश में फिल्म सिटी के निर्माण के बाद प्रदेश के कलाकारों की प्रतिभा सोशल मीडिया एवं फिल्मी परदे के माध्यम से लगातार दिख रही है जिसमें प्रयागराज के कलाकारों ने अपनी मजबूत पकड़ बनाई हुई है इसी क्रम में प्रयागराज के जाने-माने गायक उद्घोषक और पिछले साल के बेस्ट सपोर्टिंग एक्टर के राष्ट्रीय पुरस्कार से नवाजे गए फिल्म अभिनेता प्रियांशु ने पुनः दो शार्ट फिल्म से वापसी कर अपने अभिनय का लोहा बनवाया है दो दिन पूर्व ही स्टोरी ग्राम के बैनर तले पीडीटी स्टोरी पर श्री राम मणि के निर्देशन में सौरभ तिवारी के सह निर्देशन में लांच हुई सामाजिक मुद्दों पर आधारित दो लघु फिल्मों ने इस समय देश भर के मोबाइल में फेसबुक पेज एवं यूट्यूब पेज पर अपनी जगह बनाई है मात्र चौबीस घंटे में दोनों फिल्में एक मिलियन से अधिक लोगों तक पहुंच गई है। प्रयागराज के प्रियांशु सहित इंडिया नॉर्थ जोन अभिनेत्री आकांक्षा वर्मा ,वरिष्ठ कलाकार हरदीप सिंह ,अभिनेत्री स्मिता दीक्षित के अभिनय को इन दोनों शार्ट फिल्म के माध्यम से देशभर में काफी पहचान मिल रही है ,प्रियांशु श्रीवास्तव ने बताया कि अभी और भी कई ऐसी शॉर्ट फिल्मों को पीडीटी स्टोरी एवं स्टोरी ग्राम के माध्यम से जनता के बीच लाने का उद्देश्य निर्देशक श्री राम मणि त्रिपाठी जी का है जो कि खुद एक प्रोफेसर होते हुए विभिन्न सम सामयिक मुद्दों पर ऐसे विषय पर कार्य कर रहे है। जनहित में जागरूक करने के उद्देश्य से ऐसे चलचित्र का निर्माण कर ना सिर्फ नए कलाकारों को उनकी प्रतिभा दिखाने का अवसर दे रहे हैं अपितु समाज को जागरूक करने का प्रयास कर रहे हैं ,प्रियांशु श्रीवास्तव ने बताया कि इससे पहले भी वह बॉलीवुड फिल्म हुरदंग ,भोजपुरी फिल्म भोजपुरिया में

दम बा जैसी फिल्मों में सशक्त किरदार निभा चुके हैं एवं उनकी आगामी फिल्म यूपी सत्तर भी बहुत जल्द जनता के बीच आने वाली है। सात सौ से अधिक गायन एवं उद्घोषण के मंच कर चुके प्रियांशु एक मोटिवेशनल स्पीकर के साथ-साथ सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में भी सक्रियता से प्रतिभाग कर प्रयागराज का नाम दुनिया भर में प्रकाशित करने के उद्देश्य से करते रहते हैं प्रियांशु से पूछने पर उन्होंने बताया कि एक सरकारी कर्मचारी होते हैं ऐसे समसामयिक मुद्दों पर कार्य करने से स्वयं को गर्व महसूस होता है तथा अगर ऐसी फिल्मों को देख कर जनता में जागरूकता फैलती है तो सरकार के प्रति समाज के प्रति अपने दायित्व का भी निर्वाहन अपनी कला के माध्यम से करने में खुशी होती हैं उन्होंने गायन से अभिनय कि दुनिया में सफलता मिलने का श्रेय उनके छोटे भाई जैसे मित्र एवं प्रदेश के जाने-माने सह निर्देशक एवं निमार्ता सौरभ तिवारी को दिया उन्होंने कहा कि सौरभ तिवारी की वजह से उन्हें अभिनय के क्षेत्र में लोग जानते हैं सौरभ तिवारी ने ही उन्हें अवसर देकर उनकी प्रतिभा को जन-जन तक पहुंचाया।

प्रयागराज से पुणे होकर बंगलुरु के लिए चलेगी सीधी ट्रेन, रेलवे बोर्ड को भेजा जा रहा प्रस्ताव

प्रयागराज। प्रयागराज में वर्ष 2025 में लगने वाले महाकुंभ मेले के पहले पुणे के रास्ते बंगलुरु के लिए सीधी ट्रेन की सौगात मिल सकती है। इस ट्रेन का संचालन सप्ताह में दो दिन होगा। इसे चलाए जाने का प्रस्ताव उत्तर मध्य रेलवे प्रशासन द्वारा रेलवे बोर्ड को भेजा जा रहा है।वर्तमान समय में प्रयागराज से पुणे के लिए कुल पांच ट्रेनें हैं, लेकिन इसमें से एक भी ट्रेन यहां से शुरू नहीं होती है। प्रयागराज छिवकी के रास्ते 12150 पटिलिपुत्र-पुणे ही एकमात्र ट्रेन है जो हर रोज चलती है। इसके अलावा 11038 गोरखपुर-पुणे प्रत्येक रविवार, 11034 दरभंगा-पुणे का संचालन प्रत्येक शनिवार, 22132 बनारस-पुणे प्रत्येक बुधवार एवं 11428 जसडीह जंक्शन-पुणे प्रत्येक सोमवार को चलती है।इसी तरह बंगलुरु के लिए सात ट्रेनें हैं, लेकिन इसमें 12296 संघमित्रा एक्सप्रेस ही प्रयागराज छिवकी होकर हर रोज चलती है। शेष अन्य ट्रेन 22688 बनारस-मैसूर, 22684 लखनऊ-यशवंतपुर, 12540 लखनऊ-यशवंतपुर, 12577 बागमती एक्सप्रेस, 22351 पाटलिपुत्र-यशवंतपुर , 22353 पटना-बंगलुरू हमसफर सप्ताह में एक-एक दिन ही चलती है। अन्य स्टेशनों से आने की वजह से उसमें प्रयागराज के यात्रियों को गिनती भर ही बर्थ मिल पाती है, जबकि यहां से इन दोनों ही शहरों के लिए हर रोज सफर करने वाले लोगों की अच्छी खासी संख्या है।

कांवर यात्रा के लिए खोल दिया जाएगा अन्दावा का आरओबी

अखंड भारत संदेश

झूंसी। वाराणसी प्रयागराज मार्ग पर अंदावा बन रहा आरओबी जल्द ही कांवरियों के लिए खोल दिया जाएगा। बुधवार की रात रेलवे ओवर ब्रिज का स्लैप पड़ गया पुलिस की माने तो दो दिन के भीतर वह पैदल आने-जाने लायक हो जाएगा।वाराणसी प्रयागराज मार्ग पर अंदावा में बन रहे आरओबी की वजह से एक साल से अंदावा फ्लाईओवर पर वनवे किया गया है। सावन मास में वाराणसी प्रयागराज मार्ग की उत्तरी लेन कांवरियों के लिए आरक्षित किए जाने से आरओबी निर्माण राहगीर व कांवरियों की राह में बड़ी मुसीबत बन गया था। बीते सोमवार को जिला अधिकारी संजय खत्री अपर पुलिस आयुक्त पवन कुमार ने कावड़ यात्रा को लेकर मार्ग के निरीक्षण के दौरान आरओबी निर्माण कार्य में लगी एजेंसी को दो दिन के भीतर आरओबी को पैदल चलने लायक बनाने का निर्देश दिया था। जिसके बाद एजेंसी ने युद्ध स्तर पर काम कराया और बुधवार की रात इंस्पेक्टर झूंसी वैभव सिंह की मौजूदगी में आरओबी पर स्लैप डाल दिया गया। हालाकि की अभी आरओबी का 30 प्रतिशत काम बाकी है। लेकिन उसपर पैदल व हल्के वाहन अब गुजर सकेंगे।

न्यूज झरोखा

श्री श्री बाल रामलीला समिति सिविल लाइंस प्रयागराज समिति का हुआ गठन

समिति ने वरिष्ठ पार्षद अमित सिंह बबलू, वा पार्षद संतोष सिंह उर्फ बबलू रधुवंशी का किया सम्मान

प्रयागराज। बुधवार को स्थानीय जन प्रिय रेस्टोरेंट मे आयोजित श्री श्री बाल राम लीला समिति सिविल लाइन प्रयागराज के द्वारा आयोजित अनेक धार्मिक कार्यक्रमो मे लोकप्रिय कार्यक्रम मयार्दापुरुषोत्तम श्री राम जी की लीला के मंचन के लिए आयोजन समिति 2023 का गठन केन्द्रीय पदाधिकारीगण की देखरेख मे सम्पन्न हुआ जिसमे इन पदाधिकारीगणो का चयन सर्व सहमति से किया गया इसी बैठक मे पार्षद अमित सिंह बबलू वा संतोष सिंह बब्लू रघुवंशी पार्षद का सम्मान भी किया गया। प्रधान संरक्षक विनोद चन्द्र दुबे ,उप प्रधान,संरक्षक अनिल गुप्त ,चेयरमैन रत्नेश मिश्र ,अध्यक्ष अमित सिंह ,वरिष्ठ उपाध्यक्ष उमंग ग्रोवर ,वरिष्ठ उपाध्यक्ष डाक्टर सुभाष के यादव ,उपाध्यक्ष सुशील कुमार पूर्व पार्षद,उपाध्यक्ष विशाल कनौजिया ,उपाध्यक्ष शिवा सिंह ,उपाध्यक्ष पवन श्रीवास्तव, उपाध्यक्ष पवन जी श्रीवास्तव ,आंनद दुबे, उपाध्यक्ष बब्लू सिंह रघुवंशी, उपाध्यक्ष नीरज खेडा ,उपाध्यक्ष नमित श्रीवास्तव ,उपाध्यक्ष हरीश पासवान ,महामंत्री अजीत कुमार जायसवाल ,उपमंत्री आकाश गुप्ता संगठन मंत्री ,सांस्कृतिक मंत्री बृजेश पटेल अधिवक्ता, संयोजक अशोक कुमार सिंह पूर्व पार्षद,सहायक संयोजक मनीष जटवानी सहाय महोत्सव प्रबंधिका अवंतिका टंडन सह महोत्सव प्रबंधक रोहित बत्रा, पर्यवेक्षक सुधीर कुमार , प्रकाशन मंत्री किशन आनन्द संगठन मंत्री अखिलेश मिश्र , कोषाध्यक्ष रज्जन कुमार, सचेतक डॉक्टर बंटी दुबे , मीडिया प्रभारी पंकज चौधरी , सहायक प्रबंधक अरविंद यादव ,प्रधान निर्देशक प्रबंधक शंकर सुमन ,निर्देशक जगदीश बन्धु आदि लोगो को सर्वसम्मति से चुना गया है।

बच्चों के विविध प्रतियोगिताओं का होगा आयोजन : मीना जायसवाल

नैनी। नैनी अवंतिका विकास समिति महिला मंडल की बैठक गुरुवार को संयोजिका मीना जायसवाल के आवास पर सम्पन्न हुई। बैठक मे आगामी स्वतंत्रता दिवस एवं सावन महोत्सव पर आयोजित कार्यक्रमो पर विचार विमर्श हुआ। मीना जायसवाल के अनुसार आजादी महोत्सव के उपलच्क्ष मे बच्चो के विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन एवं पुरस्कार वितरण किया जायेगा। इसी प्रकार सावन महोत्सव मे महिला मंडल द्वारा कजरी, भजन, गीत आदि के साथ महोत्सव मनाया जाएगा। बैठक मे आशा सिह, आरती पाण्डेय, सुनीता गुप्ता, लक्ष्मी गुप्ता, राजकुमारी सिंह, पुष्पा सिंह, नविता त्रिपाठी, चन्द्रावती तिवारी, पुर्णिमा यादव, अनीता केशरवानी, सुमित्रा केशरवानी आदि शामिल रही।

जीवन बचाने के लिए जल संसाधनों को बचाना जरूरी : गंगा प्रसाद मिश्र

जल जीवन मिशन के तहत मेजा के धरावल स्थित गोपीनाथ इंटर कालेज में दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का समापन

अखंड भारत संदेश

मेजा। गुरुवार को मेजा ब्लॉक के गोपीनाथ इंटर कालेज धारावल में जल जीवन मिशन के तहत दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का समापन हुआ,जिसमें प्रशिक्षकों ने पानी के संरक्षण और उनके उपयोग पर विचार रखा।मुख्य अतिथि ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि गंगा प्रसाद मिश्र ने मां सरस्वती के चित्र पर दीप प्रज्वलित और पुष्प अर्पित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। बतौर मुख्य अतिथि उन्होंने कहा कि पृथ्वी पर जीवन को बचाने के लिए पानी के संसाधनों को बचाना जरूरी है। श्री मिश्र ने कहा कि वर्तमान परिवेश में लोग पानी का दुरुपयोग कर रहे हैं, जो आगामी दिनों के लिए घातक साबित होगा। कार्यक्रम में प्रशिक्षक आदर्श मिश्र,दिवाकर सिंह,अनुज पांडेय,ओंकार मिश्र और संतोष कुमार ने मिशन के तहत लोगों को जल से होने वाले फायदे और नुकसान के बारे में विस्तार से बताया और उसके समाधान की जानकारी दी।कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे पूर्व ब्लॉक प्रमुख मुन्नन शुक्ल ने केंद्र सरकार द्वारा चलाई जा रही जल जीवन मिशन योजना के बारे में जानकारी दी।शिविर में नमामे गंगे

द्वारा चलायी जा रही स्कीम हर घर जल हर घर नल से सभी को पानी मिल सके शुद्ध पानी ग्रामीणों को मिले उसके लिए ग्राम पंचायत स्तर पर जल समितियों का गठन करना होगा, जिसमें 50 प्रतिशत महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करना होगा।समाजसेवी प्रभाकर ओझा उर्फ रिंकू ओझा ने पानी की समस्या पर चर्चा करते हुए जल की उपयोगिता के बारे में जानकारी दी। शिविर का आयोजन मेरा पथ एजुकेशन लिमिटेड नोएडा द्वारा किया गया।मुख्य अतिथि गंगा प्रसाद मिश्र व जिला कोऑर्डिनेटर मीना द्वारा संयुक्त रूप से उपस्थित प्रधानों व बीडीसी,ग्राम पंचायत सदस्य और स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को सम्मानित करते हुए किट वितरित किया गया।इससे पूर्व आयोजक द्वारा मुख्य अतिथि व मंचासीन सभी अतिथियों का माल्यार्पण कर स्वागत किया गया।ब्लॉक क्वार्डिनेटर आकाश शुक्ला,टीम के सदस्य रंजित पांडेय,हरिओम,संदीप बिंद,पंकज मिश्र, विजय कुमार सिंह और विनय कुशवाहा का सहयोग सराहनीय रहा।कलस्टर हेड विनीत शुक्ला ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।इस मौके पर प्रमुख रुप अवधेश शुक्ल,रजनीश मिश्र, क्रय विक्रय अध्यक्ष श्याम शिवम तिवारी,भाजपा नेता गांधी जी,रमेश मिश्र,प्रमोद मिश्र,संजय मिश्र,अखिलेश यादव,राकेश तिवारी, सहित सभी बीडीसी,ग्राम पंचायत सदस्य व समाजसेवी मौजूद रहे।

नशेड़ी पति महिला को कर रहा परेशान

पट्टी, प्रतापगढ़। अरुणाचल प्रदेश महिला को बहला-फुसलाकर घर लाया युवक अब महिला को परेशान कर रहा है। पीड़ित महिला ने इस संबंध में पट्टी कोतवाली में शिकायती पत्र देकर इंसाफ की गुहार लगाई है। पट्टी कोतवाली क्षेत्र के कुम्भिया की रहने वाली शिवानी पत्नी शेर बहादुर ने बताया कि उसका पति शेर बहादुर उसे बहला-फुसलाकर मंदिर में शादी किया उसे डेढ़ साल का एक बच्चा भी है पीड़ित महिला ने बताया कि अब पति नशेड़ी हो चुका है और उसे परेशान करता है उसके 15 महीने के बच्चे को कहीं छुपा दिया है हत्या की आशंका जताते हुए महिला ने शिकायती पत्र देकर इंसाफ की गुहार लगाई है।

डा0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी के विचार आज भी प्रासंगिक

नपाध्यक्ष, विधायक आदि ने चढ़ाये श्रद्धा सुमन

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। भारतीय जनसंघ अब भारतीय जनता पार्टी के संस्थापक तथा प्रखर राष्ट्रवादी श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जयंती पर चिलबिला में स्थापित उनकी मूर्ति पर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए नगर पालिकाध्यक्ष हरिप्रताप सिंह ने कहा कि डा0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने जो जनसंघ का पौधा लगाया था, वह आज भाजपा पार्टी बनकर देष ही नहीं, दुनिया में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में अपना परचम लहरा रही है।

इस अवसर पर सदर विधायक राजेन्द्र मौर्य ने श्यामा प्रसाद मुखर्जी को महान राष्ट्रवादी नेता बताते हुए

वृक्षारोपण करते सदर विधायक राजेन्द्र मौर्य व नगर पालिकाध्यक्ष हरिप्रताप सिंह।

कहा कि आज भी उनके सिंद्धान्त और विचार प्रासंगिक हैं। इस अवसर पर पूर्व जिलाध्यक्ष ओम प्रकाष त्रिपाठी, सभासद आषुतोष, दीपक के अलावा बड़ी संख्या में कार्यकताओं ने श्रद्धा सुमन अर्पित किया। इसी प्रकार चिलबिला में एक अन्य कार्यक्रम में श्यामा प्रसाद मुखर्जी को श्रद्धा सुमन करने एमएलसी अषोक अग्रवाल व पवन सिंह चैहान ने श्यामा प्रसाद मुखर्जी के चित्र पर माल्यार्पण किया। इस अवसर पर प्रदेष उपाध्यक्ष, विषेषाधिकार समिति के अध्यक्ष विजय बहादुर पाठक भी मौजूद रहे। सभी ने उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए उनके आदर्षों का अनुसरण करने की अपील की। इस अवसर पर विधायक सदर राजेन्द्र मौर्य व नपाध्यक्ष हरिप्रताप सिंह ने अन्य नेताओं के साथ वृक्षारोपण भी किया।

पौधारोपण करके मनाई गई डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जयंती

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। गुरुवार को पट्टी के नवनिर्वाचित नगर अध्यक्ष अशोक कुमार जायसवाल की अगुवाई में शिक्षाविद व सामाजिक चिंतक तथा कुशल राजनीतिज्ञ जनसंघ के संस्थापक डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी की 122वीं जयंती धूमधाम से मनाई गई। इस दौरान पौधारोपण करके उसे सुरक्षित करने का संकल्प लिया गया। पट्टी नगर अध्यक्ष अशोक कुमार जायसवाल ने इस दौरान विभिन्न स्थानों पर पौधारोपण किया उनके साथ भारतीय जनता पार्टी के कई कार्यकर्ता व उनके समर्थक मौजूद रहे। रामराज इंटर कॉलेज सहित नगर के विभिन्न स्थानों पर पौधारोपण करने के बाद नगर अध्यक्ष अशोक कुमार जायसवाल ने कहा कि जनसंघ के संस्थापक डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी एक विधान एक निशान एक संविधान पर विश्वास रखते थे। उनके और देश के संविधान निमार्ताओं के सपनों को साकार करने के लिए समान नागरिक संहिता लाने के लिए सरकार प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि पौधारोपण और उसकी सुरक्षा से न सिर्फ पर्यावरण सुरक्षित होता है बल्कि हवा व हरियाली उपलब्ध होती है इस दौरान उनके साथ पूर्व सभासद रमेश सोनी, प्रिंस बरनवाल सहित भाजपा कार्यकर्ता व समर्थक मौजूद रहे।

वृक्षारोपण करते नगर अध्यक्ष अशोक कुमार जायसवाल।

दीवानी में हड़ताल और कचहरी में तालाबंदी, जमकर की नारेबाजी

मांगों को लेकर उग्र थे अधिवक्ता, कचहरी में नहीं हुआ कोई काम

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिला कचहरी में अधिवक्ताओं ने जहां अपनी मांगों को लेकर दीवानी कचहरी में तो हड़ताल कर दी, वहीं जिला कचहरी में तालाबंदी कर दी जिससे जिला कचहरी के कर्मचारी व अधिकारियों को कार्य करने में अवरोध हुआ। अधिवक्ताओं ने अधिकारियों के विरुद्ध जमकर नारेबाजी की। अधिवक्ताओं ने कहा कि भ्रष्टाचारियों पर जिला प्रषासन अंकुष नहीं लगा रहा है और अधिकारी मनमानी कर रहे हैं।

इस सम्बन्ध में

अधिवक्ताओं की एक बैठक जूनियर बार एसोसिएशन पुरातन प्रतापगढ़ सभागार में अध्यक्ष इंदुभाल मिश्र की अध्यक्षता में हुई। बैठक का संचालन संतोष नारायण मिश्र ने किया। बैठक में उपजिलाधिकारी लालगंज उदय भान द्वारा

मांगों को लेकर कचहरी परिसर में प्रदर्शन करते अधिवक्ता।

तालाबंदी करते अधिवक्तागण।

प्रशासनिक व न्यायिक कार्यों में किए जा रहे भ्रष्टाचार के मामलों को जिलाधिकारी से शिकायत की गई। उनके तत्काल स्थानांतरण की मांग पर जिलाधिकारी प्रतापगढ़ द्वारा आज तक कोई कार्यवाही न किए जाने से आक्रोशित अधिवक्ताओं ने आक्रोश व्यक्त किया। इसके अलावा तहसील सदर के एसडीएम सदर व अधीनस्थ राजस्व कर्मियों द्वारा व्यापक भ्रष्टाचार किया जा रहा है। इसके साथ साथ कलेक्ट्रेट राजस्व अभिलेखागार में भू माफिया एवं सरकारी कर्मचारियों की मिलीभगत से राजस्व अभिलेख नष्ट करते हुए व्यापक भ्रष्टाचार एवं कूटरचित दस्तावेज तैयार किया जा रहा है, एवं उपनिबंधक सदर कार्यालय में रजिस्ट्री के समय अवैध धन उगाही करके व्यापक भ्रष्टाचार किया जा रहा है।जिसके संबंध में माननीय जिलाधिकारी ने संगठन द्वारा की गई शिकायत का संज्ञान न लेकर उपरोक्त सभी मामलों में उदासीन रवैया अपनाया जा रहा है एवम भ्रष्ट अधिकारियों का बचाव किया जा रहा है।इसके साथ ही हफ्ते पूर्व अधिवक्ता वीर विक्रम सिंह पर जानलेवा हमले के आरोपियों की गिरफ्तारी पुलिस द्वारा आज तक नहीं की गई, जिससे अधिवक्ताओं में भारी आक्रोश व्याप्त है और सर्व सम्मति से निर्णय लिया गया कि अधिवक्तागण आज न्यायिक कार्य का बहिष्कार करते हुए लोकतांत्रिक तरीके से जिलाधिकारी के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किए एवम हड़ताल प्रस्ताव जिला जज, जिलाधिकारी को सौंपे। बैठक में जूनियर बार कमेटी उपाध्यक्ष शिव प्रकाश मिश्र, राघवेंद्र सिंह, जितेंद्र सैनी, संतोष पाण्डेय, सर्वेश शुक्ल, बागिश मिश्र, अजय त्रिपाठी, शिवाकांत पांडे, योगेश शुक्ल, संजय मिश्र, राम गोपाल तिवारी, नीरज ओझा, ममता पांडे, मयंक शेखर मिश्र, ऋषिकांत शुक्ल, अजीत ओझा, हरीश शुक्ल, महेश यादव, आशिफ सिद्दीकी एवं तमाम अधिवक्ता शिशिर शुक्ल, मुक्कू ओझा, सुरेंद्र पांडे, संतोष सिंह, लालगंज पूर्व अध्यक्ष राधा मोहन सिंह, टीपी यादव, रानीगंज अध्यक्ष प्रदीप त्रिपाठी, भूपेंद्र सिंह, सुधीर मिश्र, अंकित श्रीवास्तव, अंकित दुबे, अंकित पाठक, विष्णु तिवारी, रामानुज मिश्र आदि उपस्थित रहे।

एक शिक्षक के सहारे चल रहा प्राथमिक विद्यालय

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। एक तरफ प्रदेश के मुख्यमंत्री सरकारी स्कूलों मे बच्चो को अच्छी से अच्छी शिक्षा दिलाने के लिए कोई कसर बाकी नही छोड़ रही है तो वही दूसरी तरफ शिक्षा विभाग के जिम्मेदार अधिकारियों की उदासीनता के चलते मुख्यमंत्री की सारी मेहनत पर पानी फिरता नजर आ रहा है जिसका नजारा गुरुवार को ब्लाक कालाकांकर के प्राथमिक विद्यालय में देखने को मिला जहां पर हेडमास्टर अकेले 64 बच्चो को पढ़ा रहे हैं। सहायिका का अपने गृह क्षेत्र मे ट्रांसफर करा लेने से केवल हेड मास्टर अकेले बच्चो को पढ़ा रहे हैं। एक जुलाई से विद्यालय का नया सत्र शुरू हो गया लेकिन अधिकतर प्राथमिक विद्यालयों मे बच्चो की संख्या मानक के विपरीत दिखाई दे रही है। जब कि वगैर मान्यता प्राप्त प्राइवेट स्कूलों मे बच्चो की संख्या कही अधिक दिखाई दे रही है जो सोचने वाली बात है। जब कि विद्यालय का नया सत्र शुरू हो गया लेकिन अभी तक खंड शिक्षा अधिकारी कालाकांकर स्कूल मे अपनी आमद नही करा सके। ऐसे में बच्चों का भविष्य क्या होगा यह तो विभाग से अच्छा कोई नही बता सकता है।

घायल युवक की उपचार के दौरान मौत

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। मानिकपुर थाना क्षेत्र निवासी बन्ने उर्फ. मो0 इरशाद पुत्र टिल्लू उर्फ. मो0 सिराज (40) वर्षीय मिरगढ़वा मानिकपुर निवासी गुरुवार की दोपहर नवाबगंज थाना क्षेत्र के अंसारगंज बाजार मे मिट्टी मे शामिल होने बाइक से बिना हेलमेट लगाकर जा रहा था कि प्रयागराज लखनऊ हाइवे पर सैफू का पुरवा गांव के सामने सोलर पैन टावर के सामने अचानक बाइक की ब्रिक लगा दिया, जिससे अनियंत्रित होकर गिर पड़ा जिसके सिर पर गंभीर चोट आ गई। सूचना पर पहुँचे एस आई अमित सिंह उपचार के लिए सीएचसी कालाकांकर ले गये जहा चिकित्स्कों ने रायबरेली के लिए रिफर कर दिया जहा उपचार के दौरान बन्ने की मौत हो गई। मौत की खबर मिलते ही परिजनों मे कोहराम मच गया। घटना की बाबत पूछे जाने पर थाना प्रभारी सुधीर कुमार सोनी ने बताया कि घायल युवक बन्ने की एक घंटा उपचार करने के बाद जिला अस्पताल मे मौत हो गई।

20 लीटर अवैध देसी शराब के साथ अभियुक्त गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिले के थाना कुण्डा से उ0नि0 मनोज कुमार मय हमराह द्वारा देखभाल क्षेत्र/चेकिंग के दौरान मुखबिर की सूचना पर थाना क्षेत्र के रायपुर भिरखी में रोड़ किनारे पुलिया से एक व्यक्ति रामलखन सरोज पुत्र स्व0 मोतीलाल निवासी ग्राम रायपुर भिरखी थाना कुण्डा जनपद प्रतापगढ़ को 20 लीटर अवैध कच्ची शराब के साथ गिरफ्तार किया गया। उक्त बरामदगी के संबंध में थाना स्थानीय पर मु0अ0सं0 225/2023 धारा 60 आबकारी अधि0 का अभियोग पंजीकृत किया गया है।

मारपीट का मुकदमा दर्ज

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। नवाबगंज पुलिस ने खेत जोतने के दौरान हुई मारपीट के मामले मे एक के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया। थाना क्षेत्र के सैय्यद यासीनपुर निवासी कमला देबी पत्नी स्व0 बाबूलाल यादव ने पुलिस को दिये गये तहरीर मे शिकायत किया है कि गुरुवार की सुबह लगभग 10 बजे मेरा लड़का वीरेंद्र और मै खेत जोतवा रहे थे कि गांव का एक युवक खेत जोतवाने के विवाद के दौरान मुझे व मेरे लड़के वीरेन्द को मारा पीटा। पुलिस ने घटना की तहरीर मिलने पर पीड़ित का मेडिकल कराकर आरोपी के खिलाफ नामजद मुकदमा दर्ज किया।

गैर इरादतन हत्या के आरोपी चढ़ा पुलिस के हत्थे

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। काफी दिन से गैर इरादतन हत्या के आरोपी को पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर पकड़ कर आवश्यक कार्रवाई करते हुए न्यायालय भेज दिया है। पट्टी कोतवाली में तैनात उपनिरीक्षक विनोद कुमार अपने हमराहियो के साथ मुखबिर की सूचना पर उन्होंने बलवा मारपीट छेड़खानी तथा गैर इरादतन हत्या के महदहा निवासी विश्वनाथ को गुड्डू की दुकान से गिरफ्तार किया वह काफी दिन से फरार चल रहा था। पुलिस ने आवश्यक कार्रवाई करके न्यायालय भेज दिया।

पट्टी-राजा बाजार मार्ग पर बना हुआ पुल हुआ क्षतिग्रस्त, परेशानी

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। जौनपुर से जोड़ने वाली सड़क के बीच में बना हुआ पुल क्षतिग्रस्त हो चुका है यह राहगीरों के लिए मौत का कारण बन सकता है लेकिन महकमे के जिम्मेदार इस संबंध में कोई भी आवश्यक कदम उठाने से गुरेज कर रहे हैं। पट्टी तहसील क्षेत्र से निकलने वाला संपर्क मार्ग राजा बाजार जौनपुर में जाकर मिलता है। भरोखन स्कूल के पास स्थित नाले पर बना हुआ पुल क्षतिग्रस्त हो चुका है आने जाने वाले राहगीर आए दिन यहां पर दुर्घटनाग्रस्त हो जाते हैं। तेज रफ्तार में फर्राटा भरने वाले वाहन की थोड़ी सी लापरवाही के उनकी जान भी जा सकती है वही इस मार्ग पर दर्जन भर विद्यालय हैं जहां पर हजारों छात्र-छात्राएं दिन होकर गुजरते हैं। अब देखना यह होगा कि इस पर नजर उठाते हैं और मरम्मत करवाते हैं। उधर हल्की बरसात से ही पट्टी नगर के जल निकासी की पोल खुल गई गुरुवार की शाम को को हुई बारिश से जहां किसानों को काफी राहत मिली वहीं पट्टी नगर के ढकवा मोड़ पूरी तरीके से तालाब में तब्दील हो गया। बारिश से सड़क पूरी तरीके से लबालब भर गया, जिससे आने जाने वाले राहगीरों को काफी दिक्कत का सामना करना पड़ा। नाले की सफाई के लिए हुई खुदाई के कारण नाली का गंदा पानी सड़क पर आ गया और पानी की जल निकासी ना होने के कारण काफी देर तक राहगीरों में असमंजस की स्थिति बनी रही वही काफी देर पानी निकल जाने के बाद नगरवासी व राहगीरों ने राहत की सांस ली।

शिकायतों का निस्तारण प्राथमिकता के आधार पर कराएं: एमएलसी

उ0प्र0 विधान परिषद की विशेषाधिकार समिति की बैठक सम्पन्न

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। उ0प्र0 विधान परिषद की विशेषाधिकार समिति की बैठक विकास भवन सभागार में आयोजित की गयी जिसमें बैठक की अध्यक्षता एमएलसी विजय बहादुर पाठक द्वारा की गयी। इसके अतिरिक्त विशेषाधिकारी समिति में एमएलसी पवन सिंह चैहान, अशोक अग्रवाल व कुंवर महराज सिंह सहित जिलाधिकारी प्रकाश चन्द्र श्रीवास्तव, पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल, मुख्य विकास अधिकारी ईशा प्रिया, अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0) त्रिभुवन विश्वकर्मा, भाजपा जिलाध्यक्ष हरिओम मिश्र, जिला विकास अधिकारी ओम प्रकाश मिश्र, पी0डी0 डीआरडीए रामचन्द्र शर्मा, मुख्य चिकित्साधिकारी डा0 जी0एम0 शुक्ला व एमएलसी अक्षय प्रताप सिंह के प्रतिनिधि लाल साहब सिंह सहित जिला स्तरीय अधिकारी व कार्यदायी संस्थाओं के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

बैठक में विशेषाधिकार समिति के एमएलसी ने अधिकारियों से परिचय प्राप्त किया। बैठक में विशेषाधिकार समिति की अध्यक्षता कर रहे एमएलसी विजय बहादुर

विशेषाधिकार समिति की बैठक में बोलते एमएलसी विजय बहादुर पाठक।

पाठक ने कहा कि जनप्रतिनिधियों की बैठक महीने के अन्त में किसी भी दिन करा ली जाये जिससे जनता की समस्याओं का निस्तारण होता है और उसका लाभ समय से मिल पाता है।

अधिकारियों को निर्देशित किया कि जनप्रतिनिधियों के मोबाइल नम्बर समस्त जिला स्तरीय अधिकारियों अपने-अपने मोबाइल में फीड कर लें जिससे कि कोई दूसरा व्यक्ति उसका दुरूपयोग न कर सके। जनप्रतिनिधियों का किसी भी प्रकार से हनन न होने पाये इस पर विशेष ध्यान दिया जाये। उन्होने समस्त अधिकारियों को निर्देशित करते हुये कहा कि जनप्रतिनिधियों का फोन अवश्य उठायें, यदि किसी कारणवश फोन न उठा पाये तो जब समय मिले जनप्रतिनधियों के मोबाइल नम्बर पर फोन से बात कर लें, इसमें किसी भी प्रकार की शिथिलता एवं लापरवाही न बरती जाये, अन्यथा की स्थिति में सम्बन्धित के विरूद्ध कार्यवाही की जायेगी। उन्होने जिला स्तरीय अधिकारियों से कहा है संसद/विधानसभा/परिषद के सदस्यों तथा प्रशासन के बीच सम्बन्ध, सदस्यों के प्रति शिष्टाचार प्रदर्शन आदि विषयों पर विभिन्न विभागों द्वारा जारी किये गये आदेशों की प्रतियाॅ, जनपद के समस्त विभागाध्यक्षों के पास उपलब्ध है तो जिलाधिकारी ने बताया कि समस्त विभागाध्यक्षों के पास उपलब्ध है, समाज कल्याण अधिकारी ने शासनादेश के सम्बन्ध में विस्तारपूर्वक जानकारी उपलब्ध करायी। समिति ने अधिकारियों से पूछा कि प्रशासनिक/जन प्रतिनिधियों के समन्वय की क्या स्थिति है जिस पर अधिकारियों द्वारा बताया गया कि जनप्रतिनिधियों से विभाग द्वारा नियमित समन्वय स्थापित किया जाता है। उन्होने कहा कि क्या जनपदीय अधिकारियों द्वारा शासन द्वारा जारी शासनादेशों के अनुरूप सदस्यों को समुचित सुविधायें/जानकारियाॅ जनपद में उपलब्ध करायी जाती है तो बताया गया कि शासनादेश के अनुरूप सदस्यों को सुविधायें एवं जानकारियाॅ समय-समय पर उपलब्ध करायी जाती है।

समिति ने पूछा कि क्या जनपद में समस्त विभागाध्यक्षों के पास जन प्रतिनिधियों द्वारा समय-समय पर दिये गये पत्रों को अंकित करने हेतु रजिस्टर/कम्प्यूटर आदि की व्यवस्था है तो मुख्य विकास अधिकारी ने बताया कि जनप्रतिनिधियों द्वारा जो शिकायतें/पत्र प्राप्त होते है उसका नोडल जिला विकास अधिकारी बनाया गया है जो सम्बन्धित विभागों को भेजकर रजिस्टर में अंकन किया जाता है और शिकायतों के निस्तारण से जनप्रतिनिधियों को अवगत कराया जाता है। विशेषाधिकार समिति ने जानकारी ली कि क्या विधान मण्डल के सदस्यों द्वारा जनपदीय अधिकारियों/कर्मचारियों के विरूद्ध किसी कार्यवाही की संस्तुति वर्ष 2022-23 में की गयी थी तो उस पर कृत कार्यवाही से सम्बन्धित सदस्य को अवगत कराया गया जिस पर बताया गया कि वर्ष 2022-23 में विधान मण्डल के सदस्यों द्वारा कोई शिकायत प्राप्त नहीं है। पूछा गया कि जिले के प्रशासनिक एवं विभागीय अधिकारियों तथा जन प्रतिनिधियों से सम्पर्क व उनकी दृष्टि में विधान मण्डल के सदस्यों की स्थिति क्या है तो बताया गया कि अतिसम्मानीय है। समिति ने पूछा कि सदन अथवा उसकी समितियों को जिला स्तर से प्राप्त उत्तर की स्थिति क्या है तो बताया गया कि प्राप्त पत्रों पर नियमानुसार कार्यवाही की जाती है। बैठक में पूछा गया कि क्या विधान मण्डल सदस्यों के प्रति समान रूप से समुचित शिष्टाचार एवं सम्मान प्रदर्शित किया जाता है तो बताया गया कि समान रूप से समुचित शिष्टाचार एवं सम्मान प्रदर्शित किया जाता है। बैठक के अन्त में विशोषाधिकार समिति के एमएलसी विजय बहादुर पाठक ने अधिकारियों को निर्देशित करते हुये कहा कि जनप्रतिनिधियों के साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार बनाये रखे, उनकी शिकायतों का सर्वोच्च प्राथमिकता पर संज्ञान लेते हुये शासन के निदेशार्नुसार अनुपालन कराना सुनिश्चित करें। बैठक में जिलाधिकारी ने आये हुये उ0प्र0 विधान परिषद के सदस्यों के प्रति आभार प्रकट किया और कहा कि जो भी दिशा निर्देश दिये गये है उसका शत प्रतिशत अनुपालन समस्त अधिकारियों द्वारा सुनिश्चित किया जायेगा। बैठक के उपरान्त विशेषाधिकार समिति के एमएलसी ने अमृत सरोवर हण्डौर व बढ़नी का निरीक्षण किया एवं अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिये तथा अमृत सरोवर स्थल पर वृक्षारोपण भी किया गया। उन्होने अधिकारियों को निर्देशित किया कि अमृत सरोवरों पर अधिक से अधिक वृक्षारोपण किया जाये। इसी प्रकार उनके द्वारा दिव्यांग विद्यालय बढ़नी में वृक्षारोपण भी किया।

अप डाउन ऊंचाहार रायबरेली शटल ट्रेन को कुंडा स्टेशन तक चलाने की मांग

यात्रियों को रायबरेली व प्रयागराज के लिए सुबह 9 बजे के बाद कोई ट्रेन नही

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। प्रयागराज लखनऊ रेलवे ट्रैक पर ऊंचाहार से रायबरेली के लिए अप डाउन करने वाली शटल पैसेंजर ट्रेन 04253 व 04254 को स्थानीय यात्रियों ने ऊंचाहार से परियावां मानिकपुर कुंडा वाया फाफामऊ प्रयागराज तक अप डाउन चलाने की पुरजोर मांग की है।

मालूम हो कि ऊंचाहार से रायबरेली अप डाउन शटल पैसेंजर ट्रेन 04253 व 04254 को परियावां वाया कुंडा होते हुए प्रयागराज स्टेशन तक चला दी जाए तो यात्रियों को ट्रेन की सफर का भरपुर लाभ मिल सके और वही दूसरी तरफ रेल विभाग की आमदनी मे इजाफा होने से इंकार नही कर सकते।परियावां मानिकपुर कुंडा स्टेशन से सुबह 7 बजे के बाद रायबरेली के लिये कोई भी ट्रेन नही है यदि उक्त ट्रेन को ऊंचाहार के आगे कुंडा या प्रयागराज तक चला दिया जाय तो अन्य स्टेशन के यात्रियों के लिए रायबरेली के लिए सीधे ट्रेन मिल जाएगी जिससे रेलवे की आमदनी मे तेजी से इजाफा होने लगेगा। जब कि ऊंचाहार से रायबरेली तक अप डाउन करने वाली उक्त ट्रेन मे भरपुर सवारी नही रहती जिससे रेलवे की टिकट की बिक्री सुचारु रूप से नही हो पाती। यदि ऊंचाहार से कुंडा स्टेशन तक ही उक्त ट्रेन को शटल बनाकर चला दे तो यात्रियों को काफी राहत मिल सकती है चाहे कुंडा स्टेशन के आगे तक न चलाये। इसी तरह रायबरेली से रघुराज सिंह स्टेशन तक चलने वाली शटल पैसेंजर ट्रेन को कुंडा तक बढ़ा कर चला दिया जाय तो क्षेत्र के लोगो को डलमऊ व लालगंज का सफर आसान हो सके जिससे रेलवे की आमदनी बढ़ सके। उक्त दोनो पैसेंजर ट्रेन का संचालन रेल विभाग अपना समय निर्धारित करे कि किस समय चलाया जाय कि यात्रियों को ट्रेन के सफर का आनंद मिल सके। स्थानीय ब्यापारी रोहित अग्रहरि, अनिल अग्रहरि, गोपाल अग्रवाल, विजय कुमार, गनेश, पप्पू, सन्नो शुक्ला, चुन्नी, विकास कुमार, शिवजी, दिनेश तिवारी, सत्यम अग्रवाल, पिंटू चैरसिया, मनोज जायसवाल, ननके पाड़े, संतोष पांडे, बच्चन तिवारी, मो0 तारिक, मोहित मिश्रा आदि लोगो ने कौशाम्बी सांसद विनोद सोनकर का ध्यान इस ओर आक्रस्ट कराते हुए उक्त दोनो पैसेंजर शटल ट्रेन अप डाउन करने वाली को कुण्डा रेलवे स्टेशन तक चलाने की पुरजोर मांग की है।

अधिशासी अधिकारी समेत तीन पर बलात्कार का मुकदमा दर्ज

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। सराय अकिल नगर पंचायत में तैनात रहे अधिशासी अधिकारी लालजी यादव समेत तीन लोगों पर न्यायालय के आदेश पर सराय अकिल कोतवाली पुलिस ने बलात्कार सहित विभिन्न गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया है महिला के साथ बलात्कार की घटना लगभग 3 वर्ष पुरानी है बताया जाता है कि महिला के साथ सुब्बन और राजेश ने बलात्कार किया था जिसकी शिकायत लेकर महिला सराय अकिल कोतवाली जा रही थी रास्ते में महिला को अधिशासी अधिकारी लालजी यादव मिले और उसे लिफ्ट देने के बहाने अपनी कार के अंदर ले लिया और महिला के साथ अधिशासी अधिकारी लालजी यादव ने बलात्कार किया पीड़ित महिला ने मामले की सूचना तत्कालीन कोतवाल सराय अकिल से लेकर पुलिस अफसरों को दी लेकिन मामला नगर पंचायत के

महिला का हाथ पकड़ने वाले अफसर को जेल भेजने वाली पुलिस बलात्कार करने वाले अधिकारी को 3 साल से नहीं कर सकी गिरफ्तार

अफसर से जुड़ा हुआ था इसलिए अधिशासी अधिकारी के विरुद्ध पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर उन्हें गिरफ्तार कर जेल नहीं भेजा महिला न्याय के लिए पुलिस की चौखट पर फरियाद करती रही लेकिन उसकी सुनवाई नहीं हुई जिस पर पीड़ित महिला ने अदालत का दरवाजा खटखटाया अदालत के निर्देश पर सराय अकिल कोतवाली पुलिस ने अधिशासी अधिकारी लालजी यादव सुब्बन राजेश के विरुद्ध बलात्कार सहित बिभिन्न गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया है। घटना को धीरे-धीरे 3 वर्ष बीत गए लेकिन बलात्कार आरोपी अधिकारी की गिरफ्तारी पुलिस नहीं कर सकती अदालत से मुकदमा दर्ज करने के निर्देश के बाद भी पुलिस मामले में आरोपी अधिशासी अधिकारी की गिरफ्तारी नहीं कर सकी है जबकि छोटे-छोटे मामलों में आरोपियों की गिरफ्तारी में पुलिस बड़ी तेजी दिखाती हैं बीते दिनों विकास भवन के एक अफसर पर महिला का हाथ पकड़ने का आरोप लगा था 24 घंटे के अंदर पुलिस ने आरोपी अफसर को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था इस कार्यवाही में पूरे जिले में पुलिस की प्रशंसा हुई थी बताया जाता है कि लालजी यादव इन दिनों चित्रकूट जनपद में तैनात हैं लेकिन पुलिस लालजी यादव सहित अन्य आरोपियों को गिरफ्तार नहीं कर सकी है।

महिला से बलात्कार में सीओ को हुई थी सजा

कौशाम्बी। बहुजन समाज पार्टी की सरकार के कार्यकाल में तत्कालीन मंझनपुर क्षेत्राधिकारी एम देवराज ने एक महिला के साथ बलात्कार किया था मामले में पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर तत्कालीन क्षेत्राधिकारी को गिरफ्तार कर जेल भेजा बलात्कार करने वाले क्षेत्राधिकारी के विरुद्ध विवेचक ने अदालत में आरोपपत्र दाखिल किया अदालत में सुनवाई के दौरान क्षेत्राधिकारी पर बलात्कार का आरोप साबित हुआ और बलात्कार का दोषी पाते हुए तत्कालीन क्षेत्राधिकारी एवं देवराज को अदालत में सजा सुनाई थी।

गांव की समस्या का गांव में ही होगा समाधान

प्रत्येक विकास खण्ड के 02 ग्राम पंचायतों में 07 जुलाई को होगा ग्राम चौपाल का आयोजन

कौशाम्बी। जिलाधिकरी सुजीत कुमार ने बताया कि शासन द्वारा जनसमस्याओं के निराकरण एवं पारदर्शिता को और प्रभावी बनाने के लिए प्रत्येक विकास खण्ड के 02 ग्राम पंचायतां में प्रत्येक शुक्रवार को ह्लग्राम चौपालह्व (गॉव की समस्या, गॉव में समाधान) का आयोजन किये जाने के निर्देश दिये गये है। जिलाधिकारी ने बताया कि आगामी दिनांक 07 जुलाई को विकास खण्ड चायल के ग्राम पंचायत-शेखपुर रसूलपुर एवं फरीदपुर सुलेम में ग्राम चौपाल का आयोजन किया जायेंगा। इसी प्रकार विकास खण्ड नेवादा के ग्राम पंचायत-तिलगोड़ी व कोटिया, विकास खण्ड मूरतगंज के ग्राम पंचायत-समसपुर व बलिहॉवादेह, विकास खण्ड सरसवॉ के ग्राम पंचायत-पूरब सरावॉ व नगेरहा कला, विकास खण्ड मंझनपुर के ग्राम पंचायत-कुआडीह व एडहरा, विकास खण्ड कौशाम्बी के ग्राम पंचायत-बटबन्धुरी व घमसिरा, विकास खण्ड सिराथू के ग्राम पंचायत-अफजलपुरवारी व बड़नपुर घाटमपुर तथा विकास खण्ड कड़ा के ग्राम पंचायत-दौलतपुर कसार एवं बदलेपुर ननसैनी में ग्राम चौपाल का आयोजन किया जायेंगा। ग्राम चौपाल का आयोजन पूर्वान्ह 11 बजे से चौपाल की समाप्ति तक होंगा। सम्बन्धित खण्ड विकास अधिकारियों को ग्राम चौपाल का व्यापक प्रचार-प्रसार कराने के निर्देश दियें गये है तथा ग्राम चौपाल के 05 दिन पूर्व से ही उस ग्राम पंचायत में स्वच्छता/साफ-सफाई अभियान जन सहयोग से चलाया जायेंगा एवं मा0 जनप्रतिनिधियां को भी आमन्त्रित किया जायेंगा। ग्राम चौपाल की शुरूआत ग्राम पंचायत में कराये गये कार्यों के निरीक्षण से होगी एवं विभिन्न योजनाओं का सत्यापन भी किया जायेंगा तथा आयुष्मान कार्ड, किसान सम्मान निधि, प्राकृतिक एवं आर्गेनिक खेती, हर-घर-नल व सुशासन जैसे महत्वपूर्ण विषयां पर चर्चा की जायेंगी। ग्राम चौपाल के आयोजन के एक माह बाद चौपाल में प्रतिभाग करने वाले अधिकारी उसी ग्राम पंचायत में जाकर समस्या के निराकरण पर फीडबैक प्राप्त करेंगे। सम्बन्धित लेखपाल एवं राजस्व निरीक्षक भी चौपाल में उपस्थित रहकर चकमार्ग व सार्वजनिक भूमि आदि की पैमाईश का कार्य भी करेंगे।

न्यूज झरोखा

मुनादी कर अभियुक्त के घर पुलिस ने चस्पा की नोटिस

हर्रायपुर कौशाम्बी। अदालत द्वारा बार-बार गिरफ्तारी वारंट भेजने के बाद भी अभियुक्त फैज पुत्र महफूज उर्फ बचऊ निवासी लोहरा थाना संदीपन घाट अदालत में उपस्थित नहीं हुआ है अदालत द्वारा 17 जून को फिर

गिरफ्तारी वारंट पुलिस को सौंपा गया पुलिस वारंटी अभियुक्त को गिरफ्तार नहीं कर पाई है जिससे अदालत की प्रक्रिया बाधित हो रही है मामले की परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए अदालत ने अभियुक्त फैज के विरुद्ध धारा 82 की कार्यवाही करते हुए आदेश की कॉपी अभियुक्त के घर चस्पा कराए जाने और मुनादी कराए जाने का निर्देश 3 जुलाई को सिविल जज जूनियर डिविजन न्यायिक मजिस्ट्रेट कौशांबी ने विवेचक को दिया है अदालत के निर्देश पर 5 जून को सांदीपन घाट थाना पुलिस ने अभियुक्त के घर अदालत के आदेश की कॉपी चप्पा की और मुनादी करते हुए अभियुक्तों को अदालत में हाजिर होने का निर्देश दिया है

थाना स्तर पर ही समयबद्ध, गुणवत्तापूर्ण निस्तारण करें सुनिश्चित : एसपी

कौशाम्बी। पुलिस अधीक्षक बृजेश कुमार श्रीवास्तव द्वारा प्रतिदिन की भांति पुलिस कार्यालय में जनता दर्शन में जन सुनवाई कर जन सामान्य की समस्याओं को सुना

गया तथा सम्बन्धित को दिये आवश्यक निर्देश। पुलिस अधीक्षक बृजेश कुमार श्रीवास्तव द्वारा पुलिस कार्यालय में जनसुनवाई की गई इस दौरान पुलिस कार्यालय में आने वाले फरियादियों जनसामान्य की समस्याओं को गम्भीरता पूर्वक सुना गया तथा उनकी समस्याओं के समयबद्ध व गुणवत्तापूर्ण निस्तारण के लिए सम्बन्धित को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए जिसमें पुलिस अधीक्षक द्वारा प्राप्त शिकायतों के सम्बन्ध में मौके पर जाकर शिकायतों की तत्काल, निष्पक्ष जांच कर विधिक निस्तारण सुनिश्चित करने हेतु संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया गया तथा शिकायतकर्ता से समय-समय पर जनसामान्य की समस्याओं के निस्तारण के सम्बन्ध में फीडबैक लिये जाने सम्बन्धी आवश्यक दिशा-निर्देश दिये गये इसी क्रम में पुलिस अधीक्षक द्वारा सभी थानों को सचेत किया गया कि जनसुनवाई महिला हेल्पडेस्क को और अधिक प्रभावशाली बनाये ताकि पीड़ित/शिकायतकर्ता को अनावश्यक रुप से अपने थाने से इतनी दूर पुलिस कार्यालय आने की आवश्यकता न हो, साथ ही सभी प्रभारी निरीक्षक थानाध्यक्ष को यह भी निर्देश दिये गये कि जिस समस्या का समाधान थाना स्तर से हो सकता है उनका समाधान थाना स्तर पर ही समयबद्ध, गुणवत्तापूर्ण निस्तारण प्राथमिकता के आधार पर कराना सुनिश्चित करें।

तमंचा एवं कारतूस के साथ किया गिरफ्तार

कौशाम्बी। जनपद में अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में थाना महेवाघाट पुलिस बल द्वारा मुखबिर खास की सूचना पर अभियुक्त राज किशोर पुत्र कौशल किशोर निवासी कुम्हियावा थाना महेवाघाट को अजरौली नहर पुलिया से एक अदद तमंचा 315 बोर व एक अदद जिन्दा कारतूस 315 बोर तथा दो अदद खोखा कारतूस 315 बोर के साथ गिरफ्तार कर गिरफ्तारी व बरामदगी के आधार पर थाना स्थानीय पर मुकदमा पंजीकृत कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है

दो वारण्टी अभियुक्त गिरफ्तार : कौशाम्बी थाना महेवाघाट पुलिस बल वारंटी अभियुक्त दिनेश सिंह पुत्र छेदी सिंह निवासी निगहा थाना महेवाघाट को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है इसी प्रकार थाना संदीपनघाट पुलिस बल द्वारा थाना कोखराज से सम्बन्धित वारंटी अभियुक्त विनोद कुमार पुत्र शेषनारायण तिवारी निवासी हर्रायपुर थाना संदीपनघाट को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

एक जनपद एक उत्पाद प्रशिक्षण एवं टूलकिट योजनान्तर्गत साक्षात्कार आज

कौशाम्बी। एक जनपद एक उत्पाद प्रशिक्षण एवं टूलकिट योजनान्तर्गत ऑनलाइन पोर्टल पर आवेदित अभ्यर्थियों का साक्षात्कार दिनांक 07 जुलाई 2023 को कार्यालय जिला उद्योग प्रोत्साहन तथा उद्यमिता विकास केन्द्र, मंझनपुर कौशाम्बी में पूर्वान्ह 10:30 बजे सम्पन्न होगा। यह जानकारी उपायुक्त उद्योग एस0 सिद्दीकी ने देते हुए बताया है कि ऑनलाइन पोर्टल पर आवेदित समस्त अभ्यर्थी अपने मूल प्रमाण पत्रों के साथ निर्धारित तिथि, समय एवं स्थान पर उपस्थित होकर साक्षात्कार में प्रतिभाग करना सुनिश्चित करें।

घर से किशोरी लापता : कौशांबी। सराय अकिल थाना क्षेत्र के कोटिया गांव निवासी आशा पांडेय पत्नी स्वर्गीय प्रेम नारायण पांडेय की पुत्री प्रिया उर्फ पूजा पांडेय घर से नाराज होकर मंगलवार के दिन सुबह लगभग 9:00 बजे कही लापता हो गई है किशोरी की मां ने किशोरी की खोजबीन की किंतु कोई पता नहीं चल सका किशोरी की मां ने सराय अकिल थाने में किशोरी की गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई है सराय अकिल पुलिस ने गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कर किशोरी की खोजबीन शुरू कर दी है।

औद्योगिक क्षेत्र विकसित किए जाने के उपायुक्त को डीएम ने दिए निर्देश

अखंड भारत संदेश

जिलाधिकारी ने की जिला उद्योग बन्धु समिति की बैठक

कौशाम्बी। जिलाधिकारी सुजीत कुमार द्वारा उदयन सभागार में सम्बन्धित अधिकारियों के साथ जिला उद्योग बन्धु समिति की बैठक की गई। बैठक में जिलाधिकारी ने उद्यमियों की समस्याओं को सुना एवं सम्बन्धित अधिकारियों को शीघ्र निस्तारित करने के निर्देश दियें बैठक में उपायुक्त उद्योग एस0 सिद्दीकी ने बताया कि निवेश मित्र पोर्टल पर कुल 179 प्रकरण प्राप्त हुए है, जिसमें से 25 प्रकरण विभिन्न विभागों के स्तर पर लम्बित है। श्रम विभाग के 01, प्रदूषण नियन्त्रण बोर्ड के-09, खाद्य एवं औषधि विभाग के-02, कृषि विभाग के-11 एवं आबकारी विभाग के-02 सम्मिलित हैं, जिस पर जिलाधिकारी ने सभी सम्बन्धित अधिकारियों को प्राथमिकता के आधार पर गुणवत्तापूर्ण एवं समयान्तर्गत प्रकरण को निस्तारित करने के निर्देश दिये। बैठक में उपायुक्त उद्योग ने बताया कि पीएमईजीपी योजना के तहत 58 लक्ष्य के सापेक्ष 37, एम0वाई0एस0वाई0 योजना के तहत 67 लक्ष्य के सापेक्ष 12 तथा ओडी0ओ0पी0 योजनान्तर्गत 21 लक्ष्य के सापेक्ष 10 आवेदन बैंको द्वारा स्वीकृत हो चुके हैं, जिस पर जिलाधिकारी ने अग्रिम आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित करने के निर्देश दिये बैठक में उपायुक्त उद्योग ने तहसील सिराथू के अन्तर्गत ग्राम सुल्तानपुर ख्वाजा कड़क में अवस्थित भूमि पर औद्योगिक क्षेत्र विकसित किये जाने के लिए अब तक की गई कार्यवाही की जानकारी देते हुए व्यापारियों से अपना उद्यम स्थापित करने के लिए प्रस्ताव प्रस्तुत करने का आग्रह किया। बैठक में बताया गया कि ग्लोवल इन्वेस्टर्स समिट-2023 के तहत रमेश अग्रहरि ने अपने प्रस्तावित प्रोजेक्ट भूमि के ऊपर से जाने वाली विद्युत लाइन को शिफ्ट कराने का अनुरोध किया है, जिस पर अधिशासी अभियंता विद्युत ने बताया कि एक सप्ताह के अन्दर विद्युत लाइन को शिफ्ट कर लिया जायेंगा। बैठक में अरविन्द कुमार केसरवानी ने जनपद में बन रहें राम वनगमन मार्ग पर भूमि चिन्हित कर औद्योगिक क्षेत्र विकसित किये जाने के अनुरोध पर जिलाधिकारी ने उपायुक्त उद्योग को आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित करने के निर्देश दियें इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी (न्यायिक) डॉ0 विश्राम सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारीगण तथा रमेश अग्रहरि प्रवेश केसरवानी सुभाष गुलाटी अरविंद केसरवानी सुधीर। कुमार मुकेश तिवारी प्रमोद साहू पवन कुमार गौरी शंकर विकास गुप्ता धर्मेन्द्र केसरवानी रमन केसरवानी संदीप कुमार सहित अन्य उद्यमी एवं व्यापारीगण उपस्थित रहे।

पीएम आवास की उम्मीद में गिर गया गरीब का कच्चा घर

अखंड भारत संदेश

कौशांबी। मंझनपुर तहसील के सरसावा विकासखंड अंतर्गत ऊनो ग्राम सभा में कच्चे खंडहर घर को पक्के घर में परिवर्तित करने की योजना अधिकारियों और दलालों की साठगाँठ के चलते गरीब कमजोर लोगों को पीएम आवास योजना का लाभ नहीं मिल पा रहा है जिससे जान जोखिम में डालकर गरीब खंडहर नुमा कच्चे घर में रह रहे हैं उनो गांव के नागेंद्र उर्फ रिंकू पुत्र सिद्ध नारायण परिवार सहित कच्चे घर में रहते थे बारिश के चलते उनका घर जमींदोज हो गया है जिससे उनके सामने रहने की दिक्कतें आ गई हैं लेकिन उसके बाद भी उन्हें एक पीएम आवास नहीं मिल सका है घर की महिला नीतू देवी ने पीएम आवास पाने के लिए आवेदन किया कई वर्षों से पीएम आवास के लिए अधिकारियों के कार्यालयों का महिला चक्कर काटती रही लेकिन प्रधानमंत्री आवास उन्हें नहीं मिल सका है इसी बीच बारिश के चलते नागेंद्र उर्फ रिंकू का कच्चा घर जमींदोज हो गया है बड़ी-बड़ी लकड़ी की धन्नी गिर गई है ईश्वर का शुक्र था कि परिवार में कोई बड़ी अनहोनी घटना नहीं हुई वरना बड़ी अनहोनी घटना हो जाती आखिर पीएम आवास योजना कच्चे खंडहर नुमा घरवालों को नहीं मिल रहा है तो किसके लिए योजना प्रधानमंत्री ने चलाई है इस सवाल पर अधिकारी निरुत्तर

योजना में धांधली को रोक कर दोषियों को दंडित किए जाने की जरूरत

हो जाते हैं लेकिन उसके बाद भी प्रधानमंत्री आवास में हो रही धांधली में सुधार करने और धांधली में लिप्त अधिकारियों पर कार्रवाई करने की ओर शासन प्रशासन ध्यान नहीं दे रहा है जिससे गरीब एक आदत पीएम आवास के लिए तरस रहे हैं पात्रों को पीएम आवास दिए जाने की जरूरत है और योजना में धांधली को रोक कर दोषियों को दंडित किए जाने की जरूरत है लेकिन उसके बाद भी पहल होती नहीं दिख रही है।

आटा पीसने के विवाद में दबंगों ने किया मारपीट

कौशांबी। सराय अकिल थाना क्षेत्र के मल्हीपुर गांव निवासी राधेश्याम निषाद पुत्र रामचंद्र निषाद घर पर अपने रोजगार के लिए आटा चक्की लगाए हुए हैं मंगलवार के दिन गांव के ही आशीष पुत्र लौटन, मुकेश पुत्र जगाधरी, रामू पुत्र राम नरेश और राजू पुत्र अमृतलाल समय लगभग 10:00 बजे आए और कहा कि हमारा आटा पीस दो पीड़ित ने कहा की देर हो गई है कल आकर आटा पिसवा लेना इस पर दबंग भड़क उठे और गाली गलौज करने लगे गाली गलौज का विरोध भुक्तभोगी ने किया तो दबंगों ने लाठी डंडों से पीड़ित पर प्रहार कर दिया जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया आसपास रहे लोगों ने बीच बचाव किया तो बीच बचाव करने वालों को भी मार पीट किया गया जिससे उन्हें भी कुछ छोटे आई हैं मौके से दबंग फरार हो गए भुक्तभोगी ने सराय अकिल थाना पुलिस को लिखित तहरीर दी तहरीर पाकर सराय अकिल पुलिस ने आरोपियों के विरुद्ध मुकदमा दर्ज कर लिया है।

कैम्प लगाकर अधिक से अधिक श्रमिकों का पंजीयन कराएं : डीएम

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। जिलाधिकारी सुजीत कुमार द्वारा उदयन सभागार में जनपद स्तरीय व्यापार बन्धु समिति की बैठक की गई। बैठक में जिलाधिकारी ने व्यापारियों की समस्याओं को सुना एवं सम्बन्धित अधिकारियों को प्राथमिकता के आधार पर तत्काल निस्तारित करने के निर्देश दिये। बैठक में बताया गया कि थाना पश्चिम शरीरा के बगल में लगे ट्रान्सफार्मर में पूर्व में कई बार आग लग गई है, जिससे व्यापारियों व राहगीरों को जान-माल का खतरा बना रहता है, जिस पर जिलाधिकारी ने अधिशासी अभियंता, विद्युत एवं ई0ओ0 से अब तक की गई कार्यवाही की जानकारी प्राप्त करते हुए शीघ्र ही ट्रान्सफार्मर शिफ्ट कराने के निर्देश दियें बैठक में देवीगंज व्यापार मण्डल द्वारा अवगत कराया गया कि मुख्य बाजार में 400 केवीए का ट्रान्सफार्मर है, जिससे हमेशा दुर्घटना की आशंका बनी रहती है, जिस पर अधिशासी अभियंता, विद्युत ने बताया कि शीघ्र ही ट्रान्सफार्मर शिफ्ट कर दिया जायेंगा। जिलाधिकारी ने ई0ओ0 सिराथू को सिराथू बाजार में

डीएम ने कहा एसडीएम सीओ के साथ बैठक कर व्यापारियों की समस्या का निस्तारण करें अधिषासी अधिकारी

मंझनपुर रोड पर सरकारी गेस्ट हाउस के बाहर बनकर तैयार शेष 04 दुकानों को भी नियमानुसार शीघ्र ही आवंटित कराने के निर्देश दियें। उन्होंने सभी ई0ओ0 को प्रत्येक माह व्यापारियों की सम्बन्धित उप जिलाधिकारी एवं क्षेत्राधिकारी के साथ बैठक कराकर स्थानीय समस्याओं को निस्तारित कराने के निर्देश दियें। उन्होंने श्रम प्रवर्तन अधिकारी को कैम्प लगाकर अधिक से अधिक श्रमिकों को पंजीयन कराने के निर्देश दियें। इसके साथ ही उन्होंने व्यापारियों से भी अपने श्रमिकों का पंजीयन कराने के निर्देश दियें, जिससे श्रमिक शासन द्वारा संचालित जनकल्याणकारी योजनाओं से लाभान्वित हों सकें। बैठक में व्यापार मण्डल सिराथू द्वारा नगर पंचायत सिराथू में सरकारी जमीन पर खेल का मैदान बनाये जाने के मॉग पर बताया गया कि खेल के मैदान की पैमाइस किया जा चुका है तथा आवश्यक कार्यवाही की जा रहीं है। बैठक में व्यापारियों द्वारा देवीगंज बाजार में पावर हाउस रोड के बीचो-बीच स्थित पेड़ को हटाये जाने के अनुरोध पर जिलाधिकारी ने ई0ओ0 को प्रभागीय वनाधिकारी से सम्पर्क कर कार्यवाही करने के निर्देश दियें। बैठक में जिला व्यापार मण्डल सिराथू द्वारा सिराथू में रामलीला मैदान की चाहारदीवारी बनाये जाने में आ रहीं समस्याओं का निराकरण कर चाहारदीवारी बनाये जाने की मॉग पर जिलाधिकारी ने ई0ओ0 को अधिशासी अभियंता, लो0नि0वि0 से समन्वय कर आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित करने के निर्देश दियें इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी (न्यायिक) डॉ0 विश्राम सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारीगण तथा रमेश अग्रहरि अरविंद केसरवानी सुभाष गुलाटी सुधीर कुमार प्रमोद साहू पवन कुमार गौरी शंकर विकास गुप्ता, धर्मेन्द्र केसरवानी रमन केसरवानी संदीप कुमार सहित अन्य उद्यमी एवं व्यापारीगण उपस्थित रहे।

चोर को पकड़कर ग्रामीणों ने पुलिस को सौंपा लेकिन चोर की पुलिस कर रही आवाभगत

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। अपराधियों के साथ गलबहियां डालें सैनी कोतवाली पुलिस अब पीड़ित पर अत्याचार कर न्याय की आवाज दबाने में लगी है जिससे एक बार फिर खाकी कलंकित होती दिख रही है सैनी कोतवाली क्षेत्र के मलाक निन्दूरा गांव में 12 दिन पूर्व बुरी नियत से आधी रात को अटल शिव शंकर आदि के घर मे घुसे अपराधी प्रवृति के चोर को ग्रामीणों ने मौके पर पकड़ लिया जिससे घर में बड़ी वारदात होने से बच गई आधी रात को पकड़े गए चोर की ग्रामीणों ने धुनाई कर मामले की सूचना पुलिस को दे दी मौके पर 112 डायल पुलिस भी पहुंची सैनी कोतवाली और डायल 112 की पुलिस आरोपी को अपने साथ लेकर सैनी कोतवाली आई लेकिन सैनी कोतवाली पुलिस चोर से यह पूछने की हिम्मत नहीं कर सकी कि वह दूसरे के घर में आधी रात को क्यों कूदा था दूसरे के घर में आधी रात को घुसा चोर भी इस बात का जवाब देने को तैयार नहीं है रातों-रात आरोपी से सैनी कोतवाली

सैनी कोतवाली पुलिस की माने तो अब अपराधियों की करनी पड़ेगी पूजा बन्दन

पुलिस की सेटिंग हो गई बताया जाता है कि चोरी की नियत से आधी रात में घर में घुसे चोर का भाई इलाके का चर्चित गांजा तस्कर है और इसका एक साथी गांजा तस्करी के आरोप में उड़ीसा की जेल में बंद भी है जिससे गांजा तस्कर और पुलिस के बीच संबंधों में कोई सवाल खड़े नहीं किए जा सकते गांजा तस्करों से संबंध रखने वाली सैनी कोतवाली पुलिस ने मामले में आधी रात को दूसरे के घर में घुसे चोर को संरक्षण देना शुरू कर दिया और चोर के भाई की तहरीर पर पीड़ितों के ऊपर गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया आरोपी के भाई ने अपने तहरीर में स्वीकार किया है कि आधी रात को उसका भाई दिलावरपुर की सड़क पर घूम रहा था सवाल उठता है कि उसका भाई आधी रात को पीड़ितों के गांव कैसे पहुंच गया जबकि उनका गांव रास्ते में नहीं है। अब सवाल उठता है कि आधी रात को दूसरे के घर में अपराधिक घटनाओं को अंजाम देने की नीयत से घुसे चोर की क्या ग्रामीण आवाभगत करेंगे अपराधिक घटनाओं को अंजाम देने की नीयत से घुसे चोर की ग्रामीण क्या पूजा अर्चन करेंगे जिस तरह से इस प्रकरण में सैनी कोतवाली पुलिस का बर्ताव है उससे तो यही लगता है कि अपराधिक घटनाओं को अंजाम देने वाले के चरणों में गिरकर अब ग्रामीणों को उसकी बंदना करनी पड़ेगी आधी रात को दूसरे घर में घुसे चोर की धुनाई करना कौन सा अपराध हो गया है आईपीसी की धारा और भारतीय संविधान में भी अपनी सुरक्षा का अधिकार आम जनता को मिला हुआ है लेकिन सैनी पुलिस भारतीय संविधान और आईपीसी की धारा को मानने को तैयार नही है आधी रात को घर मे घुसे चोर की धुनाई कर ग्रामीणों ने कौन सा गुनाह कर दिया है सैनी कोतवाली पुलिस की इस कार्यवाही के बाद चारों तरफ पुलिस की किरकिरी हो रही है चोर की तहरीर पर मुकदमा दर्ज करके सैनी कोतवाल पुलिस वर्दी कलंकित कर रही है पुलिस वर्दी कलंकित कर आधी रात को घुसे चोर की तहरीर पर पीड़ितों के नाम मुकदमा लिख कर चोर को शरण देने वाली सैनी कोतवाली पुलिस के कारनामों को आला अधिकारियों को गंभीरता से लेते हुए इस मामले की निष्पक्ष जांच कराते हुए पीड़ितों को न्याय देना और आरोपी चोर और झूठी तहरीर देने वाले उसके भाई पर मुकदमा दर्ज कर उसकी गिरफ्तारी करा कर जेल भेजने की कार्रवाई की जरूरत है लेकिन नही हुई चोर को संरक्षण देने वाले सैनी कोतवाल के कारनामे पर अभी तक विभागीय जांच नहीं शुरू हुई है पुलिस वर्दी कलंकित कर झूठा मुकदमा लिख कर अपराधी को संरक्षण देने वाले सैनी कोतवाल को निलंबित कर पूरे प्रकरण की विभागीय जांच शुरू करा कर कोतवाल को दंडित किए जाने की मांग पीड़ित परिवार ने उत्तर प्रदेश की योगी सरकार से की है।

कृष्णा गार्डन मनौरी के मालिकानो ने मजदूरों के हड़पे तीन लाख रुपए

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। कृष्णा गार्डन मनौरी मैं काम करने वाले मजदूरों की लगभग तीन लाख रुपए मजदूरी गार्डन के मालिकानों ने हड़प लिया है जिससे मजदूरों के सामने 2 जून रोटी के लाले पड़ गए हैं मजदूर जब मजदूरी मांगने कृष्णा गार्डन के मालिक के पास गए तो उन्हें जान से मारने की नियत से गार्डन के मालिकानो ने दौड़ा लिया है दबंग गार्डन मालिकानों के आतंक से पीड़ित मजदूर जान बचाकर भाग आए हैं और मामले की सूचना पुलिस को दिया है। जानकारी के मुताबिक करारी थाना क्षेत्र के अडहरा गांव का राजेश कुमार पुत्र अशर्फी लाल आठ माह पहले पंकज सिंह पटेल के कृष्णा गार्डन मनौरी में लेबर ले जा कर काम किया था ! जिसकी मजदूरी शेष दो लाख चौरानवे हजार रुपए बाकी रह गयी राजेश कुमार बुधवार के दिन पंकज सिंह से अपनी बकाया मजदूरी मांगने गया तो पंकज सिंह ने मजदूर को गाली गलौज देते हुए जान से मारने की धमकी देते हुए देख लेने की बात कह कर मारने के लिए दौड़ा लिया! दबंग के आतंक अत्याचार से परेशान मजदूर अपने रकम को छोड़कर मौके से जान बचाकर भाग आया और पीड़ित ने पिपरी थाना के चायल चौकी में प्रार्थना पत्र देकर न्याय की गुहार लगाई है चायल चौकी पुलिस जांच में जुट गई है ! पुलिस सूत्रों की मानें तो गार्डन मालिक पर पुलिस मुकदमा दर्ज कर जल्द ही उसकी गिरफ्तारी कर सकती है जिससे गार्डन मालिक की मुसीबत बढ़ सकती है।

नाबालिग किशोरी को बहला फुसलाकर भगा ले गये

कौशांबी। कोखराज थाना के पुलिस चौकी सिधिया भरवारी क्षेत्र के बालक मऊ गाँव की 15 वर्षीय एक दलित किशोरी को गाँव के ही कुछ कतिपय लोग बहला फुसलाकर 5 जुलाई को भगा ले गये जिसकी सूचना किशोरी की माँ द्वारा स्थानीय पुलिस चौकी को दी गयी पुलिस रिपोर्ट दर्ज कर किशोरी की तलाश में लग गयी है किशोरी की माँ का रो रो कर बुरा हाल हैं माँ ने आशंका जाहिर किया हैं कि कहीं मेरी पुत्री को बेंच य मार न दे खबर लिखें जाने तक किशोरी का कहीं कोई पता नहीं चल सका है।

पुरानी रंजिश को लेकर महिला की पिटाई : कौशांबी सराय अकिल थाना क्षेत्र के पठन पुरवा गांव निवासी सरोज देवी पत्नी रामदयाल पाल को पुरानी रंजिशें के कारण मंगलवार के दिन दोपहर लगभग 3:00 बजे गांव की प्रतिभा तिवारी पत्नी योगेन्द्र तिवारी गाली-गलौज करने लगी भुकतभोगी ने गाली गलौज का जब विरोध किया तो दबंग महिला ने सरोज देवी की डंडों से पिटाई कर दी आसपास रहे लोगों ने महिला की किसी तरह से जान बचाई महिला ने सराय अकिल थाने में लिखित तहरीर दी लिखित तहरीर पाकर पुलिस ने दबंग महिला के विरुद्ध मुकदमा दर्ज कर लिया है

वांछित अभियुक्त गिरफ्तार : कौशाम्बी जनपद में जपनद में अपराध एवं अपराधियों के विरूद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में थाना मझनपुर पुलिस बल द्वारा वांछित अभियुक्त नीरज जायसवाल पुत्र स्व इन्द्र नारायण जायसवाल निवासी पिण्डरा सहाबनपुर थाना करारी को कचहरी पुलिया साई बाबा मन्दिर के पास से गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

संपादकीय

पेयजल और स्वच्छता बड़ी चुनौतियां हैं

वायु है तो प्राण हैं, स्वच्छता है तो स्वास्थ्य है, जल है तो जीवन है, नदियां हैं तो संस्कृति है। यदि ये बातें सत्य हैं तो फिर भी हम अनजान क्यों बने हुए हैं? जीवन से खिलवाड़ क्यों कर रहे हैं? 142 करोड़ का आंकड़ा पार कर भारत अब विश्व का सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश बन गया है। क्या जनसंख्या में इस प्रकार की लगातार बढ़ोतरी चिंता का कारण नहीं है? पेयजल,स्वच्छता,शिक्षा,चिकित्सा,आवास, यातायात के साधन,सुरक्षा आदि मूलभूत आवश्यकताएं हैं। संविधान प्रत्येक नागरिक को मूलभूत सुविधाओं के साथ सम्मान के जीवन का अधिकार देता है। क्या आज वर्ष 2023 तक भी सभी को ये मूलभूत आवश्यकताएं उपलब्ध हैं? स्वच्छ पेयजल, स्वच्छता एवं चिकित्सा के अभाव में प्रतिवर्ष लाखों लोगों की मौत हो जाती है। वर्ष 2019 में जारी पेयजल शुद्धता रिपोर्ट के आंकड़े चिंताजनक हैं। वहां बताया गया है कि भारत के विभिन्न राज्यों की कुल ग्रामीण बस्तियों में से 55,511 ग्रामीण बस्तियों के लोग खराब गुणवत्ता का पानी पीने के लिए मजबूर हैं। पेयजल में आयरन, खारापन, आर्सेनिक, फ्लोराइड एवं नाइट्रेट जैसे घातक रसायन मिल रहे हैं। वर्ष 2019 का ही एक समाचार बताता है कि 80 फीसद ग्रामीण भारत में नल से जल नहीं है। बड़ी चुनौती यह है कि नदियां, कुएं, तालाब, ट्यूबेल आदि प्रमुख जल स्त्रोत गंभीर प्रदूषण का शिकार हो रहे हैं। नदियां मर रही हैं, भूजल स्तर घट रहा है। जहां जल अच्छी मात्रा में उपलब्ध है वहां इसके प्रयोग को लेकर लापरवाही साफ देखी जा सकती है। अनेक स्थानों पर टूटी हुई पानी की पाइप लाइन से बड़ी मात्रा में पेयजल व्यर्थ बहता रहता है। गर्मी के दिनों में जैसे-जैसे तापमान बढ़ता है वैसे वैसे पेयजल के लिए हाहाकार आरंभ हो जाता है। ऐसे में बढ़ती जनसंख्या को स्वच्छ जल कहां से मिलेगा? हाल ही में अंतरराष्ट्रीय स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने भारत सरकार के जल जीवन मिशन को लेकर अपने अध्ययन में यह स्पष्ट किया कि यह मिशन दुनिया के लिए एक मिसाल बन रहा है। अध्ययन से स्पष्ट हुआ है कि यदि सभी लोगों तक स्वच्छ जल पहुंचता है तो प्रतिवर्ष लगभग 101 अरब डॉलर की बचत होगी और प्रतिवर्ष डायरिया जैसी बीमारियों से लगभग 4 लाख लोगों का जीवन भी बच सकेगा। यह मिशन महिलाओं के लिए वरदान है, इससे उनके प्रतिदिन 6.66 करोड़ घंटे समय की बचत होगी। सरकारी आंकड़ों के अनुसार जल जीवन मिशन से अब तक 62 फीसद ग्रामीण घरों में नल से जल की आपूर्ति की व्यवस्था हो चुकी है। ध्यातव्य है कि भारत सरकार ने जुलाई 2019 में जल जीवन मिशन की शुरुआत की थी,जिसके सुखद परिणाम आ रहे हैं। विचारणीय है कि पिछले कुछ वर्षों में न केवल भारत अपितु वैश्विक स्तर पर जल की खपत में बढ़ोतरी के कारण जल संकट और विमर्श केंद्र में आया है। संयुक्त राष्ट्र ने 22 मार्च को विश्व जल दिवस घोषित किया है। विश्व जागरूकता एवं प्रयासों के लिए इस बार का थीम है - स्वयं में वह बदलाव लाएं जो बदलाव आप दुनिया में देखना चाहते हैं। संभवत यह जल के विषय में दुनिया की सोच में बदलाव लाने का काम करेगा। आंकड़ों के अनुसार विश्व की लगभग 7.90 अरब आबादी में से लगभग 2 अरब लोगों के पास पीने का साफ पानी उपलब्ध नहीं है और 2050 तक दुनियाभर में पानी की मांग 55% तक बढ़ोतरी का अनुमान है। स्पष्ट है पेयजल एक बड़ी चुनौती है।

स्वच्छता स्वास्थ्य का पर्याय है। गंदगी बढना अथवा स्वच्छता न होना मानवीय प्रकृति में विकृति का द्योतक है। आंकड़ों के अनुसार विश्व की 3.6 अरब आबादी के पास स्वच्छता की पर्याप्त व्यवस्था नहीं है। इसी प्रकार घरों से निकलने वाले 44 फीसद अपशिष्ट जल के लिए शोधन की भी उचित व्यवस्था नहीं है। भारत में जैसे-जैसे जनसंख्या वृद्धि हो रही है वैसे-वैसे स्वच्छता एक बड़ी चुनौती बन रही है। महानगरों में कूड़े के ढेर सहज ही देखे जा सकते हैं। परतंत्र भारत में लियोनेल कार्टिस ने भारत के गांवों का वर्णन करते हुए उन्हें घूरे के ढेर कहा है। क्या आज स्वतंत्रता के सात दशक बाद भी भारत के अनेक गांव ऐसे ही नहीं है? भारत की अनेक प्रमुख नदियां अशोधित अपशिष्ट के कारण गंदी हो रही हैं। फैक्ट्रियों और घरों का कचरा खुले में व नदियों के किनारे सहज ही देखा जा सकता है। भारत के लोग विदेश में जाने पर वहां की स्वच्छता और कानून के कड़े प्रावधानों की बात करते हैं किंतु भारत में ऐसे कानून और दंड का न होना अथवा लचीलापन भी इस गंदगी फैलाने की प्रवृत्ति को बढ़ा रहा है। बढ़ती जनसंख्या के साथ-साथ कचरा निस्तारण भी एक बड़ी चुनौती है। अस्पतालों,फैक्ट्रियों व घरों से निकलने वाला कचरा भी बहुत कम मात्रा में निस्तारित हो पाता है। कहीं उपकरणों की कमी है तो कहीं मानसिकता की। आज भी नियोजित नगरों और अनियोजित बस्तियों में स्वच्छता की समुचित व्यवस्था नहीं है। सकारात्मक है कि पिछले कुछ वर्षों में शासन- प्रशासन एवं जनभागीदारी से देश का बड़ा हिस्सा खुले में शौच से मुक्त हुआ है, स्वच्छता के प्रति लोगों में जागरूकता बढ़ी है, कचरा प्रबंधन के क्षेत्र में स्टार्टअप बढे हैं किंतु क्या चुनौतियां समाप्त हो गई ? क्या राजधानी दिल्ली में कूड़े के पहाड़ गंदगी व विभिन्न प्रकार के प्रदूषण के प्रमाण नहीं है ?

आज समय की मांग है कि हमें स्वच्छता को स्वभाव बनाना पड़ेगा, जल संरक्षण-संवर्धन हेतु प्रतिबद्ध होना पड़ेगा। जल, प्रकृति-पर्यावरण एवं स्वच्छता से खिलवाड़ करने वालों के लिए कठोर दंड का प्रावधान करना होगा। हमें समझना होगा कि स्वच्छ पेयजल, स्वच्छ वायु एवं स्वच्छ वातावरण जीवन की अनिवार्यता है। भारतीय जीवन में विभिन्न पर्व- उत्सव अपने आसपास की स्वच्छता, जल स्त्रोतों एवं प्रकृति-पर्यावरण की स्वच्छता एवं संरक्षण का संदेश देते हैं। आज पेयजल और स्वच्छता एक बड़ी चुनौती है। ध्यान रहे हमारी सजगता और निरंतर प्रयास ही हमें इन चुनौतियों से निकालकर सुनहरे भविष्य का मार्ग दिखा सकते हैं।

नशे को उखाड़ फेंकना होगा !

सुनील कुमार महला

यह बहुत ही दुखद है कि आज हमारी युवा पीढ़ी नशे की लत में लगातार घुलती चली जा रही है। लहू की जगह आज युवाओं की रगों में ड्रग्स या अन्य नशे दौड़ रहे हैं और इस बात की पुष्टि अखबारों और मीडिया की खबरों से होती है। हम आए दिन अखबारों में शराब, नशीली दवाएं, गांजा, चिट्टा, अफीम पकड़े जाने की खबरें पढ़ते हैं। आज के समय में, हमारे देश में शराब, सिगरेट, तंबाकू(जर्दा, खैनी) का सेवन आजकल बहुत आम हो गया है लेकिन इसके अलावा भी लोग अलग अलग तरह के नशे करते हैं जिनमे शराब, अफीम, चरस, गांजा (भांग), हेरोइन व कोकेन जैसे घातक नशीले पदार्थ शामिल हैं। कुछ लोग तो विभिन्न दवाइयों का इस्तेमाल भी नशे के रूप में करते हैं। यहां तक कि लोग खांसी के सिरप और कुछ निद्राकारक गोलियों का इस्तेमाल नशे के रूप में करते हैं। कोई पेट्रोल सूंघकर नशा करता है, कोई थिनर सूंघ कर तो कोई सिलोचन से नशा करता है, तो कोई आयोडेक्स तक को नशे के रूप में इस्तेमाल कर रहे हैं। बहुत बार नशे के सेवन से होने वाली मौतों की खबरें भी हम पढ़ते ही है। युवा वर्ग यह सोचता है कि नशे से उसकी टेंशन, अवसाद दूर हो जाएगा। बुरी संगत के असर से कोई भी युवा आज आसानी से नशे के चंगुल में फंस जाता है और उसको नशे की लत लग जाती है ।नशे की लत में फंसने के बाद वह चाहकर भी इस बुरी लत को नहीं छोड़ पाता है। नशे की लत के अनेक कारण हो सकते हैं, जिनमें क्रमशः जेनेटिक्स, फैमिली हिस्ट्री, पर्यावरणीय और मनोवैज्ञानिक कारण, मानसिक विकार जैसे अवसाद, तनाव, जीवन में किन्हीं दर्दनाक घटनाओं का घटित हो जाना, स्कूल या कालेज में दोस्तों व सहपाठियों की कमी, अकेलापन आदि प्रमुख कारण हैं। कई बार घर से दूर रहने के कारण भी युवा पीढ़ी नशे की गिरफ्त में आ जाती है। खाली दिमाग शैतान का घर होता है, इसलिए व्यस्तता बहुत जरूरी है। वास्तव में,नशे की लत का लगना किसी बीमारी से कम नहीं है। यदि नशे की लत व्यक्ति लग जाए तो उसका दिमाग सही तरीके से कार्य करने में असमर्थ हो जाता है। दूसरे शब्दों में कहें तो,नशे की लत एक क्रॉनिक है, जो बारझबार लौटने वाली बीमारी है। इससे दिमाग में लंबे समय तक चलने वाले कैमिकल बदलाव होते हैं, जो नशे की लत को छूटने नहीं देते। आज अनेक स्थानों पर विभिन्न ड्रग्स माफिया, ड्रग्स रैकेट सक्रिय हैं। उनको सिर्फ और सिर्फ अपने लाभ से मतलब है। वे देश की युवा पीढ़ी को अपने फायदे के लिए नशे की गर्त में धकेल रहे हैं। हालांकि प्रशासन व सरकार ऐसे लोगों के खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई करता है लेकिन ऐसे लोग साम-दाम-दंड-भेद अपनाकर या रसूखदार व्यक्तियों, बेईमान नेताओं की मिलीभगत से पुलिस की गिरफ्त से आसानी से छूट जाते हैं। बहुत दुखद और संवेदनशील है कि आज मादक पदार्थ देश की नई पीढ़ी को लगातार चाट रहे हैं। ड्रग्स के सेवन व इससे जुड़े आपराधिक मामले बहुत ही भयावह हैं ।नशे की लत से निजात पाने का बेहतरीन विकल्प है खुद को हमें हमेशा मोटीवेट व सकारात्मक रखना चाहिए और अच्छी संगत में रहना चाहिए और बुरी संगत वाले लोगों से स्वयं को दूर रखना चाहिए।

शिक्षा का प्रसार बहुत ही जरूरी व आवश्यक है क्योंकि शिक्षा प्राप्त करके हम सही मार्ग पर चल सकते हैं और समाज में व्याप्त बुराईयों के खिलाफ कदम उठा सकते हैं। हमें तनाव व अवसाद से निपटने के लिए स्वस्थ तरीकों को सीखने, सिखलाने की आज बहुत जरूरी है, क्यों कि आज की जिंदगी भागमभाग और दौड़-धूप भरी जिंदगी है, जहां पल पल परेशानियां हैं, दिक्कतें हैं लेकिन हमें यह समझने की जरूरत है कि जीवन कभी भी फूलों की सेज नहीं होता है। जीवन में सुख और दुख का संगम है। यहां कभी धूप है तो कभी छांव है। हमें जीवन में संघर्ष करना सीखना चाहिए और परेशानियों से कभी भी विचलित नहीं होना चाहिए। हमें अपने परिवार के साथ घनिष्ठ और अच्छे संबंध रखने चाहिए और इस बात पर गहनता से चिन्तन मनन करना चाहिए कि नशा जीवन को बर्बाद ही करता है। नशे से स्वास्थ्य तो खराब होता ही है, बहुत बार बड़ी बीमारियां घेर सकती हैं। नशे से धन की बबार्दी होती है और आदमी कहीं का भी नहीं रहता ।

समाज नशे करने वाले लोगों को घृणित नजरों से देखता है। नशे के कारण ही आज समाज में क्राइम की घटनाओं में अभूतपूर्व बढ़ोत्तरी हो रही है। चोरी की घटनाओं को भी नशे के कारण बल मिलता है।आज नशे के कारण जो कुछ रोजाना हो रहा है, उससे यह बात आसानी से समझी जा सकती है कि स्थिति कितनी खतरनाक है।आज हमें स्वस्थ जीवनशैली को विकसित करने की जरूरत है, हमें चाहिए कि हम अच्छे दोस्त चुनें। सकारात्मक रहें, ईश्वर में विश्वास रखते हुए हमेशा आगे बढ़ें। आदर्श लोगों की जीवनियों को हमें पढ़ना चाहिए कि किस प्रकार उन्होंने अपने जीवन में संघर्ष करते हुए सफलता की ऊंचाइयों को छुआ है। एक आंकड़े के अनुसार आज देश के 29 फीसदी से अधिक लोग नशे की गिरफ्त में हैं। दो तीन साल पहले एक प्रतिष्ठित हिंदी दैनिक में यह खबर आई थी कि दुनिया में नशे का कारोबार लगभग तीस लाख करोड़ रुपए का है और देश की बीस प्रतिशत आबादी नशे की गिरफ्त में है। हमारे देश में तो फिल्मी हस्तियां तक नशे के कारण सुर्खियों में रहीं हैं। हमारे युवा फिल्मी हस्तियों को अपना रोल माडल मान बैठते हैं और उनका अनुसरण करते हैं,यह बहुत ही गलत है। यहां यह भी जानकारी देना चाहूंगा कि नेशनल ड्रग डिपेंडेंट ट्रीटमेंट (एनडीडीटी), एम्स की वर्ष 2019 की रिपोर्ट बताती है कि अकेले भारत में ही लगभग 16 करोड़ लोग शराब का नशा करते हैं। इसमें बड़ी संख्या महिलाओं की भी है ।रिपोर्ट के अनुसार लगभग 1.5 करोड़ महिलाएं देश में शराब,अफीम और कैनबिस का सेवन करती हैं।

रिपोर्ट के आंकड़े बताते हैं कि देश की लगभग 20 प्रतिशत आबादी (10-75 वर्ष के बीच की) विभिन्न प्रकार के नशे की चपेट में है। युवा पीढ़ी किसी भी देश का असली भविष्य होते हैं और जब युवा पीढ़ी ही नशे की गर्त में होगी तो यह देश व समाज के लिए एक बड़ा खतरा है। आज नशामुक्ति अभियान के तहत हर गांव, हर शहर, हर गली, हर कूचे, हर सडक, हर स्कूल, हर कॉलेज में यहां तक कि विभिन्न सरकारी कार्यालयों तक में भी नशा मुक्ति के नारे बुलंद किए जा रहे हैं, बावजूद इसके भी आज हमारा समाज नशायुक्त होता जा रहा है। हालांकि पिछले कुछ समय से ड्रग्स का कारोबार करने वालों पर एनसीबी की सख्त कार्रवाई भी हुई है। हम यह बात कह सकते हैं कि ज्यों ज्यों मर्ज की दवा हम कर रहे हैं, त्यों त्यों मर्ज बढ़ता ही जा रहा है। आज युवा वर्ग ही नहीं बल्कि अब छोटे बच्चे भी इसकी जद में हैं। ड्रग्स का जहर स्कूलों और कालेजों में पढ़ रहे युवाओं की रगो में आज पहुंच रहा है। जानकारी देना चाहूंगा कि दुनियाभर में नशे की वजह से तकरीबन दो लाख मौतें हर साल होती हैं और भारत में पिछले कुछ ही सालों में ही ड्रग्स का बाजार 455 फीसदी तक बढ़ गया, जोकि चिंतित करने वाला आंकड़ा है। यह बहुत ही संवेदनशील और महत्वपूर्ण है कि तमाम पाबंदियों के बावजूद भारत डार्कनेट पर बिक रहे मादक पदार्थों की आपूर्ति के लिए दक्षिण एशिया में सबसे ज्यादा सूचीबद्ध किए जाने वाले देशों में से एक है ।लोगों पर नशे की बढ़ती गिरफ्त और इसके दुष्परिणामों को देखते हुए भारत में भी राष्ट्रीय स्तर पर लोगों को जागरूक करने के प्रयास किए जा रहे हैं। कई कानून भी बनाए गए हैं, इसके बावजूद भी इस पर अमल नहीं हो पाता, यह वास्तव में विडंबना ही कही जा सकती है। वास्तव में, जब नशे से आत्महत्या, हत्या, चोरी व क्राइम की घटनाएं आम होने लगे तो हमें यह समझ लेना चाहिए कि हमारा समाज, प्रांत व राष्ट्र खतरे में हैं। निःसंदेह सरकार और कानून ड्रग्स के विरुद्ध लगातार प्रयासरत और सक्रिय हैं, लेकिन यहां माता-पिता, अध्यापकों और कुल मिला कर समाज का दायित्व अत्यंत ही महत्वपूर्ण हो जाता है।

जेलों में बढ़ती आत्महत्याएं चिंताजनक

डॉ. कन्हैया त्रिपाठी

हिंदुस्तान में अपराध की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ रही है। अपराध के स्वरूप बदल रहे हैं और अपराध की संभावनाएं भी बढ़ रही हैं। खासकर, जब अपराधी टेक्नोक्रेट हो गए हैं और ई-सुविधाओं के सहारे अपराध में अपनी जगह तलाश रहे हैं। अब आलम यह है कि अपराध के माध्यम से वे सभी नियम कानून को धता बता रहे हैं। भारत के संविधान, नैतिकता की अनेकों धाराएँ और मूल्य उनके लिए कोई मायने नहीं रखते। भारत सरकार के नेशनल क्राइम ब्यूरो की रिपोर्ट देखकर ऐसा लगता है कि भारत में आने वाले समय में जेलों की संख्या और कैदियों की संख्या में व्यापक पैमाने पर बढ़ोतरी होने वाली है। हाल के कुछ वर्षों में तो अपराधियों के लिए जेलें अब पनाहगृह भी बनती जा रही हैं, सबसे बड़ी समस्या यह उभरकर सामने आई है। कैदियों की स्थिति पर राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग कई बार चिंता जाहिर कर चुका है। गृह मंत्रालय की ओर से प्रिजन स्टैटिस्टिक्स इंडिया 2021 नामक एक रिपोर्ट प्रकाशित हुई थी जिसमें यह बताया गया था कि 2016-2021 के बीच जेलों में बंदियों की संख्या में 9.5 प्रतिशत की कमी आई है। विचाराधीन कैदियों की संख्या में 45.8 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। रिपोर्ट में यह भी उल्लेख था कि चार में से तीन कैदी विचाराधीन हैं। इसमें उल्लेख था कि दिसंबर 2021 तक लगभग 80 प्रतिशत कैदियों को एक वर्ष तक की अवधि के लिए जेलों में बंद रखा गया जबकि 2021 में रिहा किए गए 95 प्रतिशत विचाराधीन कैदियों को अदालतों ने जमानत दे दी थी और अदालत द्वारा बरी किए जाने पर केवल 1.6 प्रतिशत को रिहा किया गया। हाल ही में, न्यायमूर्ति श्री अरुण मिश्रा की अध्यक्षता में राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग ने न्यायिक हिरासत में कैदियों द्वारा जानबूझकर खुद को नुकसान पहुंचाने और आत्महत्या के प्रयासों को कम करने के लिए केंद्र, राज्यों और केंद्र-शासित प्रदेश प्रशासन को एक परामर्श पत्र-एड्वाइजरी जारी किया। आयोग के अनुसार, अधिकांश कैदियों की अप्राकृतिक मौतें आत्महत्या के कारण होती हैं। इसलिए, इन आत्महत्याओं को रोकने के लिए, उनके मानसिक स्वस्थ्य को समझने की आवश्यकता है। आयोग ने चेताया है कि बैरकों के साथ-साथ शौचालयों को, जहां सबसे अधिक आत्महत्याएं होती हैं, उन वस्तुओं से मुक्त रखा जाना चाहिए, जिनका उपयोग फांसी के लिए किया जाता है। ऐसे जगहों को लोहे की छड़ें, ग्रिल्स, पंखे, हुक या इसी तरह की अन्य वस्तुएं न रखी जाएँ क्योंकि इसी से कैदी आत्महत्या करने में सफल होते हैं। आयोग ने एड्वाइजरी जारी कर कैदियों के जीवन बचाने पर बल दिया है। आयोग ने यह भी कहा है कि अवसाद की वजह से ऐसे प्रकरण सामने आते हैं, इसलिए कैदी से उसके परिवार के सदस्यों की भेंट और उनके साथ टेलीफोनिक माध्यम से संपर्क को प्रोत्साहित करना भी कैदियों को बचाने के लिए आवश्यक कदम हो सकता है।

यद्यपि आयोग के महासचिव के माध्यम से सभी राज्यों के मुख्य सचिवों और केंद्र शासित प्रदेशों के प्रशासकों को यह पत्र गया है जिसमें यह कहा गया है कि तीन महीने के भीतर आयोग द्वारा जारी एड्वाइजरी पर की गई सिफारिशों के कार्यान्वयन और की गई कार्रवाई रिपोर्ट आयोग को भेजी जाए। लेकिन, इसके क्रियान्वयन की उम्मीद कर रहा आयोग सरकार की सक्रियता पर कोई सकारात्मक परणाम पा सकता है, यह बात गले नहीं उतरती। खैर, एड्वाइजरी में केंद्र, राज्यों और केंद्रशासित प्रदेश प्रशासनों द्वारा कार्रवाई के लिए कई क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए भी कहा गया है, जो आयोग की अपनी संवेदनशील होने का प्रमाण है। इनमें रिक्त पदों को भरना, कर्मचारियों की संख्या बढ़ाना, जेल कर्मचारियों और कैदियों को प्रशिक्षण देना, जेल में कैदियों के प्रवेश के समय उनके मानसिक स्वास्थ्य की जांच करना, जोखिम वाले कैदियों का पर्यवेक्षण और निगरानी, कैदियों के बीच नशे की समस्या के पर ध्यान देना, प्रासंगिक वैधानिक प्रावधान के अनुपालन, जेल हाउसकीपिंग, आगंतुक प्रणाली को सुदृढ़ करना, जेल और उसके वातावरण में सुधार करना शामिल हैं। राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग की सक्रिय पहल का यदि अक्षरशः पालन किया गया तो निश्चित ही एक सुव्यवस्थित स्थिति बन सकती है लेकिन भारत देश की यह सबसे बड़ी समस्या है कि यहाँ अमल में लाने वाला तंत्र इतना गया गुजरा बन चुका है कि कोई भी सकारात्मक परिणाम सामने नहीं आता। अधिकांश कारागारों के भीतर का माहौल तनावपूर्ण बन चुका है और जेल के भीतर जेल की स्थिति बहुत खतरनाक और पीड़ादायी हो चुकी है। पुराने कैदियों द्वारा नए कैदियों के ऊपर होने वाले जुर्म फिल्मी सीन में जो दिखाये जाते हैं वैसे ही नहीं होते अपितु कभी-कभी उससे भी विभत्स हो जाते हैं। दूसरी तरफ, जेलों में शौचालयों का बड़े पैमाने पर अभाव है। जेलों में सफाई का अभाव है। खंडहर में तब्दील होती इमारतें रखरखाव के अभाव में अस्त-व्यस्त हैं। ये सब भी आत्महत्या के लिए बनने वाले जोखिम में शामिल हैं। आयोग ने जो सुझाव दिया है कि कैदियों की चादरों और कंबलों की नियमित जांच और निगरानी की जाए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि इनका उपयोग आत्महत्या का प्रयास करने के लिए रस्सियाँ आदि बनाने में न किया जाए, इस पर यदि सरकार और कारागार प्रशासन अमल न करे तो इसमें आयोग का तो कोई दोष नहीं है। सीसीटीवी लगाने, सभी कैदियों की प्रारंभिक स्वास्थ्य जांच, मानसिक स्वास्थ्य जांच की भी सिफारिश की गई है, तो इसे सरकार को मुस्तैद होकर काम करने की जरूरत है, आयोग स्वयं काम करने तो जाएगा नहीं।

आयोग चाहता है कि कैदियों के लिए समय-समय पर पुनश्चर्या पाठ्यक्रमों-रिफ्रेशर कोर्स के साथ जेल कर्मचारियों के बुनियादी प्रशिक्षण में मानसिक स्वास्थ्य साक्षरता पर ध्यान दिया जाए। जोखिम वाले कैदियों को आवश्यक आश्वासन, परामर्श और मानसिक सहायता देने के लिए उनके परिवार के सदस्यों से संपर्क और नशामुक्ति विशेषज्ञों के नियमित दौरों से नशे की समस्या से निपटने के उपाय किए जाने चाहिए तो इसके पीछे उसकी मंशा स्पष्ट है कि कैदी मनोविकार से निकलकर आत्मसंयम से जीवन जी सकें। यह इसलिए आवश्यक है क्योंकि कैदी का जीवन बहुत ही नीरसता, असंयम और अवसाद की ओर बढ़ जाता है। इसको रोकने के लिए निःसन्देह कैदियों को जीवन-कौशल-आधारित शिक्षा और योग, खेल, शिल्प, नाटक, संगीत, नृत्य जैसी गतिविधियाँ, गतिविधियाँ प्रदान हो तो अपनी ऊर्जा को सकारात्मक रूप से प्रसारित कर सकेंगे और कुशल कैदियों को उद्यमिता के लिए सरकारी योजनाओं से जोड़ा जाए तो उनमें स्वबोध और आत्मनिर्भरता तथा उद्यमिता में उनके दिमाग का खपत होगा। आयोग कि मंशा बहुत ही उत्कृष्ट लगती है और उसने अपनी जिम्मेदारी को ठीक-ठीक सही समय पर निभाया है, ऐसा कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी लेकिन बात वहीं पर आकर अटकती है कि क्या केंद्र सरकार, संघ शासित प्रदेश और राज्य सरकारें इसके लिए अपनी इच्छाशक्ति को उसी मजबूती के साथ उनके हित में लगाने के लिए आगे आएंगी। अब तक कैदियों ने आत्महत्याएं कीं, उसके लिए तो कुछ नहीं किया जा सकता लेकिन अब कोई कैदी आत्महत्या का शिकार न हो, इस पर तो ध्यान देना ही होगा। मौलिक अधिकारों की रक्षा करने के साथ ही उनके कल्याण, सामाजिक, शैक्षणिक और सांस्कृतिक विकास की व्यवस्था की जिम्मेदारी राज्य की होती है। महिला कैदियों को विशेष रूप से ध्यान देने की बात अगर आयोग करता तो और भी उसकी संवेदनशीलता उभरकर सामने आती लेकिन फिर भी जिस प्रकार हाल के समय में कैदियों ने आत्महत्या की और उस पर नेशनल ह्यूमन राइट्स कमीशन इनिशिएटिव लिया है वह कबीले तारीफ है। आवश्यकता इस बात की है की इसे उतने ही गहरे तरीके से सरकार भी अपने तंत्र के माध्यम से अमल में लाए और कैदियों के जीवन सुरक्षा के लिए कार्य करे। इससे भी जरूरी यह है की कोर्ट जिन कैदियों के लंबित मामले है उसे शीघ्रता से निपटाए। भारत की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के उस पहल को हमें नहीं भूलना चाहिए जिनके बारे में वह पिछले वर्ष गहरी संवेदना व्यक्त कर आग्रह की थीं कि न्यायालयों में कैदियों के लंबित मामलों को निपटाने के प्रयास तेज करने चाहिए। कैदियों की आत्महत्या से उठे सवाल हमारे ध्यान इस ओर खींच रहे हैं कि कहीं न कहीं शीघ्र वादों के निपटारे न होने से भी संभव है ऐसी घटनाएँ घट रही हों।

लेखक भारत गणराज्य के महामहिम राष्ट्रपति जी के विशेष कार्य अधिकारी-ओएसडी रह चुके हैं। आप अहिंसा आयोग और अहिंसक सभ्यता के

नेताजी ने ही सर्वप्रथम महात्मा गांधीजी को राष्ट्रपिता कहा था

के. विक्रम राव

करीब आठ दशक हुये। आज ही के दिन (6 जुलाई 1944) स्वतंत्र बर्मा की राजधानी रंगून (अब यांगून) से प्रसारित अपने उद्बोधन में नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने महात्मा गांधी को राष्ट्रपिता कहकर संबोधित किया था। तब दो माह पूर्व ही (14 अप्रैल 1944) आजाद हिंद फौज ने मोइरंग (मणिपुर) को ब्रिटिश साम्राज्यवाद से मुक्त करा लिया था। कर्नल शौकत अली मलिक उस विजयी टुकड़ी के कमांडर थे। उन्हें तमगाये-सरदारे-जंग से नवाजा गया था। उनके साथ तब थे माइरेंबम कोइरेंग सिंह जो इंफाल में मणिपुर के प्रथम मुख्यमंत्री (1963) बने थे। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी से थे। करीब बीस बरस बाद लखनऊ की एक जनसभा में जनसंघ नेता अटल बिहारी वाजपेई ने गाल फुलाते, लटें झटकते, तालु लचकाते कहा था : पुत्र कभी भी पिता नहीं हो सकता। सुभाष बोस की भावना को नकार दिया था। इस युवा कान्यकुब्ज विप्र को याद नहीं रहा कि शतपथ ब्राह्मण के अनुसार ऋषि कण्व की आश्रमवासिनी, शकुंत पक्षियों से पालित, मेनकापुत्री शकुंतला और गंधर्व पद्धति से पाणिग्रहण किए पौरव नृप दुष्यंत के शिशु भरत पर ही यह पूरा राष्ट्र भारत नामित हुआ था। भले ही उनका राज केवल मेरठ जनपद के हस्तिनापुर में स्थित था। (विष्णु पुराण : खंड 2, पृष्ठ 31)। अटल जी के अत्यंत प्रिय नेता जवाहरलाल नेहरू ने भी बापू की हत्या की रात (30 जनवरी 1948) ऑल इंडिया रेडियो से अपने शोकपूरित भाषण में महात्माजी को राष्ट्रपिता कहा था।

जब यह प्रथम प्रधानमंत्री 15 अगस्त 1947 को लाल किले पर स्वतंत्र भारत का तिरंगा परचम फहरा रहे थे तो उसके ठीक चार वर्ष पूर्व ही (29 दिसम्बर 1943) अण्डमान द्वीप की राजधानी पोर्टब्लेयर में बोस राष्ट्रीय तिरंगा लहरा चुके थे। इतिहास में भारतभूमि का यह प्रथम आजाद भूभाग था। मगर नेताजी बोस पर जवाहरलाल नेहरू का नजरिया 15 जनवरी 1946 के दिन जगजाहिर हो गया था। उसी कालखण्ड में जवाहरलाल नेहरु अलमोड़ा कारागार (दूसरी दफा कैद) से रिहा होकर समीपस्थ रानीखेत नगर (बरास्ते नैनीताल) में जनसभा को संबोधित कर रहे थे। नैनीताल–स्थित इतिहाकार प्रोफेसर शेखर पाठक के अनुसार कांग्रेस–सोशलिस्ट पार्टी के पुरोधा तथा विधायक रहे स्व. पंडित मदनमोहन उपाध्यायजी का परिवार रानीखेत में नेहरु के मेजबान होते थे। वहां इस कांग्रेसी नेता के उद्गार थे : "अगर मैं जेल के बाहर होता तो राइफल लेकर आजाद हिन्द फौज के सैनिकों का अंडमान द्वीप में मुकाबला करता।" यह उद्धहरण है सुने हुये उस भाषण के अंश का जो काकोरी काण्ड के अभियुक्त रामकृष्ण खत्री की आत्मकथा "शहीदों के साये में" हैं। इसके पहले संस्करण (अनन्य प्रकाशन, नयी दिल्ली) में है, फिर अगले जनवरी 1968 में विश्वभारती प्रकाशन में भी है। पद्मश्री स्वाधीनता सेनानी स्व. बचनेश त्रिपाठी भी इसका उल्लेख कर चुके हैं।

अर्थात यह तो साबित हो ही जाता है कि त्रिपुरी (मार्च 1939) कांग्रेस सम्मेलन में सुभाष बाबू के साथ उपजे वैमनस्यभाव की कटुता दस वर्ष बाद भी नेहरु ने पाल रखी थी। नेहरु के आदर्श उदार भाव के इस तथ्य को सर्वविदित करने की दरकार है।

इसी स्वाधीन भारत में इस क्रांतिकारी जननायक सुभाषचन्द्र बोस की आत्मा को आजादी के अमृत महोत्सव (साढ़े सात दशक) तक प्रतीक्षा करनी पड़ी थी, उचित सम्मान पाने हेतु। नेताजी सदैव उपेक्षित रहे।

भारत रत्न जीवित और स्वर्गीय सबको मिलते हैं मगर नेताजी को आज तक नही प्रदान किया गया। बल्कि नेहरू के राज में तो नेताजी की स्मृति को ही मिटाने का प्रयास मुसलसल होता रहा। भला हो नरेंद्र दामोदरदास मोदी का कि नयी दिल्ली के हृदय स्थल इंडिया गेट पर नेताजी की प्रतिमा लग गई। यहां से अपने विशाल भारत साम्राज्य को निहारती रहती थी ब्रिटिश बादशाह जॉर्ज पंचम की पथरीली मूर्ति, जो हटा दी गई। रिक्त पटल पर उनकी 125वीं जयंती (23 मार्च 2022) पर अंग्रेज राज के महानतम सशस्त्र बागी सुभाषचन्द्र बोस की प्रतिमा स्थापित हुई। शायद बागी बोस फिर अपने हक से वंचित रह जाते क्योंकि वहां इंदिरा गांधी की प्रतिमा लगाने की बेसब्र योजना रची गयी थी। स्वाधीन भारत के दो दशकों (नेहरु राज के 17 वर्ष मिलाकर) में यह गुलामी का प्रतीक सम्राट का बुत राजधानी को "सुशोभित" करता रहा। मानों गोरे तब तक दिल्ली में राज करते ही रहे !

जनता जनार्दन की उम्मीद

किशन भावनानी गोंदिया

वैश्विक स्तरपर प्रौद्योगिकी के विस्तारित युग में डिजिटल तंत्र का तेजी से विस्तार हो गया है जिसमें करीब करीब पूरी मानवीय स्मरण शक्ति से कई गुना अधिक संरक्षण तंत्र की व्यवस्था की है, कई एप्स पर्सनल डाटा जानकारियों सहित आम मनुष्य के जीवन कीपूरीमहत्वपूर्ण जानकारियां स्टोरेज रहती है, जिसे अब महत्वपूर्ण सुरक्षा और जवाबदेही प्रोटेक्शन की जरूरत है, जिसके लिए देश में कोई कठोर कानून नहीं है हालांकि इलेक्ट्रॉनिक सुरक्षा के कुछ कानून नियमावली है जिसमें पीडीपीबी विधेयक2023 जैसी गहराई व विस्तारित नियमावली नहीं है इसलिए मानसून सत्र में पीडीपीबी विधेयक 2023 को पास करना समय की मांग है। हालांकि इस विधेयक को 2019 में भी सरकार ने पेश किया था फिर 2022 में भी पेश किया था जो 3 अगस्त 2022 को जेपीसी से प्राप्त प्रस्तावित 81 संशोधनों और 12 सिफारिशों के चलते सप्लीमेंट्री बिजनेस लिस्ट में वापस लिया गया था। अब फिर मानसून सत्र 2023 में पेश करने की संभावना है इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, वर्तमान प्रौद्योगिकी विस्तार युद्ध में पीडीटीबी विधेयक 2023 को कानून में परिवर्तन करना समय की मांग है। साथियों बात अगर हम पीडीपीबी 2023 की करें तो केंद्रीय कैबिनेट ने बुधवार को डेटा प्रोटेक्शन से जुड़े मसौदा विधेयक को मंजूरी दे दी है। विधेयक को संसद के आगामी मानसून सत्र में पेश किया जाएगा। जानकारी के मुताबिक, बिल के दायरे में सभी व्यक्तिगत डेटा को लाया जाएगा। ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों डेटा इस बिल के दायरे में आएंगे। इसके अलावा डेटा प्रोटेक्शन बोर्ड के गठन की सिफारिश की गई है, ताकि इसे संसद के आगामी मानसून सत्र में पेश किया जा सके। विधेयक में नियमों के उल्लंघन की प्रत्येक घटना के लिए संस्थाओं पर 250 करोड़ रुपये तक का जुमार्ना लगाने का प्रस्ताव है। इसे आगामी सत्र में संसद में पेश किया जाएगा।' संसद का मानसून सत्र 20 जुलाई से 11 अगस्त तक चलेगा। प्रस्तावित कानून के तहत सरकारी इकाइयों को भी नहीं मिलेगी पूर्ण छूट सूत्र के अनुसार विधेयक में पिछले मसौदे के लगभग सभी प्रावधान शामिल हैं जो इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकीमंत्रालय की ओर से परामर्श के लिए जारी किए गए थे।

सावन माह में शराब पीकर न चलायें वाहन

अखंड भारत संदेश
चित्रकूट। जिला मुख्यालय के ट्रैफिक चैराहा में सीओ यातायात शीतला प्रसाद पाण्डेय की अगुवाई में जिले के ट्रांसपोर्टर/वाहन स्वामी के साथ सावन मास के मद्देनजर बैठक की गई।
गुरुवार को ट्रांसपोर्टर व वाहन स्वामियों की बैठक में उन्हें समझाया गया कि अपने वाहनों के चालकों को निर्धारित गति सीमा में वाहन चलाने तथा नोइंट्री का पालन करने की हिदायत दी। शराब पीकर गाड़ी न चलाने व अपने वाहनों पर हाई सिक्योरिटी नंबर प्लेट लगाने की बाबत सख्त हिदायत दी गई।
बैठक में आए सभी लोगों से यातायात को सुगम बनाने की बाबत सुझाव मांगे गए। सभी वाहन चालकों/ स्वामियों ने सावन माह में निर्धारित गति सीमा में वाहन चलाने के प्रति भरोसा दिया। बैठक में यातायात प्रभारी मनोज कुमार समेत दरोगा धर्मेश त्रिपाठी आदि मौजूद रहे।

गांजा तस्कर को दो वर्ष की सजा , दस हजार रुपये का जुमार्ना

अखंड भारत संदेश
चित्रकूट। न्यायालय में लम्बित वादों में पैरवीकर अपराधियों को सजा दिलाने को पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृन्दा शुक्ला के निदेर्शों के अनुपालन में कर्वी कोतवाल गुलाब त्रिपाठी व पैरोकार अमरेन्द्र प्रताप सिंह ने पैरवीकर गांजा तस्कर को सजा दिलाई है।
गुरुवार को सहायक जिला शासकीय अधिवक्ता सनद कुमार मिश्रा की प्रभावी बहस के नतीजतन न्यायालय अपर जनपद न्यायधीश/एफटीसी (न्यू) सुशील कुमार वर्मा ने कोतवाली कर्वी में दर्ज एनडीपीएस एक्ट के आरोपी अशोक कुमार पटेल पुत्र सुखराम पटेल निवासी सेहरा मजरा पहरा कोतवाली कर्वी को दो वर्ष के कारावास तथा दस हजार रुपए के जुमार्ना से दंडित किया।
उल्लेखनीय है कि 28 अक्टूबर 2010 को दरोगा आशोक धर पाण्डेय की टीम ने अशोक कुमार पटेल के कब्जे से ढाई किलो गांजा समेत गिरफ्तार किया था। उसके खिलाफ कोतवाली कर्वी में एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज किया था। दरोगा अशोक कुमार सिंह ने विवेचना पूरी करने के बाद आरोपी के खिलाफ न्यायालय में आरोप पत्र दाखिल किया था।

दो के कब्जे से 30 लीटर महुआ शराब बरामद

अखंड भारत संदेश
चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृंदा शुक्ला के निर्देश पर अवैध शराब निर्माण एवं बिक्री की रोकथाम को जारी अभियान में पुलिस ने दो लोगों के कब्जे से 30 लीटर महुआ शराब बरामद की है।
गुरुवार को राजापुर थाने के दरोगा काशीनाथ यादव की टीम ने दयाशंकर निषाद पुत्र शिवनारायण निषाद निवासी बाबागंज के कब्जे से 25 लीटर महुआ शराब एवं शराब बनाने के उपकरण समेत गिरफ्तार किया। उसके खिलाफ थाने में आबकारी अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया। टीम में दरोगा काशीनाथ यादव, सिपाही उमेंद्र त्रिपाठी, विजय पटेल, मनोज कुमार, हेमंत आर्य, महिला सिपाही प्रियंका सिंह शामिल रहे।
इसी क्रम में पहाडी थाने के दरोगा त्रिलोकीनाथ मिश्रा की टीम ने वीरु पुत्र अल्ताफ निवासी हकीमपुर खटवा थाना खखरेरु जिला फतेहपुर के कब्जे से पांच लीटर महुआ शराब समेत गिरफ्तार किया। उसके खिलाफ थाने में आबकारी अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया। टीम में दरोगा त्रिलोकी नाथ मिश्रा व सिपाही दिलीप कुमार शामिल रहे।

15 से 30 सितम्बर तक मछलियों का शिकार प्रतिबंधित

अखंड भारत संदेश
चित्रकूट। जिला मजिस्ट्रेट अभिषेक आनन्द ने उप्र मत्स्य अधिनियम 1948 के तहत शासनादेश के निर्गत नियम को तत्काल प्रभाव से लागू करने के निर्देश हैं। यह आदेश सभी तालाबों/जलाशयों/नदियों की जल धाराओं पर प्रभावी होंगे।
गुरुवार को जिला मजिस्ट्रेट अभिषेक आनन्द ने कहा कि जिले की सीमाओं में जो व्यक्तिगत अथवा धार्मिक घोषित नहीं किये गये हो। कोई भी व्यक्ति विस्फोटक पदार्थ अथवा कृषि रक्षा एवं व्यापारिक कार्य में प्रयुक्त होने वाले विषैले रसायन से मछली नहीं मारेगा। न मारने का प्रयास करेगा। कोई भी व्यक्ति 15 जुलाई से 30 सितंबर तक मत्स्य जीरा तथा मत्स्य अगुलिका न मारेगा न बेंचेगा। एक जुलाई से 31 अगस्त तक प्रजननशील मछलियों का शिकार नहीं करेगा। जब तक उनके पास मत्स्य विभाग से निर्गत वैध लाइसेंस न हो। यह प्रतिबंध शासनादेश के तहत लागू किया गया है।
कोई भी व्यक्ति निर्देशित क्षेत्र के प्राकृतिक बहाव को रोकने में अवरोध नहीं करेगा। न ही ऐसा करके मत्स्य जीरा अंगुलिका मछली पकड़ेगा अथवा नष्ट करेगा और न ही पकड़ने अथवा नष्ट करने का प्रयास करेगा। इन आदेशों का उल्लंघन करने पर मत्स्य जीरा एवं मछली जब्त कर ली जायेगी। आदेशों का उल्लंघन करने पर दंडनीय कार्यवाही की जायेगी।

वारंटी को पुलिस ने दबोचा

अखंड भारत संदेश
चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृंदा शुक्ला के निर्देश पर वांछित/वारंटी की गिरफ्तारी को जारी अभियान में प्रभारी निरीक्षक सरधुवा दीपेन्द्र सिंह की अगुवाई में दरोगा सत्यमपति त्रिपाठी की टीम ने एनडीपीएस एक्ट के वारंटी उदयभान सिंह पुत्र मोतीलाल निवासी चिल्लीमल को गिरफ्तार किया। टीम में दरोगा सत्यमपति त्रिपाठी, सिपाही अमित सिंह शामिल रहे।

खुद के घर में कब्जा दिलाने की एसपी से लगाई गुहार

अखंड भारत संदेश
चित्रकूट। कोतवाली कर्वी के लक्ष्मणपुरी स्वराज ट्रैक्टर एजेंसी के पीछे रहने वाले बृजेश कुमार सिंह पुत्र अवधेश नारायण सिंह ने पुलिस अधीक्षक को लिखे पत्र में कहा है कि उसके घर में छोटे भाई राजेश कुमार सिंह ने कब्जाकर उसे घर से निकाल दिया है। एसडीएम कर्वी ने पुलिस को उसे मकान में कब्जा दिलाने के आदेश भी दिये हैं। इस पर भी उसे कोई राहत नहीं मिली।
गुरुवार को पीडित बृजेश कुमार सिंह ने पुलिस अधीक्षक को लिखे पत्र में कहा कि भाई राजेश कुमार सिंह व उसकी पत्नी सरिता सिंह उसका हिस्सा हडपने की गरज से 23 मार्च 2020 को अपरान्ह डेढ बजे उसकी पत्नी के सिर पर हमला किया था। इस मामले की रिपोर्ट कोतवाली कर्वी में दर्ज हैं। जानमाल की सुरक्षा से वह किराये के घर में रहने लगा था। 17 जुलाई को समाधान दिवस में एसडीएम ने उसे घर में रहने को पुलिस को आदेश दिया था। पीडित ने कहा कि भाई राजेश कुमार सिंह व साला अतुल सिंह तथा रवि शुक्ला निवासी खुटहा उसे धमकी दे रहे हैं कि घर के पास आये तो जान से मार देंगे। पीडित लगातार उच्चाधिकारियों को पत्र लिखता आ रहा है।
पीडित को आज तक घर में कब्जा नहीं मिला। भाई का साला अतुल सिंह मप्र के टीकमगढ का निवासी है। उस पर हत्या व अपहरण के मामले दर्ज हैं। पीडित ने पुलिस अधीक्षक से मांग की है कि उपरोक्त के खिलाफ कानूनी कार्यवाही कर उसे घर में कब्जा दिलाया जाये। उस पर कोई घटना होती है तो भाई राजेश सिंह व उसके पुत्र इन्द्रजीत सिंह को जिम्मेदार माना जाये।

मुखर्जी की जयंती पर कृतित्व एवं व्यक्तित्व की भाजपा ने की चर्चा

अखंड भारत संदेश
चित्रकूट। भाजपा जिला कार्यालय में डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जयंती जिलाध्यक्ष चन्द्रप्रकाश खरे की अध्यक्षता मे मनाई गई। डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी के चित्र पर माल्यार्पण कर कृतित्व एवं व्यक्तित्व को याद किया। कार्यकताओं ने विचार रखे।
गुरुवार को भाजपा जिलाध्यक्ष चन्द्रप्रकाश खरे ने श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जयंती पर कहा कि मुखर्जी का जन्म 1901 मे संभ्रात परिवार में हुआ था। उनके पिता शिक्षाविद थे। मुखर्जी ने प्रारम्भिक शिक्षा के बाद 22 साल में एमए परीक्षा पास की। उसी वर्ष उनका विवाह सुधा देवी से हुआ। उनके दो पुत्र और दो पुत्रिया हुयी। मुखर्जी ने कर्मक्षेत्र के रुप मे 1939 से राजनीति में भाग लिया। आजीवन इसी मे लगे रहे। आजीवन कांग्रेस की नीतियों का विरोध किया। स्वतंत्र भारत के प्रथम मंत्रिमंडल मे इकलौते गैर कांग्रेसी मंत्री के रुप में शपथ ली। वित्त मंत्रालय का कार्यभार संभाला। कांग्रेस सरकार की गलत नीतियों के कारण 1950 में मंत्रिमंडल से इस्तीफा देकर विपक्ष की भूमिका में काम करते रहे। पूर्व सांसद भैरो प्रसाद मिश्रा ने कहा कि मुखर्जी को एक देश मे दो निशान और दो झंडे स्वीकार नहीं थे। पुरजोर विरोध करते हुए बिना बीजा के 1953 मे

जम्मू में प्रवेश किया। सीमा पर उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। 40 दिन जेल मे रहने के बाद उनकी रहस्यमय ढंग से मौत हो गई। देव त्रिपाठी ने कहा कि भारतीय सस्कृति के नक्षत्र अखिल भारतीय जनसंघ के संस्थापक श्यामा प्रसाद मुखर्जी महान व्यक्तित्व के धनी राजनेता थे।
जयंती के बाद भाजपा जिला महामंत्री आलोक पांडे के स्व पिता राजाराम पांडे को याद करते हुये शोकसभा हुई। कार्यकताओं ने उनके चित्र पर पुष्पाजंलि अर्पित कर आत्मा की शांति को ईश्वर से प्रार्थना की। इस मौके पर राजेश जयसवाल, आलोक पांडे, अश्वनी अवस्थी, अंजू वर्मा, प्रेमलाल बाल्मीकि, विकाश मिश्रा (हीरो), अभिषेक ओझा, रवि गुप्ता, गोलू गर्ग आदि मौजूद रहे।

विद्युत कटौती बन्द होने पर सपा करेगी आन्दोलन

अखंड भारत संदेश
चित्रकूट। सपा जिलाध्यक्ष शिवशंकर सिंह यादव की अगुवाई में सपाइयों ने बिजली कटौती को लेकर जिलाधिकारी से भेंटकर राज्यपाल सम्बोधित ज्ञापन सौंपा।
गुरुवार को सपा जिलाध्यक्ष शिवशंकर सिंह यादव की अगुवाई में राज्यपाल सम्बोधित ज्ञापन जिलाधिकारी को सौंपते हुए कहा कि बिजली व्यवस्था पूरी तरह जिले में चरमराई है। जिलेवासियों को मुश्किल से आठ से दस घंटे बिजली

मिल रही है। धान की जई एवं रोपाई के समय में बिजली आपूर्ति बाधित होना किसानों के लिए परेशानी का विषय है। सपा शासन में जिले को विद्युत कटौती से मुक्त किया गया था। जिलेवासियों को 24 घंटे बिना बाधा के बिजली मिलती थी। उन्होंने मांग किया कि जिले की विद्युत व्यवस्था में सुधार न होने पर 24 घंटे अबाध विद्युत आपूर्ति न होने पर सपा बडा आन्दोलन करने को बाध्य होगी। इस मौके पर सपा नेता नरेन्द्र यादव, मो गुलाब खां, गोपीचन्द्र यादव, शीलू यादव, अभिलाष यादव, राजा यादव, सियाराम गुप्ता, अमर पटेल, सत्यनारायण पटेल, सीताराम कश्यप, सुभाष पटेल आदि शामिल रहे।

ट्रस्ट की 135 कन्याओं ने रखा जया पार्वती व्रतशिव मन्दिरों में

स्व अरविंद मफतलाल एवं सुशीला बहन ने 25 वर्ष पहले कराई थी शुरूआत

अखंड भारत संदेश
चित्रकूट। जया पार्वती व्रत प्रतिवर्ष आषाढ़ मास की शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी के दिन से ये व्रत किया जाता है। जया पार्वती व्रत अथवा विजया पार्वती व्रत भी कहा जाता है। यह व्रत गुजरात, महाराष्ट्र एवं मालवा क्षेत्र का लोकप्रिय पर्व होता है। उल्लेखनीय है कि जया पार्वती व्रत पर्व श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट में लगभग 25 वर्षों से मनाया जा रहा है। इस व्रत को ट्रस्ट की 135 कुंवारी कन्याओं ने पांच दिन तक सच्चे मन और श्रृद्धा के साथ किया है। कन्याओं ने पहले दिन जवारे बोकर भगवान शंकर और माता पार्वती का पूजन कर व्रत का

शुभारंभ किया। पांच दिन तक व्रत करने वाली कन्याएं बिना नमक के फलहारी खाकर रहती हैं। व्रत के अंतिम दिन रात्रि जागरण होता है। जागरण में जिन कन्याओं ने अच्छी प्रस्तुतियां दी, उन्हें ट्रस्टी डॉ बीके जैन व उनकी धर्मपत्नी ऊषा जैन ने पुरस्कृत किया। रात्रि जागरण के अगले दिन व्रत करने वाली कन्याओं और सदगुरू परिवार के सभी सदस्यों ने धूमधाम और गाजे-बाजे से मां मंदाकिनी गंगा में जवारों का विसर्जन किया। विसर्जन बाद सभी व्रत रखने वाली कन्याओं ने पारण किया। अपने सुख समृद्धि व मनचाहे संकल्प की प्राप्ति को भगवान से प्रार्थना किया। इस व्रत को भगवान शंकर को पाने को माता पार्वती ने विधि विधान से किया था। भगवान विष्णु ने लक्ष्मी जी को इस व्रत का रहस्य बताया था। इसीलिए कन्याए भी ये व्रत पूरे विधिविधान से करती हैं। श्री सद्गुरु महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती ऊषा जैन ने बताया कि इस व्रत को ट्रस्ट के अध्यक्ष स्व सेठ अरविंद भाई मफतलाल ने शुरू कराया था, तभी से ये अनवरत जारी है। आगे भी जारी रहेगा।

आकाशीय बिजली-हादसे में चार की मृत्यु से विधायक दुखी

आश्रितों को दिलायेंगे आर्थिक मदद

अखंड भारत संदेश
चित्रकूट। सपा के कर्वी क्षेत्र के विधायक अनिल प्रधान ने आकाशीय बिजली से बहिलपुरवा थाना क्षेत्र के सेमरिया चरणदासी में पूर्व प्रधान नोखेलाल यादव की मां श्रीमती छोट बुईया पत्नी राममूरत की मृत्यु होने पर शव का पोस्टमार्टम करवाकर शव वाहन से शव को अन्तिम संस्कार को घर भिजवाया।
गुरुवार को सपा विधायक अनिल प्रधान ने बहिलपुरवा थाने के रामपुर तरौंहा के वीरेन्द्र राजपूत (22) पुत्र दयाराम की आकाशीय बिजली की चपेट में आने से मृत्यु होने पर शव का पोस्टमार्टम

कराकर शव वाहन से अन्तिम संस्कार को घर भिजवाया। मानिकपुर थाने के ऐंचवारा गांव के गुलाब त्रिपाठी (45) पुत्र रेवतीरमण त्रिपाठी की सड़क हादसे में मृत्यु की सूचना पर पोस्टमार्टम हाउस जाकर घटना की जानकारी ली। विधायक ने शोक जताते हुए शव का पोस्टमार्टम कराकर शव वाहन से घर तक अन्तिम संस्कार को भिजवाया।
सदर विधायक ने ललितपुर जिले के धौरा गांव के थाना जाखलौन तहसील पाली हालमुकाम तिमोलिया टिटिहरा मोड़ भरतकूप के किसान के पुत्र पुन्नूलाल की पानी मे डूबने से मृत्यु होने पर शोक जताया। पोस्टमार्टम हाउस पहुंचकर परिजनों से भेंटकर घटना की जानकारी ली। पोस्टमार्टम करवाकर अन्तिम संस्कार को आर्थिक मदद देकर शव को घर तक भिजवाया। विधायक ने कहा कि सभी पीडित परिवारों को सरकार से आर्थिक मदद दिलाने की पहल करेंगे।

नकली गुटखा फैक्ट्री का भंडाफोड़, एक गिरफ्तार, मशीन समेत आठ लाख की सामग्री बरामद

अखंड भारत संदेश
चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृंदा शुक्ला के निर्देश पर एएसपी चक्रपाणि त्रिपाठी एवं सीओ सिटी हर्ष पाण्डेय की देखरेख में थानाध्यक्ष भरतकूप सूबेदार बिन्द की टीम ने अवैध ढंग से नकली गुटखा फैक्ट्री का भंडाफोड़ कर एक को दबोचा है। मौके से एक मिक्सर/पैकिंग मशीन, भारी मात्रा में नकली गुटखा व नकली रैपर, सुपाड़ी मिला कच्चा मटेरियल आदि सहायक उपकरण बरामद किये हैं।
गुरुवार को अवैध गुटखा फैक्ट्री चलने की सूचना पर पुलिस अधीक्षक ने एएसपी व सीओ सिटी की देखरेख में थानाध्यक्ष भरतकूप

की टीम को ल्योझा गांव में सोमदत्त पाण्डेय के सूने मकान में छापेमारी की। अवैध गुटखा फैक्ट्री चलती मिलने पर संचालक मधूसूदन गुप्ता पुत्र रामवदन निवासी धौरही को पुलिस ने गिरफ्तार किया। मौके से भारी मात्रा में विभिन्न ब्राण्ड के नकली गुटखा रैपर बरामद हुए। प्रतीत होता है कि फैक्ट्री में मिलावटी गुटखा बनाया जा रहा था, जो सेहत के लिए हानिकारक होता है।
पुलिस की छापेमारी के बाद मौके पर जीएसटी एवं खाद्य सुरक्षा टीमों ने नमूना लेकर विधि विज्ञान प्रयोगशाला भेजा। बरामदगी के आधार पर आरोपी के खिलाफ उचित धाराओं में मामला दर्ज किया। मौके से गुटखा बनाने की इलेक्ट्रिक/इलेक्ट्रानिक मशीन, चार रैपर रोल पेपर, एक बोरा नकली गुटखा पैकेट, वेबी- शुद्ध सुपारी व इसी ब्रांड के पांच किलो रैपर, छह बोरा प्रिंस स्वादिष्ट सुपारी नकली गुटखा, एक बोरी सफेद पन्नी के झोले में तीन किलो कटी सुपाड़ी व कच्ची सामग्री बरामद की। बरामद सामग्री की अनुमानित कीमत आठ लाख रुपए आंकी गई है। टीम में थानाध्यक्ष भरतकूप सूबेदार बिन्द, वरिष्ठ दरोगा यदुवीर सिंह, सिपाही अजीजउद्दीन, राकेश कुमार, महिला सिपाही दीपिका सिंह शामिल रहे।

चयनित अभ्यर्थियों को एसपी ने दिये नियुक्ति पत्र

अखंड भारत संदेश
चित्रकूट। निष्पक्ष एवं पारदर्शी भर्ती प्रक्रिया के तहत उप्र पुलिस भर्ती एवं प्रोन्नति बोर्ड से चयनित 217 उपनिरीक्षक (गोपनीय) 587 सहायक उपनिरीक्षक (लिपिक) एवं

344 सहायक उपनिरीक्षक (लेखा) कुल 1148 को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने नियुक्ति पत्र बांटे।
गुरुवार को इसी क्रम में पुलिस कार्यालय स्थित राघव प्रेक्षागार में पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृंदा शुक्ला ने जिले से पुलिस सहायक उपनिरीक्षक (लिपिक) के पद पर कु राधा देवी पुत्री इश्वरचन्द्र निवासी बाबूपुर थाना पहाड़ी एवं पुलिस सहायक उपनिरीक्षक (लेखा) के पद पर त्रिलोक कुमार पुत्र रामबदन निवासी साहबतारा मजरा देवारी थाना सरधुवा को नियुक्त पत्र बांटे।
उन्होंने दोनों चयनित अभ्यर्थियों को बधाई देते हुए मिठाई खिलाकर मुंह मीठा कराया। इस मौके पर प्रतिसार निरीक्षक शिव नारायण, प्रभारी सोशल मीडिया सेल विजय सिंह, प्रभारी परिवार परामर्श केन्द्र श्रीमती रीता सिंह, प्रधान लिपिक अनुज पाण्डेय, लिपिक केशव शुकला, पीआरओ प्रदीप कुमार पाल आदि मौजूद रहे।

कोटे की दुकान/जनसुविधा केन्द्र का जल्द करायें निमार्ण: डीएम, डीएम ने किया भूमि पूजन

अखंड भारत संदेश
चित्रकूट। जिलाधिकारी अभिषेक आनन्द ने कर्वी ब्लाक के अकबरपुर गांव में राशन दुकान एवं जन सुविधा केंद्र के निर्माण का भूमि पूजन किया। उन्होंने तकनीकी सहायक को निर्देश दिए कि इस भवन के निर्माण को लेआउट

करके गांव को दे। प्रधान से कहा कि इस भवन का निर्माण तत्काल शुरू करायें।
गुरुवार को जिलाधिकारी अभिषेक आनन्द ने भूमि पूजन कर कहा कि भवन निर्माण को शासन से दी डिजाइन के अनुसार निर्माण कार्य जल्द करायें। डीसी मनरेगा से कहा कि जिले में सभी विकासखंडों में उचित दर दुकान एवं जन सुविधा केंद्र निर्माण को चयनित गांवों में भूमि का चिन्हांकन कर सभी जगह कार्य शुरू करायें।
इस मौके पर सीडीओ अमृतपाल कौर, डीसी मनरेगा धर्मजीत सिंह, बीडीओ आस्था पांडेय, प्रधान श्रीमती गुड़िया सिंह, सचिव मान सिंह आदि मौजूद रहे।

कोतवाली पुलिस ने गांजा व तमंचे में दो को दबोचा

अखंड भारत संदेश
चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृंदा शुक्ला के निर्देश पर मादक पदार्थों की तस्करी एवं बिक्री की रोकथाम को जारी अभियान में कर्वी कोतवाल गुलाब त्रिपाठी की अगुवाई में दरोगा राधेश्याम सिंह की टीम ने प्रेम सिंह पटेल उर्फ राजा पुत्र जागेश्वर सिंह निवासी नई दुनिया बनकट के कब्जे से 610 ग्राम अवैध गांजा समेत गिरफ्तार किया है। उसके खिलाफ कोतवाली में एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज किया है। टीम में दरोगा राधेश्याम सिंह, सिपाही गोलू भार्गव शामिल रहे।
इसी क्रम में कर्वी कोतवाल गुलाब त्रिपाठी की अगुवाई में दरोगा राकेश कुमार मौर्य की टीम ने सीबू राइन पुत्र मो अतीक निवासी कांशीराम कालोनी लोढ़वारा के कब्जे से एक तमंचा 315 बोर व कारतूस समेत गिरफ्तार किया है। उसके खिलाफ कोतवाली में आर्म्स एक्ट के तहत मामला दर्ज किया है। टीम में दरोगा राकेश कुमार मौर्य, सिपाही मो आरिफ शामिल रहे।

चेयरमैन पंकज ने सीएम से भेंटकर बताई समस्यायें

अखंड भारत संदेश
चित्रकूट। भाजपा जिला उपाध्यक्ष/डिस्ट्रिक्ट कोआपरेटिव बैंक बांदा-चित्रकूट के चेयरमैन पंकज अग्रवाल के चेयरमैन बनने के बाद लखनऊ में सहकारिता की प्रदेश

सहकारी कार्यशाला की पहली बैठक में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को उन्होंने भगवान श्रीराम-सीता की प्रतिमा भेंट की।
गुरुवार को कार्यशाला से लौटने के बाद चेयरमैन पंकज अग्रवाल ने बताया कि पहली बैठक के बाद मुख्यमंत्री से भेंटकर बैंकिंग परिदृश्य में आये बदलाव, नैनो यूरिया/डीएपी, एफपीओ पैक्स, सरकार की सहकारी क्षेत्र की नयी योजनाओं, डाटाबेस, बिजनेस करेस्पांडेन्ट जिले में किये गए अभिनव प्रयोग आदि महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर चर्चा की।
उन्होंने मुख्यमंत्री को जिले की सहकारी बैंको की समस्याओं और कुछ बदलाव की आवश्यकता से अवगत कराया। मुख्यमंत्री ने जल्द ही सभी समस्याओं के समाधान का भरोसा दिया।

विदेश संदेश

दक्षिण अफ्रीका में मजदूरों की बस्ती में विषाक्त गैस फैलने 16 की मौत

जोहान्सबर्ग। दक्षिण अफ्रीका के सबसे बड़ी आबादी वाले शहर जोहान्सबर्ग के बोक्सबर्ग उपनगर की एक मजदूर बस्ती में बुधवार देरशाम जहरीली गैस के रिसाव से 16 लोगों की जान चली गई। हालांकि शुरू में सरकारी प्रसारक एसएबीसी ने 24 लोगों के मरने की सूचना दी थी। कुछ देर बाद प्रांतीय रकार और पुलिस ने सफाई दी कि अब तक 16 लोगों के मौत की पुष्टि हुई है।आपातकालीन सेवा के प्रवक्ता

विलियम नटलडी के अनुसार, यह हादसा एंजेलो स्क्वैटर कैंप के एक यार्ड में नाइट्रेट ऑक्साइड युक्त गैस सिलेंडर में लीकेज की वजह से हुआ। इस यार्ड में मजदूर रहते हैं। इस विषाक्त गैस के तेजी से हवाल में फैलने से पूरी बस्ती में लोग जान बचाकर भागने लगे। लोगों को सांस लेने में दिक्कत होने लगी। दम घुटने लगा। अब तक महिलाओं और बच्चों सहित कम से कम 16 लोगों के शव मिल चुके हैं।

मेक्सिको में बस खाई में गिरी, 29 की मौत, 19 घायल, इनमें 10 गंभीर

मेक्सिको सिटी। मेक्सिको में एक बस के खाई में पलटकर गिर जाने से 29 लोगों की मौत हो गई और अन्य 19 घायल हो गए। यह बस मेक्सिको सिटी से दक्षिणी मैक्सिकन राज्य ओक्साका के

शहर योसोंडुआ जा रही थी। ओक्साका के आंतरिक मंत्री जीसस रोमेरो ने कहा कि हुए इस हादसे में एक नवजात, 13 पुरुषों और 13 महिलाओं ने मौके पर दम तोड़ दिया। 21 घायलों को अस्पताल पहुंचाया गया। वहां दो घायलों ने इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। बाकी 19 घायलों का इलाज चल रहा है। इनमें से 10 की हालत गंभीर है। आतंरिक मंत्री जीसस रोमेरो के अनुसार, स्थानीय समयानुसार सुबह लगभग साढ़े छह बजे हुए इस हादसे पर अभी तो यही माना जा रहा है कि अचानक ड्राइवर के नियंत्रण खो देने से बस खाई में गिरी। यह हादसा मैग्डेलेना पेनास्को शहर में हुआ। ओक्साका के राज्यपाल सॉलोमन ने हादसे पर दुख व्यक्त किया है। उन्होंने प्रशासन को प्रभावित लोगों की मदद करने का आदेश दिया है।

मुंबई हमले के आरोपी राणा को जल्द भारत प्रत्यर्पित करना चाहती है बाइडन सरकार, कोर्ट में दायर की अपील

वाशिंगटन। अमेरिका की बाइडन सरकार मुंबई हमले के आरोपी तहव्वुर राणा को जल्द भारत प्रत्यर्पित करना चाहती है। यही वजह है कि बाइडन सरकार ने तहव्वुर राणा की प्रत्यर्पण के खिलाफ दायर बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका का विरोध किया है। बाइडन सरकार ने अमेरिका कोर्ट में अर्जी देकर तहव्वुर राणा को जल्द भारत प्रत्यर्पित करने की अपील की है। बता दें कि पाकिस्तानी मूल के तहव्वुर राणा को मई में ही भारत प्रत्यर्पित करने का आदेश अदालत ने दिया था लेकिन राणा ने इसके खिलाफ बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका दायर कर प्रत्यर्पण का विरोध किया है। अमेरिका के अटॉर्नी ई मार्टिन एस्ट्राडा ने बाइडन सरकार की तरफ से कैलिफोर्निया के सेंट्रल डिस्ट्रिक्ट कोर्ट में याचिका दायर की, जिसमें कहा गया है कि अमेरिका सम्मानपूर्वक विनती करता है कि अदालत तहव्वुर राणा की बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका को खारिज कर दे। अमेरिकी अटॉर्नी ने कहा कि याचिकाकर्ता यह साबित करने में विफल रहा है कि भारत की प्रत्यर्पण की अपील में पर्याप्त सबूतों का अभाव है। भारत में 2008 में हुए मुंबई आतंकी हमले के आरोपी तहव्वुर राणा को अमेरिका की अदालत ने अमेरिका सरकार की राणा को भारत प्रत्यर्पित करने की अपील को मानते हुए उसे भारत प्रत्यर्पित करने की मंजूरी दे दी थी।

अमेरिका ने माना, मानवाधिकार के मसले पर नहीं दे सकते भारत को ज्ञान

वाशिंगटन। भारत-अमेरिकी रिश्तों की मजबूती के बीच अमेरिका ने माना है कि वह मानवाधिकार के मसले पर भारत को ज्ञान नहीं दे सकता। अमेरिका ने साफ कहा है कि हर देश की चुनौतियां और परेशानियां होती हैं, और उनमें भारत ही नहीं अमेरिका भी शामिल है।

अमेरिका और भारत के रिश्तों की मजबूती अब दिखने लगी है। दोनों देशों के बीच सहयोग के बीच भारत में मानवाधिकारों के मसले पर सवाल भी खड़े किये जाते हैं। अब इस पर अमेरिका की ओर से सीधा जवाब आया है। अमेरिका ने साफ कर दिया है कि मानवाधिकार के मसलों पर उठ रहे सवालों से अमेरिका चिंतित नहीं है और इस मुद्दे को लेकर दोनों देशों के रिश्ते प्रभावित नहीं होंगे। अमेरिका की राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद में हिंद-प्रशांत महासागर

क्षेत्र मामलों के समन्वयक कर्ट कैंपबेल ने कहा है कि भारत और अमेरिका सहित सभी देशों के सामने उनकी अपनी चुनौतियां और परेशानियां होती हैं। सभी देश आदर्श नहीं हैं, सभी में कुछ ना कुछ कमियां हैं। ऐसे में अमेरिका इस स्थिति में नहीं है कि वह किसी दूसरे देश को ज्ञान दे सके।

रूस-यूक्रेन युद्ध पर भारत के रुख और इसके बावजूद अमेरिका के साथ रिश्तों के सवाल पर कर्ट कैंपबेल ने कहा कि भारत ने रूस-यूक्रेन युद्ध पर सैद्धांतिक रुख अपनाया है। भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने यूक्रेन के लोगों की त्रासदी और वहां हो रहे घटनाक्रम पर साफ बात की है। भारतीय यूक्रेन युद्ध को लेकर चिंतित हैं और भारत का मानना भी है कि रूस का रुख कई जगह निंदनीय रहा है।

चीन के मुद्दे पर कैंपबेल ने कहा कि भारत-अमेरिकी संबंधों में चीन का मुद्दा अहम है लेकिन सिर्फ ये ही एकमात्र मुद्दा नहीं है जो दोनों देशों के संबंधों को हमारे लक्ष्य तक ले जाए। कई अन्य बातें भी हैं जो हमें आगे लेकर जाएंगी और भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के हाल ही में हुए अमेरिकी दौरे पर ये बातें सामने भी आई थीं।

नेपाल में सत्तारूढ़ गठबंधन के सात दलों ने प्रधानमंत्री प्रचंड के नेतृत्व पर जताया भरोसा

काठमांडू। नेपाल में मुख्य विपक्षी दल सीपीएन (यूएमएल) द्वारा प्रधानमंत्री पुष्पकमल दाहाल प्रचंड के इस्तीफे की मांग के बीच सत्तारूढ़ गठबंधन के सात प्रमुख घटक दलों ने प्रचंड के नेतृत्व पर पूरा भरोसा जताया है। सीपीएन (एमसी) के नेतृत्व वाले सत्तारूढ़ गठबंधन के सात प्रमुख घटक दलों की गुरुवार को बैठक हुई। इस दौरान सभी दलों ने एक स्वर से प्रचंड के नेतृत्व का समर्थन किया। बैठक के बाद सीपीएन (एमसी) के मुख्य सचेतक हितराज पांडे ने पत्रकारों को बताया कि सात दल इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि प्रधानमंत्री

प्रचंड को इस्तीफा नहीं देना चाहिए। बैठक में प्रचंड द्वारा अपने विवादास्पद बयान पर स्पष्टीकरण देने के बाद सात दलों ने सीपीएन (यूएमएल) से संसद सत्र को बाधित नहीं करने की अपील की है। उल्लेखनीय है कि सीपीएन (यूएमएल) के सदस्यों ने प्रधानमंत्री प्रचंड के इस्तीफे की मांग को लेकर बुधवार को प्रतिनिधिसभा की कार्यवाही को बाधित किया था। मुख्य विपक्षी सदस्यों के हंगामे के कारण सदन की कार्यवाही कई बार स्थगित करनी पड़ी थी।

जांजीबार में खुलेगा आईआईटी मद्रास का कैम्पस, भारतीय विदेश मंत्री के दौरे पर हुआ समझौता

जैजिबार। अफ्रीकी देश जांजीबार में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) मद्रास का कैम्पस खोला जाएगा। भारतीय विदेश मंत्री एस. जयशंकर के जांजीबार दौरे पर इस आशय का समझौता हुआ है। इस दौरान भारतीय विदेश मंत्री ने जांजीबार के राष्ट्रपति हुसैन अली विनी से मुलाकात कर दोनों देशों की साझेदारी और मजबूत करने पर जोर दिया।

इस समय भारतीय विदेश मंत्री एस जयशंकर जांजीबार के दौरे पर हैं। उन्होंने जांजीबार के राष्ट्रपति हुसैन अली विनी के साथ द्विपक्षीय संबंधों पर चर्चा की। दोनों नेताओं के बीच बातचीत में रक्षा सहयोग बढ़ाने पर भी चर्चा हुई। जांजीबार में भारत के मशहूर प्रौद्योगिकी संस्थान आईआईटी मद्रास का कैम्पस खोले जाने के लिए दोनों देशों के बीच समझौता हुआ है। भारतीय विदेश मंत्री ने इस समझौते पर हस्ताक्षर किए। उन्होंने जांजीबार में भारत सरकार लाइन ऑफ

क्रेडिट से वित्त पोषित जल आपूर्ति परियोजना का दौरा भी किया।

भारतीय विदेश मंत्री मिसाइलों से लैस भारतीय युद्धक जहाज आईएनएस त्रिशूल पर आयोजित डेक रिसेप्शन में भी शामिल हुए। आईएनएस त्रिशूल इन दिनों जांजीबार के दौरे पर है। इस रिसेप्शन में जांजीबार के राष्ट्रपति डॉ. हुसैन अली विनी भी शामिल हुए। बाद में भारतीय विदेश मंत्री ने ट्वीट करते हुए लिखा कि जांजीबार के राष्ट्रपति डॉ. हुसैन अली विनी से मिलकर खुशी हुई। वह भारत-जांजीबार की साझेदारी को मजबूत करने के प्रति समर्पित हैं। राष्ट्रपति विनी के साथ आईएनएस त्रिशूल पर एक डेक रिसेप्शन में सहभागिता के दौरान जांजीबार के सभापति, मंत्री और भारतीय मूल के लोग भी मौजूद रहे। जांजीबार में आईएनएस त्रिशूल की मौजूदगी भारत के सागर समर्पण का सबूत है।

यूक्रेन का आरोप, पश्चिमी देशों के कारण रूस पर जवाबी हमले में हुई देरी

कीव। सोलह महीने से अधिक समय से रूसी आक्रमण का सामना कर रहे यूक्रेन ने पश्चिमी देशों को जवाबी हमले में विलंब के लिए जिम्मेदार ठहराया है। युद्धरत क्षेत्रों के दौरे पर गए यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की ने जवानों से मुलाकात के बाद कहा है कि पश्चिमी देशों की ओर से हथियारों की धीमी आपूर्ति के कारण जवाबी कार्रवाई करने में चार महीने लग गए।

यूक्रेन पर रूस ने पिछले साल फरवरी में हमला किया था। सोलह महीने से अधिक समय से यूक्रेन इस हमले का सामना कर रहा है। यूक्रेन को पश्चिमी देशों की ओर से भरपूर समर्थन मिल रहा है, किन्तु अब यूक्रेनी राष्ट्रपति ने रूस पर जवाबी हमले में विलंब के लिए पश्चिमी देशों को ही जिम्मेदार ठहरा दिया है। जेलेंस्की ने कहा कि फरवरी में हमले के बाद रूस के खिलाफ जवाबी कार्रवाई जून में शुरू हो सकी, जबकि उन्होंने बहुत पहले जवाबी कार्रवाई शुरू करने की मांग की थी। देरी से कार्रवाई करने की वजह से रूस ने कब्जाए शहरों में

अपनी मजबूती अच्छी कर ली। जेलेंस्की ने कहा कि युद्ध के मैदान में कुछ कठिनाइयों के कारण हमारा जवाबी हमला धीमा हो रहा है। वहां भारी खनन किया गया है। उन्होंने कहा कि मैं चाहता था कि हमारा जवाबी हमला बहुत पहले हो, क्योंकि हर कोई समझता है कि अगर जवाबी हमला बाद में होगा, तो क्षेत्र का बड़ा हिस्सा खनन किया जा सकता है। यूक्रेन का समर्थन करने वाले नेताओं और अमेरिका का आभार व्यक्त करते हुए उन्होंने सवाल भी खड़े किये। उन्होंने कहा कि सच यह भी है कि मैंने जवाबी हमले से पहले अमेरिका और यूरोपीय नेताओं से कहा था कि आपूर्ति की कमी के कारण अधिक जानें जा सकती हैं। इसलिए हम अपना जवाबी हमला पहले शुरू करना चाहेंगे और इसके लिए हमें सभी हथियारों और सामग्री की आवश्यकता होगी।

भारतीय राजनयिक समुदाय की सुरक्षा के लिए अमेरिका प्रतिबद्धः कर्ट कैंपवेल

वाशिंगटन। अमेरिकी सुरक्षा परिषद के सदस्य कर्ट कैंपवेल ने कहा है कि हाल ही में सैन फ्रांसिस्को में भारतीय वाणिज्य दूतावास में खालिस्तान समर्थकों का हमला बेहद अफसोसजनक घटना है। अमेरिका भारतीय राजनयिकों की सुरक्षा को लेकर बेहद गंभीर है। कैंपवेल अमेरिकी सुरक्षा परिषद के इंडो-पैसिफिक मामलों के समन्वयक भी हैं।

'उन्होंने कहा-' हम भारतीय अधिकारियों, स्थानीय कानून प्रवर्तन के साथ निकट संपर्क में हैं। हम यह सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक कदम उठा रहे हैं कि भारतीय राजनयिक समुदाय यहां सुरक्षित महसूस करें और अपना काम जारी रखें।'

उल्लेखनीय है कि खालिस्तान समर्थकों ने दो जुलाई को एक वीडियो ट्विटर पर साझा किया था। इसमें सैन फ्रांसिस्को स्थित भारतीय वाणिज्य दूतावास में कुछ लोग आग लगाते दिखाई पड़ रहे हैं। यह कुछ महीनों के भीतर सैन फ्रांसिस्को में

राजनयिक मिशन पर हमले की ऐसी दूसरी घटना है।

इस वीडियो के सामने आने के बाद अमेरिकी सरकार ने कड़ी निंदा करते हुए इसे एक 'आपराधिक कृत्य' बताया था। वीडियो में 'हिंसा का जवाब हिंसा ही होता है', जैसे शब्दों का इस्तेमाल किया गया। इसमें कनाडा में स्थित खालिस्तान टाइगर फोर्स (केटीएफ) के प्रमुख हरदीप सिंह निज्जर की मौत से जुड़ी खबरें भी दिखाई गईं। उल्लेखनीय है कि भारत के सबसे वांछित आतंकवादियों में से एक रहे निज्जर की पिछले महीने कनाडा में एक गुरुद्वारे के बाहर गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। उस पर 10 लाख रुपये का इनाम घोषित था। सैन फ्रांसिस्को में भारतीय वाणिज्य दूतावास में तोड़फोड़ और आगजनी के प्रयास का वीडियो सामने पर विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता मैथ्यू मिलर ने ट्वीट किया था- अमेरिका में राजनयिक केंद्रों या विदेशी राजनयिकों के खिलाफ हिंसा एक अपराध है।

धर्मगुरु के प्रयासों से बौद्ध धर्म ने बौद्ध विज्ञान और संस्कृति के रूप में दुनिया भर में जगह बनाईः पेंपा सेरिंग

धर्मशाला। निर्वासित तिब्बती सरकार के प्रधानमंत्री पेंपा सेरिंग ने तिब्बती धर्मगुरु दलाई लामा को उनके 88वें जन्मदिन पर बधाई देते हुए कहा कि आज का दिन जश्न मनाने का एक विशेष दिन है। उन्होंने कहा कि आज का यह विशेष अवसर एक खुशहाल जीवन और शांतिपूर्ण दुनिया बनाने की दिशा में परमपावन दलाई लामा के अद्वितीय नेतृत्व और विरासत को कृतज्ञता और गर्व के साथ प्रतिबिंबित करने का भी है।

मैकलोड़गंज स्थित मुख्य बौद्ध के रूप में भी दुनिया भर में फला-फूला है। जो पिछले 1400 वर्षों में

विकसित और फला-फूला है। उन्होंने कहा कि दलाई लामा के योगदान की बजह से ही कुछ वैज्ञानिक यह विचार व्यक्त कर रहे हैं कि बौद्ध विज्ञान को प्राकृतिक विज्ञान और सामाजिक विज्ञान के साथ-साथ विज्ञान की एक शाखा के रूप में मान्यता दी जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि दलाई लामा ने इस बात पर जोर दिया है कि दयालु प्रेरणा किसी भी वैज्ञानिक अनुसंधान की आधारशिला होनी चाहिए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि इसके परिणाम संवेदनशील प्राणियों और पर्यावरण के लिए नुकसान का कारण न बनें। दलाई लामा की वैज्ञानिकों के साथ बातचीत से न केवल धर्म के वैज्ञानिक दृष्टिकोण में बदलाव आया है, बल्कि दुनिया भर में अनुसंधान के वैज्ञानिक क्षेत्र का क्षितिज भी व्यापक हुआ है। उन्होंने कहा कि इसी तरह, माइंड एंड लाइफ डायलॉग्स ने चिंतनशील प्रथाओं को अध्ययन के एक वैध क्षेत्र के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य दोनों के लिए प्रथाओं के लाभों को समझने में लाखों लोगों की रुचि को आकर्षित किया है। इस मौके पर निर्वासित तिब्बती संसद के अध्यक्ष खेनपो सोनम तेनफेल ने भी धर्मगुरु को जन्मदिन की बधाई देते हुए संदेश पढ़ा।

अमेरिका के लिए मिसाल बना भारतीय सौर उद्योगः सांसदों की मांग- विश्व बैंक जलवायु परियोजनाओं में बढ़ाए निवेश

लंदन। अमेरिका के लिए भारतीय सौर ऊर्जा उद्योग एक मिसाल बन गया है। भारत की सफलता का हवाला देते हुए शीर्ष अमेरिकी सांसदों के एक समूह ने विश्व बैंक के अध्यक्ष अजय बंगा से जलवायु परियोजनाओं में निवेश बढ़ाने का आग्रह किया है। सांसदों ने बंगा को लिखे एक पत्र में कहा कि हमें यह देखकर खुशी हो रही है कि आप समस्याओं से रूबरू हैं और आशा करते हैं कि बैंक इन चुनौतियों से निपटने के लिए समन्वित और मजबूत प्रतिक्रिया देगा। बता दें, पत्र पर सांसद मार्टिन हेनरिक, ब्रायन शेट्ज, पीटर वेल्च, शेल्डन व्हाइटहाउस और एडवर्ड मार्की के साथ-साथ कांग्रेसी केटी पोर्टर ने हस्ताक्षर किए हैं।

पत्र में कहा गया कि यह जरूरी है कि विश्व बैंक उन परियोजनाओं में निवेश बढ़ाए जो

जलवायु अनुकूलन और शमन लक्ष्यों को आगे बढ़ाती हैं। इन लक्ष्यों को पूरा करने के लिए बैंक किन परियोजनाओं को वित्त पोषित करता है, इस पर स्पष्ट और पारदर्शी आंकड़े प्रदान करे। पत्र में आगे लिखा है कि जलवायु प्रयासों की पहुंच का विस्तार करने के लिए निजी संसाधनों का कुशलतापूर्वक लाभ उठाएं।

सांसदों ने बंगा से ऋण देने के निर्णयों को निर्देशित करने और प्राथमिकता देने के लिए नई देश जलवायु और विकास रिपोर्ट का लाभ उठाने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि हम बैंक को हाल के वर्षों में सफल जलवायु परियोजनाओं जैसे भारतीय सौर उद्योग के विस्तार, उरुग्वे में जलवायु-स्मार्ट कृषि के विकास और केन्या के कुछ हिस्सों में विद्युतीकरण के विस्तार के प्रयासों को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। उन्होंने कहा कि बढ़ी हुई जलवायु निवेश के साथ बैंक इस काम का विस्तार कर सकता है। विश्व स्तर पर नेतृत्व प्रदान कर सकता है। सांसदों ने आगे कहा कि इन प्रयासों को बढ़ावा देने के लिए आईएमएफ का उदाहरण लिया जा सकता है।

सांसदों ने कहा कि सबसे धनी राष्ट्र अधिकांश वायुमंडलीय कार्बन उत्सर्जन के लिए जिम्मेदार हैं। समाधान के लिए गरीब देशों पर ऋण का बोझ डालने का कोई मतलब नहीं है। उन्होंने कहा कि बैंक को सबसे अनुकूल संभावित शर्तों पर ऋण देने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए और ऋण के बजाय अनुदान पर जितना संभव हो उतना भरोसा करना चाहिए। सांसदों ने विश्व बैंक से यह भी आग्रह किया कि वह स्पष्ट करें कि जलवायु वित्त और जलवायु कार्रवाई के लिए क्या कदम उठाना सही रहेगा। साथ ही कहा है कि बैंक को इस बारे में पारदर्शी होना चाहिए कि वह जलवायु से संबंधित परियोजनाओं को कैसे चुनता है। उन्होंने कहा कि इन पद्धतियों की पहचान करने से इस तेजी से बढ़ते निवेश क्षेत्र में बैंक अग्रणी बन जाएगा। उन्होंने कहा कि विश्व बैंक जलवायु वित्तपोषण बढ़ा रहा है तो उसे जीवाश्म ईंधन परियोजनाओं में निवेश बंद कर देना चाहिए। उन्होंने कहा कि साल 2015 में पेरिस जलवायु समझौते को अपनाने के बाद से जीवाश्म ईंधन निवेश अभी भी 14.8 अरब डॉलर से अधिक है। उन्होंने कहा कि भले ही इनकी राशि में कमी आ रही है, लेकिन फिर भी इस कुल राशि को शून्य पर लाने के लिए सख्त कार्रवाई करने की जरूरत है।

वित्त मंत्री ने सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक प्रमुखों के साथ की समीक्षा बैठक

नई दिल्ली। केंद्रीय वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण ने सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक प्रमुखों के साथ बैठक की। सीतारमण की अध्यक्षता में नई दिल्ली में हुई इस बैठक में बैंकों के विभिन्न वित्तीय दक्षता और पीएसबी के प्रदर्शन की समीक्षा की गई। वित्त मंत्रालय ने गुरुवार को ट्वीट कर बताया कि वित्त मंत्री ने सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक प्रमुखों के साथ बैठक की। इस बैठक में बैंकों के वित्तीय प्रदर्शन की समीक्षा की गई। इसके साथ ही विभिन्न सरकारी योजनाओं के लिए निर्धारित लक्ष्य को हासिल करने में बैंकों की प्रगति का जायजा लिया। इन योजनाओं में पीएम स्वनिधि (रेहड़ी-पटरी वालों के लिए पीएम आत्मनिर्भर निधि), स्टैंड अप इंडिया, प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, अटल पेंशन योजना और कोरोना महामारी से प्रभावित इकाइयों की मदद के लिए आपात ऋण सुविधा गारंटी योजना (ईसीएलजीएस) शामिल हैं।वित्त मंत्री ने बैठक में बैंकों की कर्ज वृद्धि, संपत्ति गुणवत्ता और कारोबार वृद्धि योजना की भी समीक्षा की। इसके अलावा गैर-निष्पादित परिसंपत्ति और उसकी वसूली की भी चर्चा हुई। इस बैठक में केंद्रीय वित्त राज्यमंत्री डॉ. भागवत किशनराव कराड, वित्त सचिव डॉ. टीवी सोमनाथन, राजस्व विभाग के सचिव, देश के मुख्य आर्थिक सलाहकार और सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के एमडी और सीईओ के अलावा वित्त मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी भी मौजूद रहे।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
RNI No: UPHIN/2001/09025
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा।